CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी 209

३६८८

५५२

श्रीमान सेठ घनश्यामदासजी रीयांवाले

मोती कटला, अजमेर

...प्रेस, अजमेर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हि-२०१

❀ ओन्नमः शिवाय ❀

भूमिका

विदित हो कि यह भरतखंड धर्म प्रधान देश है। इसमें धर्म के रक्षकों को प्रथम स्थान दिया है और अन्यों को द्वितीय। यों तो सहस्रों ही अङ्ग धर्म के हैं पर स्थूलरूप से गो ब्राह्मण की पालना करना वेद मार्ग का अत्यावश्यक लक्ष्य है। "अहिंसा परमोधर्मः" यह भी जो शास्त्रीय अनुशासन हैं उसका पालन भी गायों की रक्षा से ही निभ सकता है अन्यथा नहीं। गाय एक प्रधान चतुष्पद है इसकी रक्षा से इतर पशुओं की रक्षा करना यह भी उपदेश स्वतः सिद्ध है। इसी गाय की ओर सबका लक्ष्य रहे इस अभिप्राय से धर्म सम्बन्धी पदवियों के साथ गो शब्द का सम्बन्ध रक्खा जैसे गोस्वामी (गुसाँई) व्रतों में गो त्रिरात्रि व्रत। जाति का नाम गोरक्षक (गोरखा) नगर का नाम गोरखपुर ग्रामका नाम गोकुल, मार्ग परिमाण गव्यूति, स्थान विशेष का नाम गवाक्ष रक्खा गया इत्यादि कहाँ तक लिखा जाय इस बातकी पुष्टिके सहस्रोंही प्रमाण जनताके समक्ष विद्यमान हैं। गायोंकी वंश वृद्धि वृषभोंके आधीन है इसीलिये पितृकार्य में वृषोत्सर्ग विधि बैल आँकना सूरज का साँड करना प्रचलित किया गया। यह बड़ा ही पवित्र कार्य है पर आजकल देशी और विदेशी दोनों ही लोगों के अज्ञान से विचारे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अङ्कित बैलों को यातना सहनी पड़ती है। जहाँ जावे वहीं उनको दुष्ट लोग खेत वाले लाठियों से मारते हैं अभी थोड़े दिन हुए कि किसी दुष्ट यवन कृषक ने कडेल ग्राम में सूरज के साँड का इस ढंगसे पैर काटा कि जिसको लिखते लेखनी काँपने लगती है पर विचार करने से थोड़ासा दोष हम लोगों का भी है कि हम लोग धर्म लाभार्थ उनको आँक तो देते हैं पर पीछे उनकी सार सम्हाल नहीं लेते। इसके दो उपाय हैं यातो प्रत्येक ग्वाल जो अपनी २ गाँयोंकी वंशवृद्धि कराता है वह भी उसकी सार सम्हाल रक्खे या प्रत्येक ग्राममें यथाशक्ति पींजरापोल बनवाकर उसमें लूली लँगड़ी गायें रक्खी जावे और वहीं वे धर्म वृषभ भी रक्खे जावें। गायोंको अन्न घास आदि दिलाना जितना पुण्य है उससे अधिक अङ्कित बैलको अन्नादि देना पुण्य माना गया है कारण गायोंके तो कोई न कोई धनी धोरी रहता ही हैं पर इनका तो राम ही रखवाला है।

एक बार बादशाह अकबर के दरबारी कवि नरहरिने प्रजाके अनुरोध से एक छप्पय बनाकर मोटे २ अक्षरों द्वारा लिखकर किसी गायके गले में टँकवाकर बादशाह के सामने खड़ी की थी जिसका फल यह हुवा था कि बादशाह ने तुरन्त ही गोवध रोक दिया था वह छन्द यह है:—

अरिहुदंत तृणगहे ताहि जगमारत नहिं कोइ।
हम संतत तृण चरें, बचन उच्चरहिं दीन होइ।
अमृतपय नितस्रवहिं वत्समहि थंभहिं ब्यावहिं।
हिन्दुहिंमधुरन देत कटुक तुरकहिं न पियावहिं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३६५८

कह नरहरिसुनु शाहबर विनवतगो जोरे करन।
केहिपराध मोइ मारिये मुयेहिं चामसेवत चरन।

पूर्वज लोग क्या राजा और क्या प्रजा सबही उदार होते थे पर आजकल सभीमें उदारता का अभाव है इसी क्षुद्रता के समय को कलियुग माना है ग्रामाधीश से चक्रवर्त्ती पर्यंत सब ही प्रायः लोभ पास में बँधे हुए हैं यदि आधुनिक जनता व कर्मचारी लोग दया दृष्टि से काम लेकर गायों के लिये गोचरभूमि छुड़वावें तो अवश्य चतुष्पद प्राणी सुखी रह सकते हैं। इधर तो वृष्टि की खेंच उधर गोचर भूमि की छूट न रहने से पशुओं को जो कष्ट भोगना पड़ता है वह बात वर्णन करने में सर्व था नहीं आती। राज कर्मचारी लोग अपनी वेतन वृद्धि के लिये अनेक प्रकारकी कुबुद्धियें बड़ों को सिखाते रहते हैं जिसका यह फल होता है कि बिचारे मूक प्राणी घोर कष्ट पाते रहते हैं।

मैंने यथाशक्ति गोजातिकी सेवा निमित्त इस छोटीसी पुस्तक को बनाई है जिसमें ऐसा प्रयत्न किया गया है कि जिससे गायोंके प्रति जनताकी समुचित्त श्रद्धा उत्पन्न हो। इसके मुद्रणमें श्रीमान् स्वर्गीय दानवीर रायबहादुर सेठ चाँदमलजी रीयाँवालोंके सुयोग्य पौत्र धर्मानुरागी सेठ साहब नोरत्नमलजी महोदयने जो आर्थिक सहायता दी हैं जिससे आस्तिक समाज द्वारा अवश्य ही गायों की रक्षा होती रहेगी। इस पुण्य के प्रताप से उपरोक्त सेठ साहब के धन संतान की निरन्तर वृद्धि होती रहे यही मेरी पुनः पुनः श्रीकृष्णचन्द्र आनंदकंद यदुनंदन गोपाललाल से प्रार्थना है।

अंत में विद्वन्मण्डली से सादर निवेदन है कि इस पुस्तक में जो कोई अशुद्धि वा त्रुटि रही हो उसको पुण्य कार्य की सेवा समझ मुझे क्षमा करेंगे और विशेष कोई भारी भूल हुई हो तो उदाराशय द्वारा सुधार कर काम चलावेंगे इति शम्।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्र परिचय।

इस पुस्तक के प्रारम्भ में पाठक जिनका चित्र देख रहे हैं उनसे हम उनका संक्षिप्त परिचय करवा देना उचित समझते हैं।

हम यहाँ पर प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता श्रीमुन्सिफ देवीप्रसादजी जोधपुर का संवत् १९६८ का 'मेरा दौरा, शीर्षक लेख के अन्तर्गत का वृत्तान्त देते हैं जो मुंशीजी ने नागरीप्रचारिणी सभा की मुख पत्रिका खंड १ के अङ्क २ पृष्ठ १७७ में लिखा है वह इस प्रकार है—

रीयां

पींपाड़ से एक कोस पर खालसे का एक बड़ागाँव रीयां नामक है, इसको सेठों की रीयां भी बोलते हैं; क्योंकि यहाँ के सेठ पहिले बहुत धनवान् थे। कहते हैं कि एक बार राजा मानसिंहजी से किसी अंग्रेज ने पूछा था कि मारवाड़ में कितने घर हैं? तो महाराजा ने कहा था कि "ढाई घर हैं—एक घर तो रीयां के सेठों का है, दूसरा बीलवाड़े के दीवानों का है और आधे में सारा मारवाड़ है।

ये सेठ मोहणोत जाति के ओसवाल थे। इनमें पहिले रेखाजी बड़े सेठ थे, इनके पीछे जीवनदासजी हुए. इनके पास लाखों रुपये सैकड़ों हज़ारों सिक्के के थे। महाराज विजयसिंहजी ने उनको 'नगर सेठ' का खिताब और एक महीने तक किसी आदमी को कैद कर रखने का अधिकार भी दिया था। जीवनदासजी के पुत्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरजीमलजी, हरजीमलजी के रामदासजी, रामदासजी के हमीरमलजी और हमीरमलजी के पुत्र सेठ चांदमलजी हैं।

जीवनदासजी के दूसरे पुत्र गोरधनदासजी के सोभागमलजी, सोभागमलजी के पुत्र धनरूपमलजी, कुचामण में थे, जिनकी गोद अब सेठ चांदमलजी के पुत्र मगनमलजी थे।

सेठ जीवणदासजी की छत्री गांव के बाहर पूर्व की तरफ पींपाड़ के रास्ते पर बहुत अच्छी बनी हैं। यह १६ खम्भो की है, शिखर के नीचे चारों तरफ़ एक लेख खुदा है जिसका सारांश यह है—

"सेठ जीवणदास मोहणोत के ऊपर छत्री सुत गोरधनदास हरजीमल कराई। नींव सम्वत् १८४१ फागुन सुदी १ को दिलाई कलश माह सुदी १५ संवत् १८४४ गुरुवार को चढ़ाया।"

कहते हैं कि ऐक बेर यहाँ नवाब अमीर खाँ के डेरे हुवे थे, किसी पठान ने छत्री के कलस पर गोली चलाई तो उसमें से कुछ अशरफियाँ निकल पड़ी, इससे छत्री तोड़ी गई तो और भी माल निकला जो नवाब ने ले लिया। फिर बहुत वर्षों बाद छत्री की मरम्मत सेठ चांदमलजी के पिता या दादा ने अजमेर से आकर करा दी। इन सेठों की हवेली रीयां में है।

मारवाड़ के अन्दर ढाई घर की बाबत लोग ऐसा भी कहते हैं कि एक दफा महाराजा जोधपुर को धनकी बड़ी आवश्यकता पड़ी, उन्होंने सुना कि मारवाड़ के अन्दर रीयां वाले सेठों के पास अथाह द्रव्य है। महाराजा साहब (ऊँटनी) सांड पर बैठकर रीयां ग्राम में गये और अपना डेरा ग्राम बाहर बावड़ी पर लगाया। रीयांवाले सेठ प्रातःकाल प्रति दिन स्नान करने को बिला नागा बावड़ी पर आते थे, उस दिवस भी आये और स्नान करके जाने लगे तो उन्होंने एक पराक्रमी तेजस्वी राजपूत सरदार को चिन्ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में निमग्न बैठा हुवा देखकर पूछा कि आप कौन सरदार हैं, यहाँ किस कारण पधारे हैं, कहाँ निवास स्थान है और किधर जाने का विचार है। राजपूत सरदार ने कहा कि मैं एक ग्राम का ठाकुर हूँ किसी विशेष कारण से यहाँ आया हूँ किन्तु कारण की सिद्धि होना बड़ा कठिन है यही देखकर मुझे चिन्ता होती है।

सेठ ने कहा कि आप मेरे घर पर पधारिए, और भोजन करिए। बाद आगमन का कारण भी बतलाइए, भगवत् कृपा से उसको पूर्ण करने का प्रयत्न किया जायगा, क्योंकि हमारे पास जो कुछ भी है वह सब आप लोगों का ही है। हमारा कर्त्तव्य है कि इस समय पर आप लोगों की सहायता करें। यह श्रवण कर महाराजा साहब को शान्ति हुई, अत्याग्रह करने पर वे सेठ के मकान पर गये, वहाँ भोजन किया, और वाद में कहा कि हमें राज्य के निमित्त इतनी रकम की जरूरत है।

सेठ ने कहा, बहुत अच्छा, क्या बड़ी वात है, आप पधार जाइए। मैं भेजता हूँ। महाराजा साहब के चले जाने पर सेठ ने एक ही सिक्के के रुपयों से इतने छकड़े भर दिये कि रीयां से लगा कर जोधपुर तक छकड़ों की कतार बंध गई।

महाराजा साहब अतुल द्रव्य देख कर बहुत प्रसन्न हुवे और उनको महासेठ की उपाधि से विभूषित किया और उनको इतना मान-मरतबा दिया जितना पूर्व किसी को भी जोधपुर राज्य में न दिया गया था। उस समय से ही इनका घर ढाई घरों में एक घर गिना जाने लगा और रीयां गाँव अधिक प्रसिद्धि में आया। और आज तक वह गांव सेठों की रीयाँ के नाम से प्रख्यात है—

सेठ जीवणदास ।

सेठ जीवणदासजी बड़े पराक्रमी पुरुष थे। उन्होंने जोधपुर राज्यमें बड़ी ख्याति प्राप्त की थी, यही नहीं, किन्तु उन्होंने अपना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दबदबा पेशवा के राज्य में भी जमाया। समस्त महाराष्ट्र और दूर २ तक इनका सिक्का जमा हुआ था, इनके अतुल धन, स्वतन्त्र और उदार विचार की प्रशंसा चहुँ ओर थी और उस समय वह Millioney क्रोड़पति कहे जाते थे।

पेशवा के दरबार में सेठ जीवनदासजी का बड़ा मान था उन्होंने पेशवाओं की उस नाजुक समय में धन से सहायता की थी जिस समय उनके Chiefs सरदार Tax खिराज देने को इनकार हो गये थे, यदि सेठ जीवणदासजी धन से सहायता न देते और फौज को इतमिनान न दिलाते तो उनकी राजधानी पर फौज का पूर्ण आधिपत्य हो जाता। उस समय उनकी दुकान पूने में थी, और पेशवा राज्य की सरहद में कई स्थानों में उनकी शाखाएँ थीं, एक शाखा राजपूताने के अन्तर्गत अजमेर में भी थी।

सेठ हमीरमल ।

सेठ हमीरमलजी की इज्जत सिन्धिया के दरबार में बहुत थी, इनकी बैठक दरबारमें थी और अतर पान दिया जाता था। संवत् १६११ (सन् १८५४) में सेठ हमीरमल को महाराजा जोधपुर ने फिर सेठ की उपाधि प्रदान की, जो सौ वर्ष पूर्व महाराजा विजयसिंहजी ने सेठ जीवणदासजी को दी थी। इसके अतिरिक्त पालकी, खिल्लत और दर्बार में बैठक का मर्तबा दिया था जो राज्य के दिवानों को भी न दिया गया था। साथ ही महाराजा साहब ने प्रसन्न होकर निज के माल या सामान की चुंगी बिल्कुल न ली जाने तथा व्यापार के माल पर आधी चुंगी ली जाने की रियायत बखशी जो आजतक चली आती है।

अंग्रेज सरकार की भी सेठ हमीरमलजी ने बड़ी सेवा की थी। इससे उनका बड़ामान और आदरसत्कार क़िया जाता था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन् १८४६ में कर्नल सीमन एजेन्ट गवर्नर जनरल बुन्देलखंड और सागर ने पत्र व्यवहार में "सेठ साहब महरबान सलामत बाद शौक़ मुलाकात आंके" का अलकाब आदाब व्यवहृत किये जाने की सूचना दी थी जिसको कर्नल जे० सी० ब्रूक कमिश्नर एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना ने २० फरवरी सन् १८७१ को उसी अलकाब आदाब की जारी रखने की स्वीकृति दी थी।

सन् १९५२ और ५५ में जब सेठ हमीरमल अपने खजानों को देखभाल करने पन्जाब में गये उस समय फायिनेन्स कमिश्नर पंजाब, तथा कमिश्नर जालन्धर डिविजन ने तहसीलदारों के नाम हुक्म जारी किया था कि सेठ हमीरमलजी की पेशवाई के लिये स्टेशन पर रहे। पंजाब में उनकी इतनी इज्जत थी कि जब कभी वे जाते थे, तहसीलदार आदि को उनकी पेशवाई के लिये स्टेशन पर जाना पड़ता था।

पंजाब पर आधिपत्य करने के लिये जब अंग्रेजी फौज भेजी गई थी उस समय सेठ हमीरमलजी का एजन्ट गुलाबचंद फौज के साथ खजानची था, फौज का कब्जा होने पर उनका वहाँ खजाना हो गया।

राय सेठ चांदमल।

सेठ चान्दमलजी का जन्म संवत १९०५ में हुआ था। उनके धीरजमलजी और चन्दनमलजी दो भाई थे, सब खुशहाल थे व कारोबार अच्छी तरह से चलता था।

सेठ चाँदमलजी अपने पिता और दादा के सदृश पराक्रमी, साहसी, दानी, उदारचित्त और विचारवान थे। इनकी चमत्कारिक बुद्धि, और अनुभवकी ख्याति चहुंओर थी। छोटी अवस्था में ही इन्होंने अनेक गुण धारण कर लिये थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्वत् १९२१ में महाराजा साहब जोधपुर ने इनको 'सेठ' 'की उपाधि प्रदान की। वह उपाधि पूर्व महाराजा विजयसिंहजी ने वहां परम्परा के लिये दे दी थी। इस समय पेशावर, जालन्धर, घोघोपारपुर, काँगरा, सांभर; सागर और मुरार में खजाने थे। बाम्बे, जबलपुर, नरसिंगपुर, मिरजापुर, में सागर, रोहिल्ला, दमोह, कौरी, सोरी, जालन्धर, होशियारपुर; धर्मशाला पेशावर, ग्वालियर, जोधपुर, सागर, अजमेर, भेलसा, झांसी, इन्दौर, मेमिन और आजमगढ़ में दुकानें थीं। मध्यप्रदेश में जमींदारी थी।

सन् १८६८-६९ में मध्यप्रदेश और राजपूताने में अकाल पड़ा था। सेठ चाँदमलजी की इजाजत से सागर दुकान के मुनीम ने गरीबों और निराधारों की सहायता की थी। इसके उपलक्ष्य में चीफ कमीश्नर ने स्वर्णपदक प्रदान किया था। अजमेर में उस समय 'चेरीटेबल ग्रेन क्लब' और 'बूचर हाउस कमेटी' सर्व साधारण के लाभार्थ स्थापित की गई थी। कर्नल आर. एच. कीटिंग, बी. सी. सी. एस. आई. ई. एजेन्ट गवर्नर जनरल राजपूताना ने इनको कमेटी का मेम्बर बनाया। इस काम में इन्होंने बड़ी दिलचस्पी ली और आगरे से नाज मंगवाकर अजमेर में बाज़ार भाव से सस्ता बेचा इस कमेटीकी तरफसे भूखोंको अन्न दिया जाता था और पर्दानशीन औरतों को जो बाहर नहीं निकल सकती थीं उनके घर पर नाज पहुँचाया जाता था।

सन् १८७१ में अर्ल मेवो ने पञ्जाब का दौरा किया था और पालनपुर फेअर में दरबार भरा। उस समय सेठ चाँदमलजी के मुनीम ने सरकार की अच्छी सेवा बजाई, जिसको देख कर श्रीमान् वाइसराय महोदय ने अपनी प्रसन्नता प्रकट की और मुनीम को दरबार में बैठक दी तथा सोने के कड़े (Bracelets) इनायत किये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन् १८६८ में ये म्युनिसिपल कमिश्नर बनाये गये और १८७८ में इनको आनरेरी मजिस्ट्रेट दर्जा दोयम बनाया तथा सन् १८७७ में देहली दरबार भरा था उसमें सेठ चाँदमलजी को आमन्त्रित किया गया था। वहाँ श्रीमान् चीफ़ कमिश्नर साहब व कमिश्नर अजमेर की सिफ़ारश पर सेठ चाँदमलजी को श्रीमान् वायसराय महोदय लार्ड लिटन से 'राय साहिब' का खिताब, स्वर्णपदक और सार्टिफिकट दिया था जिस पर महा-राणी विक्टोरिया का नाम अंकित था। सन् १८७८-७९ में काबुल का युद्ध आरंभ हुआ। पेशावर से परे लुन्डी, कोटल, जलालाबाद और काबुल के खजाने के साथ जिम्मेदार आदमि-यों को जाना जरूरी समझा गया, ऐसे नाजुक समय में सब ने किनारा काटा, किन्तु सेठ चाँदमलजी के एजन्ट शिवनाथ ने अपने आदमी फौज के साथ भेजे और करीब करोड़ रुपये तक जरूरत के अनुसार खजाने से खर्च किये। इस सेवा से प्रसन्न होकर छोटे लाट साहेब पञ्जाब ने सेठ के एजन्ट को एक दुशाला और दुपट्टा खिल्लअत सहित दिया।

राजपूताने में सम्वत् १९२५ और १९३४ में घोर दुष्काल पड़े थे। इन अवसरों में आपने राजपूताने की गरीब प्रजा की बड़ी सहायता की थी।

अजमेर की प्रजा सेठ चाँदमलजी से बड़ी प्रसन्न थी, इन पर उसका पूर्ण विश्वास था, कोई भी काम हो इनको कहा जाता था। एक दफा का जिक्र है कि अजमेर म्युनिसीपल्टी ने नया बाजार की प्याऊ को तोड़ने की आज्ञा दे दी थी, मजदूर लग गये थे. कुदाली से प्याऊ तोड़ने ही वाले थे कि बाजार के कुछ भले आदमी सेठ चांदमल जी की हवेली पर गये और कहने लगे कि प्याऊ के टूट जाने से बाजार की रौनक बिगड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जायगी और पानी पीने की दिक्कत हो जायगी हम तो आपको ही सर्वेसर्वा समझते हैं, इसलिये आपके पास आये हैं, आपसे ही यह कार्य होगा। यह श्रवण कर सेठ चाँदमलजी अपनी बग्गी में बैठकर आये और प्याऊ तोड़ने वालों से कहने लगे, "भाई, आप जरा ठहरिए, जबतक कि मैं श्रीमान् चीफ़ कमिश्नर साहब बहादुर के पास जाकर लौट न आऊँ।" ऐसा कहकर चीफ़ कमिश्नर साहब के पास गये और उनको सच्ची हकीकत समझाई। इस पर साहब बहादुर ने प्याऊ तोड़ने के हुक्म को रद्द कर दिया।

एक दफ़ा बाबूगढ़ पहाड़ पर मुसलमानों ने कब्जा कर लिया, और बालाजी का मेला करना बन्द कर दिया। हिन्दू लोग फिर सेठ चाँदमजजी के पास गये और इस संकट से निवारण करने की प्रार्थना की। सेठ चाँदमलजी ने यह काम अपने हाथमें लिया और बहुत प्रयत्न कर बालाजो का मेला भरा दिया, जो आज दिन भी विना रोकटोक भरा जाता है।

लोग कहते हैं कि जब श्रीमती भारत-सम्राज्ञी क्वीन मेरी अजमेर पधारी थीं, उस समय उनका पुष्कर भी पधारना हुआ था। वहाँ छोटी बस्ती बाराहघाट के पास बाजार में बड़का गोल चबूतरा है—जिसके पास मोटर घूमकर निकलती है इसवास्ते ऐसी आज्ञा दी गई कि चबूतरे को तोड़ डालना चाहिए। इस पर वहाँ के ब्राह्मणों ने अनेक प्रार्थनाएँ की किन्तु, कुछ ध्यान न दिया गया। इस पर पुष्कर के ब्राह्मण सेठ चाँदमलजी के पास आये और इनसे सब हकीकत कही। इस पर सेठ चाँदमलजी श्रीमान् कमिश्नर साहब के पास गये और उनको प्रार्थना की कि इससे बड़ा पाप लगेगा और बदनामी होगी। कमिश्नर साहब ने आपकी बात मान ली और चबूतरा गिरवाने का विचार छोड़ दिया। जब ब्राह्मणों को यह ज्ञात हुआ तो उन्होंने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपको आशीर्वाद दिये और मङ्गलकामना के लिये ईश्वर से प्रार्थना की। इसी तरह इन्होंने अजमेर की जनता की समय २ पर अनेक सेवाएं की थीं, किन्तु विस्तार भय से सबको छोड़ कर एक दो घटनाओं का ही उल्लेख दिग्दर्शनार्थ किया गया है।

सेठ चाँदमलजी जैन थे किन्तु किसी धर्म से भी आपको द्वेष न था। सर्व धर्मों को आप इज्जत की निगाह से देखते थे, अभ्यर्थना किये जाने पर सबके उत्सवों में सम्मिलित होते थे और यथाशक्ति सब को देते भी थे। उनके मेम्बर या पदाधिकारी बनने में भी आप एतराज न करते थे।

दयावान् राजपूताने भर में आप प्रसिद्ध थे। आनासागर तथा फाईसागर में मछलियों का पकड़ना बन्द करा दिया था। दोनों तालावोंका पानी सूख जानेपर इनकी मछलियाँ बूढे पुष्कर में भिजवादी जाती थी। आपकी तरफ से सदाव्रत जारी था कच्ची वालों को सीधा और पक्की वालों को पुड़ी दी जाती थी, गरीब स्त्री पुरुष और बच्चोंको रोजाना चना दिया जाता था, गायों को घास डलाया जाता था, कबूतर तोते आदि पक्षियोंको अनाज छुड़ाया जाता था, गरीब मुसलमान रोजे रखने वालों के लिये रोजा खोलने के लिये रोटी बनवाकर उनके पास भिजवायी जाती थी। कहने का अर्थ यह है कि बिना भेदभाव सबको दिया जाता था। यही सबब था कि कोई भी गरीब, अपाहिज स्टेशन से उतरते ही या रेलही से चाँदमलजी का नाम रटता हुआ चला आता था और वहाँ जाने पर उसके भाग्य अनुसार मिलता ही था। कोई भी व्यक्ति विना कुछ लिये उनके द्वार से न लौटता था। हर समय १०-२०-५० का जमघट जमा ही रहता था, और उन सबको दिया ही जाता थर, सर्दी के मौसिम में वस्त्रहीनों को कम्बल,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रजाइएं रूई की अँगरखिए बाँटी जाती थी, इस तरह मौसिम २ का दान दिया जाता था।

सेठ चाँदमलजी पूर्व स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी थे, साधु मुनिराज के प्रति उनकी अनन्य भक्ति थी। हर समय उनके हवेली पर धर्मध्यान होता ही रहता था, दीक्षा आदि भी आपकी तरफ से होती रहती थी, जीवदया तथा अन्य खातों में सब से अधिक रकम आपकी तरफ से लिखी जाती थी। आप जिस धार्मिक कार्य में आगे बढ़ जाते थे उससे कदम कभी भी पीछे न हटाते थे, चाहे उसमें लाख रुपये भी क्यों न खर्च हो जावे। यह आपका स्वभाव था। इससे हर एक धार्मिक कार्य में सबसे आगे आपको किया जाता था।

कान्फ्रेन्स का प्रथम अधिवेशन जो मोरवी शहर में हुआ था, उसके आप सभापति थे, अजमेर में कान्फरेन्स का चतुर्थ अधिवेशन हुआ उसमें अधिक आप ही का हाथ था और आपके हजारों रुपये उसमें व्यय हुए थे। कान्फरन्स आफिस कुछ वर्ष तक आपके यहाँ रहा था और उसमें आप बराबर योग देते रहे थे जैन जनता में आपका बड़ा मान है। आप जबरदस्त नेता गिने जाते थे। आपकी बात का बड़ा आदर था, जो बात आप की जबान से निकल जाती थी लोहकी लकीर समझी जाती थी। आप बड़े धर्मिष्ट सदाचारी थे, प्रजा और राजा दोनों में आपकी इज्जत थी और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे, आपके सम्बन्ध में बड़े बड़े औहदेदार अंग्रेजों के अच्छे २ सार्टिफिकेट दिये हुवे हैं उन सबका उल्लेख यहाँ नहीं किया जा सकता। केवल इतन ही लिखा जा सकता है कि आप सरकार के बड़े कृपा पात्र थे। आपका शरीर पुष्ट था, वृद्धावस्था प्राप्त होजाने पर भी आपका चेहरा दमकता था, निराशा आपके पास होकर फटकती ही न थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपकी मृत्यु सम्वत् १९७१ में ६६ वर्ष की अवस्था में हो गई। आपने अन्तिम समय में बड़ी रकम धर्मादा खाते निकाली थी जिसका सदुपयोग आज भी जारी है।

आपके देहान्त के समय पुत्र-पौत्र आदि सब थे और भण्डार धन-धान्य से भरपूर था सब तरह का आनन्द था।

आपके पुत्रों के नाम घनश्यामदासजी, छगनमलजी, मगनमलजी और प्यारेलालजी हैं।

सेठ घनश्यामदास।

बड़े पुत्र सेठ घनश्यामदासजी साहब बड़े सेठ साहब के गुजरने पर चुकता कारोबार दो साल तक अपने हाथों से अच्छीतरह चलाते रहे बाद में आपके तीनों लघुभ्राताओं ने मिलकर अपना विचार पलट कर आपसे सं० १९७३ की साल में जुदा हो गये उस समय आपको बड़ा ही खेद हुवा कि मेरे सहोदरभ्राता आज मेरे से अलग होरहे है लेकिन लाचार दुःख सहन करते हुवे अपने कारोबार को पूर्ववत् चलाते रहे। उसी के कुछ अरसे बाद सं० १९७४ चैत्र सुदी ४ को आपके लघुभ्राता रायबहादुर सेठ छगनमलजी साहब इस लोक से चल बसे, उसका आपको बड़ा ही खेद हुआ और दिल पर सदमा बैठ गया।

आपका स्वभाव बड़े सेठ साहब के गुजर जाने के बाद बहुत ही कुछ हेरफेर होकर बदल गया था और आप बिलकुल शान्त स्वभाव हो गये थे। यहां तक कि आपके जैनमत के गुरु पूज्य श्री श्री १००८ श्री श्रीलालजी महाराज साहब जब अजमेर पधारकर सेठ चन्दनमलजी लोढा की कोठी में बिराजे थे उस समय आपने महाराज श्री से भरी सभा में खड़े होकर परस्त्री गमन, नशेमात्र व बीड़ी आदि के जन्म पर्यन्त तक के सोगन्ध ले लिये थे और आपका बहुत कुछ स्वभाव बड़े सेठ साहब से मि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लने लग गया था और अजमेर नगरवासियों को ज्ञात होगया था कि आप पिताश्री को भुला देवेंगे लेकिन आप आयु थोड़ी लेकर पधारे थे। सं० १९७५ मिती फाल्गुन बदी ६ को आप छोटी अवस्था में दो पुत्र छोड़कर इस लोक से बिदा हुवे। आपके लघु भ्राता सेठ मगनमलजी भी अल्प आयु में ही सं० १९८२ मगसर बदी ८ को इस लोक से चल बसे।

सेठ घनश्यामदासजी केपुत्रों का नाम नवरत्नमल ऋषभदास है।

सेठ नवरत्नमल।

सेठ नवरत्नमलजी का जन्म सं० १९५८ आसोज सुदी एकम नवरात्रि को हुवा, इसी वजह से आपको नवरत्नमल के नाम से सुशोभित किया गया। जब आपके पिताश्री का देहान्त हुवा था जब आपकी अवस्था केवल लगभग १७ वर्ष की थी तब आप गवर्नमेन्ट हाईस्कूल में पढ़ रहे थे। आपके पिताश्री के देहान्त के समय आपको बड़ा ही दुःख प्राप्त हुवा—केवल यही दुःख नहीं था लेकिन आपके इसी अरसे में ही अपने सम्बन्धियों की वजह से और भी कष्ट हुआ था लेकिन आपकी तेज पुन्यवानी से उसका असर बिलकुल नहीं हुआ तब ही से आप अपना कारोबार उसी अवस्था में संभालने लगे।

जोधपुर तथा उदयपुर दरबारसे ताजीम जो परम्परासे मिला करती थी कुछ काल से बन्द हो गई थी उसे आपने फिर जारी कराई। इस समय भी आपके हस्त में गवर्नमेन्ट के खजाने हैं जिसका कारोबार पूर्ववत कर रहे हैं।

श्रीमान् सेठ नवरत्नमलजी साहब के एक पुत्र है जिनका शुभ नाम कवर बल्लभदासजी है और एक पुत्री पानकुयरबाई है,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सेठ ऋषभदास ।

आपके लघुभ्राता ऋषभदासजी जिनका जन्म सं० १९६४ में रक्षाबंधन के शुभ दिवस में हुवा था, इसी वजह से आपका नाम ऋषभदास रखा गया था। जब आप ७ दिवस के थे तबही आप की माताश्री का स्वर्गवास होगया था। आपका बड़े यत्न से पालन पोषण किया गया और जब आपकी ५ वर्ष के करीब अवस्था में हुये थे कि आपके पिताश्री ने विद्याध्ययन के लिये आर्यसमाजी गुरुकुल कांगड़ी में २५ वर्ष की अवस्था तक के लिये भरती कर दिया लेकिन दैव की गति विचित्र है करीब ४ या ५ साल तक आप वहां पढ़े होवेंगे कि वहां कुछ बीमारी की अशांति होने के कारण से सब विद्यार्थियों की छुट्टियां होगई जब आपके पिताश्री जाकर ले आवे और करीब ४ महीना तक आपने यहां निवास किया होगा कि अभाग्य से पिताश्री का देहान्त हो गया बाद में आपके ज्येष्ठ भ्राता ने आपको यहां रख लिया और वहां ही पढ़ाना आरम्भ करा दिया और जब आप विवाह के योग्य हुये आपकी कोटा में बड़ी धूमधाम से शादी की गई जिसमें महाराजाधिराजा कोटा की तरफ से बड़ी सहायता लवाजमे वगैरह की मिली थी और दोनों भ्राताओं में बड़ा ही स्नेह प्रेम था। लेकिन दुर्भाग्य से पति पत्नी दोनों का एकही साथ एकही दिवस सं० १९८४ आसोज वदी ७ को पूनामें अचानक स्वर्गवास होगया उस समय उनके ज्येष्ठ भ्राता श्रीमान् सेठ नवरत्नमलजी साहब अजमेर में विराजे हुये थे। यह दारुण समाचार सुनकर आपने लघु भ्राता को बचाने के लिये अनेक प्रयत्न किया, परन्तु मृत्यु के सामने सब प्रयत्न निष्फल हुआ इसका उनको बड़ा भारी दुःख हुआ जिसको वे आजन्म नहीं भूल सकते।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओन्नमः शिवाय ॥

अथ गोलाभदर्शनं प्रारभ्यते ।

ओं मधुमान्नो वनस्पति र्मधुमाँ अस्तु सूर्यः ।
माध्वीर्गावो भवन्तुनः ॥ यजु० ॥

उपनयतु मंगलन्नः सकलमंगलालयः श्रीमान् ।
दिनकरकिरणविबोधित नवनलिननिभेक्षणः कृष्णः ॥

प्रणति मोरि स्वीकार करि सुफल करो सब काज ।
ऋद्धि सिद्धि के बीच में राजमान गणराज ॥
श्रीवागीशा के चरणकमल नमूं सो बार ।
दया दृष्टि से वह करे मेरा बेड़ा पार ॥

(राग बिलावल)

चरण कमल बंदों हरि राई ।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अन्धरे को सब कुछ दरसाई ।
बहरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई ।
सूरदास स्वामी करुणामय बारंबार नमो ते प्राई ॥

श्री राजस्थान प्रान्त में अजमेर विख्यात नगर है । श्रीपुष्कर राज जैसा तीर्थ समीप आने से यह भी एक प्रकार का उपतीर्थ है । इसके उत्तरीय भाग में चौहान वंश शिरोमणि महाराजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्णोवराज द्वारा बनवाया हुआ आनासागर सरोवर है। जिसके ठीक पूर्व दिशा में दाहिमा ब्राह्मणों का शिवकुण्ड नामक पंचायती स्थान है। जिसमें भगवान् शंकर, पार्वती, गणपति, हनुमान् और वटुक भैरव के मंदिर विराजमान हैं। पास ही एक यज्ञस्थली है जिस पर कईबार बड़े २ यज्ञानुष्ठान हो चुके हैं।

यह एक सिद्धपीठ है। इसके पास ही जो चन्द्रप्रपा स्थान है, जहां पर आस्तिकसमाज स्थापित है। शिवरात्रि और गणेश चतुर्थी के अवसर पर यहां अच्छा मेला जुड़ता है। यात्री लोग देवदर्शन कर बड़ा आनंद प्राप्त करते हैं। एक दिन गोपाष्ठमी के पर्व पर ब्राह्मण वर्ग एकत्रित हुए थे। वहां अकस्मात् आई हुई गायों को देखकर विप्रमण्डली में प्रश्नोत्तर छिड़ गया जिसको लोकोपकारार्थ गुरु शिष्य संवाद में यहां प्रकाशित करते हैं।

शिष्य—महाराज ? मांगलिक पदार्थ कौन २ हैं ?

गुरु—लोकेऽस्मिन् मंगलान्यष्टौ ब्राह्मणो गौर्हुताशनः।
हिरण्यं सर्पिरादित्य आपोराजा तथाष्टमः॥

अर्थात्—इस संसार में ब्राह्मण, गाय, अग्नि, सुवर्ण घृत, आदित्य, जल और राजा ये ८ पदार्थ पवित्र और मंगलमयी गिने जाते हैं।

शिष्य—इनको देख कर क्या करना चाहिये ?

गुरु—एतानि सततं पश्येन्नमस्येदर्चयेच्चयः।
प्रदक्षिणां च कुर्वीत तथा चायुर्न हीयते॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात्—जो उपरोक्त पदार्थों को प्रतिदिन देखे नमस्कार करे पूजै और उनकी प्रदक्षिणा करै उसकी आयु क्षीण नहीं होती। ऐसा पुरुष दीर्घायु होता है।

शिष्य—गो शब्द किन २ अर्थों में आता है ?

गुरु—सूर्य वृषभमख किरण का अर्थदेय पुंलिंग।
दिशा भारती सुरभि औ पृथ्वी में स्त्री लिंग॥

शिष्य—गोमेध शब्द का क्या अर्थ है ?

गुरु—यह एक प्रकार का यज्ञ होता है। जिसके प्रथम दिन में ऋतुमती गायों का उत्तम वृषभों के साथ (मेध) संगम कराया जाता है। ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या के आसपास गोत्रिरात्रव्रत किया जाता है। इसी प्रकार कार्त्तिक मास में भी गोमेध होता है जिसमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के प्रीत्यर्थकेरड़ा केरड़ी का विवाह कराया जाता है। इसके अतिरिक्त देव कार्य किं वा पितृकार्य में गऊ का दान दिया जाता है वह भी गोमेध है।

शिष्य—यह तो बहुत उत्तम बात है पर लोग तो गोमेध से हिंसा का अर्थ करते हैं।

गुरु—अक्षरों के अर्थों का अनर्थ करने से कुछ का कुछ प्रयोजन निकल जाता है देखो ऐतरेय ब्राह्मण अ० १ खं० ८।

पुरुषंवै देवाः पशुमालभन्त, तस्मादालब्धान्मेध उदक्रामत। ते अश्वमालभन्त, सोऽश्वादालब्धादुदक्रामत। ते गामालन्त,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स गोरालब्धादुदक्रामत्। तेऽविमालभन्त, सोऽवे रालब्धादुदक्रामत् । तेऽज मालभन्त, सोऽजादा लब्धादुदक्रामत् । स इमां प्राविशत् । स एत उत्क्रान्तमेधा अमेध्याः पशवस्तस्मादे तेषां ना श्नीयात् । स व्रीहिरभवत् ॥

अर्थात् देवताओं ने पहले पुरुष ही को पशु समझ कर, यज्ञ में उसका बलिदान देना विचारा। तब ज्ञान शक्ति ने उन्हें सचेत किया कि सोचो। तब तत्काल ही पूर्वाऽपर विचार करने से चेत हुआ कि पुरुष तो उपयोगी है चलो घोड़े की ओर झुको। जब घोड़े को प्राप्त किया तो फिर विवेक ने सुझाया कि आगे बढ़ो। विचारते २ ध्यान में आया कि अब तो गाय की ओर झुकना चाहिये। यहां ठहरते ही फिर ज्ञान ने मार्ग बताया कि इससे तो भेड को लक्ष्य बनाना उचित है। इसपर आरूढ़ होते ही फिर प्रकाश ने प्रेरणा की कि चलो भेड़ को साधन मत समझो। इसके अनन्तर ज्ञान ने चितावनी दी कि आगे चलो तब बकेरे को लक्ष्य बनाया। आगे चल कर विचारधारा ने सचेत किया कि ये सब जिस पर ठहरते हैं और चलते फिरते हैं ऐसी पृथ्वी में वह विचार घुसा। अब उन्हें चेत आया कि यदि इन उपरोक्त प्राणियों को मारें तब तो ये अपवित्र हो जाते हैं और अपवित्र पदार्थ को श्रीयज्ञ पुरुष के अर्पण करना व उसको खाना यह उचित नहीं है। तब तो वह बिचार व्रीहि अर्थात् अन्न बन गया। इसके उपरान्त सबको ज्ञान आया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और सभी ने विचार स्थिर किया कि यह अन्न ही उत्तम बलि है। इसी के अर्पण करने से सब सिद्धियां मिलती हैं तथा ऐसा करने से किसी की हिंसा भी नहीं होती।

शिष्य—गो मेध का विषय तो ध्यान में आ गया। इस यज्ञ में हिंसा नहीं की जाती पर सुनते हैं कि आयुर्वेद में गो मांस की क्यों चर्चा है?

गुरु—गो मांस सेवन में महानियां बताई हैं न कि लाभ। देखो चरकसंहिता का दशमाध्याय।

अथ भगवानात्रेयः तदग्निवेश वचनमनुनिशम्योवाच। श्रूयतामग्निवेश! सर्व मेतदखिलेन व्याख्यास्यमानम्। आदि कालेखलु यज्ञेषु पशवः समालंभनीया बभूवुर्नारंभणायप्रक्रिय- तेस्म। ततो दक्षयज्ञ प्रत्यवर काले मनोः पुत्राणां मरिष्यन्नाभा केक्ष्वाकु कुविड चर्यादीनांच क्रतुषु पशूना मेवाभ्यनुज्ञानात् पशवः प्रोक्षणमापुः। अतश्च प्रत्यवरकालं पृषध्रेण दीर्घसत्रेण यजमानेन पशूनामलाभात् गवालंभः=प्रावर्त्तितः। तंदृष्ट्वा प्रव्य- थिता भूतगणाः। तेषां चोपयोगादुपकृतानांगौरवादौष्ण्याद- सात्म्यादशस्तोपयोगा च्चोप हताग्नीनामुपहतमनसां अतीसारः पूर्वमुत्पन्नः पृषध्रयज्ञे।

अर्थात् भगवान् आत्रेय मुनि ने शिष्य अग्नि वेश के वचन सुन कर उत्तर दिया कि हे प्रिय! सुन मैं तुझे अतिसार रोग की उत्पत्ति का आद्योपान्त कारण सुनाता हूं। आरम्भकाल में यज्ञों में पशुजीवित दशा ही में काम के लिये होते थे मरने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपरांत नहीं। प्रजापति दक्ष यज्ञ के पश्चात् मरिष्य नाभाक, इक्ष्वाकु, कुविड़ और चर्य प्रभृति मनु के पुत्रों के यज्ञ में पशु शुद्ध समझेजाने लगे। इसके अनन्तर पृषध्र ने अपने दीर्घसत्र में यह भी प्रसिद्ध कर दिया कि पशुओं के अभाव में गाय भी काम में लाई जाय। उसके ऐसे बिचार मात्र से ही समस्त प्राणी अत्यन्त उदास हुए। फिर वहां यह दरसाया गया कि ऐसे परमोपकारी जीव को वलि के काम में लाने की चेष्टा करोगे तो अतीसार जैसे महाभयंकर रोग लोगों के शरीरों में प्रवेश पा जायगा। क्योंकि इसका मांस दुर्जर और दाहोत्पादक है। ऐसे सुजीव के शरीर का दुरुपयोग करना अयोग्य ही नहीं प्रत्युत निन्दनीय भी है। इन समस्त प्राणिवर्ग के विरुद्ध जिन लोगों ने पृषध्र के यज्ञ में ऐसे अनर्थ की पुष्टि की तो बचन मात्र से ही उनके शरीरों में मन्दाग्नि तथा चित्तोद्वेग जैसा प्रबल रोग उठ खड़ा हुआ। ऐसा दुर्विचार ही अतिसार जैसे महारोग का मूल कारण है। भला जब ऐसे चिन्तन ही से ऐसी हानि है तो जो इसको करते हैं उनका तो शरीर अवश्यमेव रोगों का घर बन जाता हैं। चितोद्वेग से प्रयोजन यह हैं कि जो इसका सेवन करेगा वह अवश्य उन्माद (पागलपन) आदि रोगों के बशीभूत हो निर्बुद्धिपने के काम को करने लगेगा जिससे देश में उपद्रव फैल कर असंख्य प्राणियों का विनाश हो जायगा। इन्हीं बातों को देखकर ऋषियों ने अपने ग्रंथों में इसकी चर्चा करके मनुष्यों को इस घोर पाप कर्म से बचाने की चेष्टा की है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिष्य—अच्छा तो वेदोक्त गोमहिमाष्टक सुनाइये ?

गुरु—यों तो चारों ही वेदों में गो सम्बन्धी अनेक मंत्र हैं परन्तु संक्षेप से थोड़े से सुनाता हूं यथा—

सा वि॒श्वायु॒: सा वि॒श्वक॑र्मा॒ सा वि॒श्वधा॑याः ।
इन्द्र॑स्य त्वा भा॒गं सोमे॒नात॑नच्मि॒ विष्णो॑ ह॒व्यꣳ र॑क्ष ॥
यजु० अ० १ । ४ ॥

भावार्थ—अध्वर्यु गाय दुहने वाले से कहता है कि जिस गाय को तुमने दुही है और मैंने तुमसे पूछी है (सा) वह गाय (विश्वायुः) तुम्हारी हमारी ही क्या किन्तु समस्त संसार की आयु है। (सा) वह दूसरी गाय (विश्वकर्मा) जगत् की रचना करने वाली है (सा) वह जो तीसरी गाय है सो (विश्वधायाः) अखिल विश्व की धाय अर्थात् उपमाता है लोक में देखा और सुना भी जाता है कि माता के अभाव में गाय को पाल कर ही उसके दूध से बालक की रक्षा की जाती है अथवा दूध, दही, घृत और छाछ आदि पदार्थों की प्रसवित्री होने से सबको तृप्ति देने वाली है। हे वीर ! (इन्द्रस्य) इन्द्र देवता के (भागम्) अंश स्वरूप (त्वा) तुझको (सोमेन) सोमरस की लाग से (आतनच्मि) जमा कर दही के तुल्य गाढ़ा बनाता हूं (विष्णो !) हे विष्णु भगवन् ! (हव्यम्) इस हव्य को (रक्ष) रक्षण कीजिये। तात्पर्य यह है कि हव्य को स्वीकार कर यज्ञ को पूर्ण कीजिये।

अन्ध॒स्थान्धो॑ वो भक्षीय म॒हस्थ॒ महो॑ वो भक्षीयो॒र्जस्थोर्जं वो भक्षीय रा॒यस्पोष॑स्थ रा॒यस्पोषं॑ वो भक्षीय ॥ यजु० अ० ३ । २० ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थ—हे गावः यूयम (अन्धस्थ) हे गायों ! तुम्हारी सहायता से अन्न की उत्पत्ति होने से तुम अन्न स्वरूप हो इसलिये (वः) आपकी कृपा के द्वारा ही हम (अन्धः) अन्न किंवा दुग्धादि पदार्थों को (भक्षीय) खाते हैं। तथा तुम (महस्थ) पूजा की पात्र हो। इसी अभिप्राय से स्मृतियों ने कहा है कि "पदा गौर्न हि स्प्रष्टव्या" अर्थात् गाय के पैर कभी नहीं लगाना चाहिये इस कारण (महः) सत्कार को (वः) तुम्हारी दया से (भक्षीय) हम प्राप्त करते हैं (ऊर्जस्थ) तुम बल स्वरूप हो इस हेतु (ऊर्जं व भक्षीय) आपके अनुग्रह से हम बलके उपासक हो जावें (रायस्पोषस्थ) तुम धनकी पुष्टि करने वाली हो सो तुम्हारी कृपा से (रायस्पोषं वः भक्षीय) धन धान्य की पुष्टि को भी हम लोग प्राप्त कर लेंवे।

रेव॑ती॒ रम॑ध्वम॒स्मिन्योना॑व॒स्मिन् गो॒ष्ठे॒ऽस्मिँल्लो॒के॒ऽस्मिन् क्षये॑।
इ॒हैव॑स्त॒ माप॑गात ॥ यजु० अ० ३। २१ ॥

भा०—(रेवतीः) हे धन वाली गायों ! (अस्मिन्) इस (यौनो) यजमान की यज्ञस्थली में (रमध्वम्) खेलती कूदती रहो [अस्मिन्] इस [गोष्ठे] गोशाला में विचरती रहो [अस्मिन्] इस [लोके] संसार में वा जिसओर याज्ञिकों की दृष्टि पड़ती रहे उस ओर आनंद पूर्वक घूमो [अस्मिन् क्षये] तथा इस यज्ञकर्त्ता के घर में विश्रामप्रदरात्रि के समय में आराम करती रहो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सꣳहितासि विश्वरूप्यूर्जा माविश गौपत्येन ।
उप॑त्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्तर्धिया वयम् ।
नमोभरन्त एमसि । य । अ । ३ ॥ २२ ॥

भा०—हे गोमाता ! तू [संहितासि] यज्ञादि शुभ कर्म करने वाले के साथ सदा बनी रहती हो [विश्वरूपी] नीले पीले आदि जितने रंग संसार में हैं उन सबों को तुम धारती हो [ऊर्जा] अन्नकिंवा दुग्धादि के दान से [गौपत्येन] गायों के आधिपत्य से [मा] मेरे निकट [आविश] पधारियो सब सुखों को साथ लेकर [अग्ने] हे अग्नि देव ! [दिवे दिवे] प्रति दिन [त्वा] तुम्हारे [उपेम] निकट हम आते हैं [दोषावस्तः] रात में निवास करने वाले देवगण ! [वयम्] हम सब यजमानादि याज्ञिक लोग [धिया] ज्ञान किंवा श्रद्धा से [नमोभरन्तः] नमस्कार करते हुए [एमसि] तुम्हारे समीपवर्त्ती होते हैं ।

कामं कामदुघे धुक्ष्व मित्राय वरुणाय च ।
इन्द्रायाश्विभ्यां पूष्णे प्रजाभ्य ओषधीभ्यः ॥ य । १२ । ७२ ॥

भा०—(कामदुघे) समस्त मनोरथों की सिद्धि दात्री हे गो माता ! तू (मित्राय) सकल प्रजा में प्रीति फैलाने वाले परमेश्वर की शक्ति स्वरूप देवता के लिये (वरुणाय) विभव प्रदान करने वाले भगवदंशरूप वरुण के लिये (च) और (इंद्राय) स्वर्गादिलोक फलप्रद देव के अर्थ (अश्विभ्याम्) विविध पाप और ताप निवारक स्वर्गीय वैद्य विशेष देवता के निमित्त (पूष्णे) चराचर के पोषक देवता सूर्य के लिये (प्रजाभ्यः) नाना प्रकार सृष्टि के कल्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

णार्थ (ओषधीभ्यः) अनन्तानन्त औषधियों के ताईं (कामम्) यथेष्ट सफलता को (धुत्त्व) परिपूर्ण कर ।

वस्व्यदितिरस्या दित्यासि रुद्रासि चन्द्रासि ।

वृहस्पतिष्ठ्वा सुम्ने रम्णातु रुद्रो वसुभि राचके ॥

य । अ । ४ । २१ ।

भा०—हे गो माता ! तू (वस्वी) वसुदेवता स्वरूपिणी है (अदितिः) देवमाता वा पृथिवी स्वरूपा (असि) है (आदित्या) बारों ही सूर्यों की शक्ति रूपिणी (असि) है (रुद्रा) एकादश रुद्र वा प्राण स्वरूपिणी (असि) है (चन्द्रा) चन्द्रमा स्वरूपिणी (असि) है (वृहस्पतिः) समस्त देवताओं के गुरुदेव (त्वा) तुझे (सुम्ने) सुख के लिये (रम्णातु) बाँधे वा खोले (रुद्रः) श्रीरुद्रदेव (वसुभिः) आठों ही वसुओं के साथ कान्तियुक्त बनाने में (आचके) सहायता देता रहे ।

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः ।
प्रनुवोचं चिकितुषे जनाय मागामनागामदितिं वधिष्ट ॥

ऋ । ८ । १०१ । १५ ॥

भा०—हे गो माता ! तू (रुद्राणां) रुद्रों की (माता) माता स्वरूपिणी है (वसूनाम्) अष्टवसुओं की (दुहिता) कन्या स्वरूपिणी (असि) है (आदित्यानाम्) १२ महीनों की वा सूर्यों की (स्वसा) बहन तुल्या है तथा (अमृतस्य) अमृत स्वरूप जो घृत किंवा दुग्ध है उसकी तू (नाभिः) नाभि के समान प्रसवित्री है । (चिकितुषे) ज्ञानार्थी (जनाय) मनुष्य के लिये (प्रवोचम्)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
822

कहता हूं (नु) कि तुम (अनागाम्) निर्दोष (अदितिम्) और अखण्डनीय ऐसी (गाम्) गाय को (मा) मत (वधिष्ट) मारो सारांश यह हैं कि विवाह के समय जब मधुपर्क बनाया जाता है तब वर के आतिथ्य के लिये गाय का सब दूध निकाल लिया जाता है तब विचारे बछड़े उस दिन योंके योंही मुँह ताकते रह जाते हैं इसलिये विविध गुण सम्पन्न वर यजमान से कहता हैं कि हे मेरे प्रिय बन्धुओं ! आप लोग केवल मेरे ही सुख के लिये उपरोक्त गुण विभूषित इस गाय माता को मत सताओ । मैं तो यह कहता हूं कि इन छोटे छोटे बछड़ों को तो भर पेट दूध पिलाओ और मोटे सन्तान बैलों को खेती बाड़ी के कामों से छुट्टी दे सुख पहुंचावो औा कष्ट मत देओ ।

इमꣳसाहस्रꣳ शतधारमुत्सं व्यच्यमानꣳसरिरस्य मध्ये ।
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्नेमाꣳहिंसीः परमेव्योमन्। य अ। ३१

भाषार्थ—(अग्ने) हे अग्नि देव ! (परमेव्योमन्) उत्कृष्ट स्थान में स्थित (इमम्) इस (साहस्रम्) सहस्रों के मूल्य से प्राप्य वा सहस्रों के उपकार करने में समर्थ (शतधारम्) सैकड़ों प्रकार से दूध की धार देने वाली (उत्सम्) दूध का कूप स्वरूप (सरिरस्य मध्ये) संसार के बीच (व्यच्यमानम्) अनेक उपायों द्वारा पालन करने योग्य (जनाय) लोक के कल्याणार्थ (घृतम्) घृत के कारण स्वरूप दुग्ध को दुहाने वाली (अदितिम्) अखण्डनीय ऐसी गाय को (माहिंसीः) कदापि मत मारो । तात्पर्य यह है कि हे अग्नि देव ! तू अग्निमांद्य आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनेक रोगों द्वारा गाय जैसे महोपकारी जीव को सर्वत्र बचाता रह। जब ये प्रसन्न रहेंगी और दूध देती रहेंगी तो राजा और प्रजा में सब प्रकार को सुख शान्ति बनी रहेगी।

शिष्य—कृपया गो सेवा का उदाहरण सहित फल बतलाइये ?

गुरु—यों तो इससे अनेकों ने लाभ उठाया है पर श्री मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्रजी महाराज के पूर्वज राजर्षि दिलीप का चरित्र बड़ा ही मनोहर है जिसे सावधानी से सुनो।

श्री पवित्र सलिला सरयू के दक्षिण तट पर अयोध्या-नगरी बसी हुई है। सभी बातों में इसका विभव ऐसा चढ़ा बढ़ा है कि जिसके सामने इन्द्रपुरी भी सिर झुकाती रहती है। इक्ष्वाकु प्रभृति अनेक सूर्यवंशी राजाओं ने इसको ऐसी दिपाई कि सात द्वीप और नवों खण्डों में इसकी महिमा परिपूर्ण फैल गई। महामुनि वशिष्ठ जैसे पुरोहित होने से रविवंश का अभ्युदय दिनों दिन बढ़ने लगा। राजा दिलीप बड़े धर्मात्मा न्यायमूर्त्ति और गुरुभक्त थे। बड़े २ शूर सामन्त राजा की आज्ञा में सदा तत्पर रहते थे। सेना के लोग ऐसे निर्भय थे कि धर्म के लिये सदा अपने प्राणों को हथेली में लिये रहते थे। नगरी में सहस्रों धनाढ्य निवास करते थे जिनका दान और धर्म अत्यन्त ही प्रशंसा के योग्य था। वाणिज्य व्यवसाय ऐसी उन्नत दशा में था कि समुद्रपार तक उनका गमनाऽगमन होता रहता था। राज्यका ऐसा उत्तम प्रबन्ध था कि किसी को भी अन्न वस्त्र का घाटा नहीं था। चारों वर्ण आपस में हिलमिल कर रहते, और समय पड़ने पर एक दूसरेकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहायता करते थे। आश्रमोंका नियम भी ऐसा था कि मर्यादा के विरुद्ध कोई कुछ नहीं कर सकता था। राजा और प्रजा में भी घनिष्ठ प्रेम था। प्रजा के लोग राजा को पितृवत् मानते थे और राजा उनको पुत्र समान जान पालना करता रहता था। कर्मचारी जन ऐसे थे कि मनुष्य तो क्या पर पशु पक्षियों तक को प्रसन्न रख धर्म वृद्धि करते कराते रहते थे।

मगध देश के राजा की पुत्री सुदक्षिणा राजर्षि-दिलीप की पटराणी थी। दम्पती में परस्पर इतना स्नेह था कि जिसका वर्णन करना बड़ा ही कठिन है। राजा एक पत्नी-व्रत और राणी अप्रतिम पतिव्रता थी। श्री परमेश्वर की दया से समृद्ध राज्य हाथी घोड़ा दास दासी आदि की समस्त सामग्री, असंख्य धन होने पर भी एक पुत्र के न होने से राणी का चित्त सदैव उदास रहा करता था। एक दिन राजा हँसते २ रणवास में आ रहे थे कि मार्ग ही में मनोरमा नाम्नी परिचारिका ने आकर हाथ जोड़ सूचना दी कि कृपानाथ! आज महाराणी न जाने क्यों उदास है? पहले तो राजा भी एकदम रुकसे गये फिर राणी के स्वभाव को समझ बूझ आगे बढ़े तो क्या देखते हैं कि राणी एकान्त में लेटी हुई चिन्ता में मग्न है। राजा को आते देख तुरन्त खड़ी हो सत्कार करती हुई ऊपरले मनसे प्रसन्नता दिखाने लगी। राजा उसके मन का भाव जान कहने लगे कि प्रिये! आपको ऐसी कौनसी व्यथा है कि जिसके कारण यह चाँदसा मुखड़ा फीका पड़ रहा है? राजा के ऐसे स्नेहार्द्र वचन सुन राणी ने बड़ी ही

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नम्रता से उत्तर दिया कि कृपासागर ! श्रीदेवाधिदेव महादेवकी कृपासे सब आनन्द मंगल है पर एक लालके बिना ये हीरा मोती लाल मुझे कालके जालके समान प्रतीत होते हैं । यथा—

धूलिधूसरित दिग्वसन, जटिल लाज का त्यागि ।
गंगाधर (शिव)सम पुत्र को, देखत नर बड़-भागि॥
जहँ दधि मंथन घोषनहिं, अजिर न खेलत बाल ।
अतिथि जहां पग नहिं धरे, अस गृह वन सब काल ॥

प्राणनाथ ! बड़े २ ऋषि मुनियों के मुखसे मैंने भी कथावार्त्ता में सुना है कि उत्पन्न हुआ मनुष्य तीन ऋणों से बँधा रहता है। ब्राह्मण यज्ञ दान और सन्तान से देवऋण ऋषिऋण और पितृऋण से निर्मुक्त होता है। क्षत्रिय धर्मरक्षा वेदरक्षा और वंशरक्षा से छुटकारा पाता है। वैश्य हरिभक्ति गोपालन, विद्योपार्जन, और कुल पालन से उत्तम गति प्राप्त करता है और शूद्रों को त्रिवर्ण की सेवा ही से तीनों ऋणों से छुट्टी मिलती है। राजा उपरोक्त बातों को सुन क्षणभर के लिये तो स्तब्ध से हुए फिर धीरजधार विचार कर बोले प्रिये कि ! आपका कथन बहुत ही सत्य है पर बड़ोंका कथन है कि "यत्रापायः सम्भवति तत्रो पायोऽप्यस्ति" अर्थात् जहां अपायकी सम्भावना है वहां उसका उपाय भी साथका साथ ही है। जब दैवी और मानुषी आपदाओं के निवारक महामुनि वशिष्ठ जैसे अपने कुल पुरोहित हैं तब अपने को इतनी चिन्ता करना सर्वथा अनुचित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रकार राणी का परितोष कर रात के समय तो दोनों निश्चित सो रहे। दूसरे दिन राजाने ब्राह्ममुहूर्त्त में उठ शौच स्नान से निवृत्त हो सन्ध्यावन्दन अग्निहोत्र और देव पूजन को विधिवत् किया। फिर गोदान कर राज सभा में आये। बड़े २ विद्वान् मन्त्रियों की सम्मति से राजकार्य का निरीक्षण किया। दूर २ से दर्शनार्थ आये हुए राजा महाराजा कवि चारण आदि लोगों का यथा योग्य सत्कार कर मध्यान्ह के समय रणवास में पहुँचे। वहां भक्ति पूर्वक षट्रस भोजन जो सिद्ध हुआ था उसे भगवान् के समर्पण कर सुपात्र ब्राह्मणों को जिमाया और अवशिष्ट प्रसाद दोनों ने लेकर घड़ी दो घड़ी विश्राम किया। जब तीसरा पहर हुआ तो राजप्रासाद के किसी एकान्त भाग में अन्तरंगसभा की। जब मंत्रियों ने बुलाने का कारण पूछा तो राजाने उत्तर दिया की श्रीपरमेश्वर की दया दृष्टि से सब प्रकार के आनन्द हैं और आप लोगों के उत्तम प्रबन्ध से प्रजा में भी सर्वत्र सुख शान्ति है पर एक संन्तान के नहीं होने से राणी को बडी भारी चिन्ता है। उसके इस क्लेश को मिटाने के लिये मुझे भी अब पूरा २ ध्यान देना चाहिये। हमारे पीछे कौन इस राज पाट को सम्हालेगा तथा हमारे देहावसान के अनन्तर कौन हमारा श्राद्ध तर्पण करेगा उत्तराधिकारी का विचार सामान्य गृहस्थ को भी आता है फिर राजा के लिये तो बड़ी ही आवश्यक बात है। इसलिये हमारी इच्छा है कि कुछ दिनों हम श्रीवशिष्ठाश्रम की यात्रा करें और आप लोग प्रजा की सार सम्हाल रक्खें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महाराज के ऐसे वचन सुन मंत्रियों ने सादर निवेदन किया कि कृपानिधान ! आपके पूर्वजों के पुराय प्रताप से कोई भी बात दुर्लभ नहीं हैं । साक्षात् वेदमूर्ति वशिष्ठ मुनि जैसे जब कुल पुरोहित हैं तब दैवी और मानुषी आपदा आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं कर सकती । फिर राज्यभर में अनेक ब्राह्मण जपतप करते रहते है आपका अन्न खाने से उनका भी षष्ठांश श्रीमानों को मिलता रहता है । ठौर २ राज के सदाव्रत हैं । देव द्वारादि अनेक महोपयोगी स्थान राज कोश से बनते रहते हैं जिनसे सहस्त्रों का प्रतिदिन उपकार होता रहता है । न्याय आपका दूध का दूध और पानी का पानी है । देश भर में आतंक ऐसा जम रहा है कि सिंह और बकरी १ घाट पानी पीते हैं निस्सन्देह "शुभस्यशीघ्रम्" इस महा वाक्य को मान गुरु महाराज के पास पधारिये वे अवश्य आपका खटका खोल देंगे ऐसी परिपूर्ण आशा है ।

मंत्रियों की सम्मति सुन राजा बड़े प्रसन्न हुए । रणवास में जा सब समाचार कहे तो तुरन्त ही मगधेश कुमारी साथ चलने और तपस्या करने को उद्यत हो गई । महाराज ने विश्वासी परिवार और परिचारकों को साथ ले राजमहलों का प्रबन्ध कर राजभार मंत्रियों को सौंप दिया । जब यात्रार्थ रथ आया तो इष्ट देव का ध्यान कर उसमें जा विराजे । प्रस्थान के समय मंत्रियों से ऐसी आज्ञा दी ।

गो ब्राह्मण हरिभक्तसुर अबला तथा अनाथ ।
इनकी रक्षा कीजियो तन मन धन के साथ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पशुपक्षी भी राज्य में कष्ट कदापि न पाय।
मूल मंत्र रविवंश का सदा पालिये न्याय ॥

राजाके इन बचनों को सुन मंत्रिमण्डलने हाथ जोड़ विनती कर कहा कि दयासागर! हम सब आपकी इच्छानुसार ही कार्य करेंगे। ये वाक्य सुनते ही राजा तुरन्त रथ पर सवार हो श्रीगणेशजी को मनाय विदा हुए। नगरवासी लोग जय जय शब्द पुकारते उदक्रान्त राजा को पहुँचाने गये। मार्ग में जो गाँव खेड़े आते थे उनके निवासियों को दर्शन देते और कुशल प्रश्न पूछते दोचार विश्रामों के उपरान्त महर्षि वशिष्ठजी के आश्रम के समीप पहुंचे।

वहां जाकर क्या देखते हैं कि पर्वतराज हिमालय के शिखर चाँदी के पहाड़ से दिखाई देते हैं। यही सुमेरु और रत्न सानु हैं। असंख्य ओषधि और बनस्पतियों का यही प्रसव स्थान हैं। सैंकड़ों देवर्षि और महर्षियों ने इसी के ऊपर तपस्या करके ब्रह्मलोक की प्राप्ति की है। पुरातन लोग इसी पुण्य प्रदेश को स्वर्ग की उपमा देते थे। चारों ही दिशाओं के वानप्रस्थ और सन्यासी वर्ग इसी भागीरथी में स्नान करके त्रिविध पाप और तापों से छूट जाते थे। बड़े २ चक्रवर्त्ती राजा महाराजा लोग राजपाट छोड़ पिछली अवस्था में यहीं हरि स्मरण कर अपूर्वानंद का अनुभव करते थे। कई धनाढ्य कोटि पति महाजन असंख्य सम्पदा को तृणवत् त्याग पुण्य सलिला जान्हवी के तटपर ऋषि मुनियों के सदुपदेश श्रवण कर संसारसागर से पार उतरते थे। यद्यपि इस गिरराज की उपत्यका और अखिल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का में अनेक ब्रह्मर्षि लोग विराजमान हैं पर उनमें ब्रह्मवेत्ता वशिष्ठजी का स्थान सर्वोपरि है। जहां ऋषिराज विराजते थे उसके निकट ही देव नदी कलकलाट शब्द करती हुई अनोखी छटा दिखा रही है। जिसमें हंसकारंडवादि नाना प्रकार के पक्षी कलरव करते हुए बड़े शोभायमान हैं। कहीं नीले कहीं पीले और कहीं धोले कमल शोभित हो रहे हैं। जिनके ऊपर झुक झुक झूम झूम घूम घूम भँवरे अनुपम गुंजार शब्द कर रहे हैं कितनेक कमलों के पत्तों पर बिखरे हुए ओस कण मोतियों सी अपूर्व द्युति को धारण कर रहे हैं। आश्रम के समीपवर्ती उद्यान में कहीं अशोक नारिकेल, आम, बिल्व पूग आदि सैंकडों फलवान् वृक्ष लगे हुए हैं। वे सभी फलों के भार से ऐसे झुके हुए हैं जैसे विद्वान् विद्या को पाकर नम्र हो जाते हैं। उन्हीं के आस पास चम्पा चमेली मल्लिका मालती आदि अनेक लतायें पुष्पित और पल्लवित हो रही हैं। दर्शक लोग वृक्षों के आसपास लताओं को देखकर परस्पर कहते थे कि ये तरु ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे नायक और बेलडियां मानों नायिकायें हैं। तपोवन में कहीं बालक खेल रहे हैं तो कहीं बालिकायें अपनी २ क्रीड़ा में दत्त चित्त हैं। कोई शिष्य देवपूजा के लिये पुष्प तोड़ता है तो कोई भागता हुआ समिधा लाकर अग्निहोत्र क्रिया को पूर्ण कर पुण्य कमा रहा है। कहीं ऋषिवेद पढ़ रहे हैं तो मुनि पत्नियां उत्तमोत्तम स्तुतियां गाकर भगवान् को लड़ा रही हैं। किसी स्थान पर महात्मा लोग उपनिषद् और वेदान्त विचार में लीन हैं तो कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्मशास्त्र और षड्दर्शन पढ़ाकर ज्ञान की ज्योति जगा रहा है। कोई कोई योगिराज एकान्त में शुद्ध स्फटिक शिला पर बैठकर समाधि का आनन्द लूट रहे हैं किसी स्थल पर बूढ़े मुनि लोग इतिहास और पुराणों की कथा कहकर श्रोताओं के चित्तों को आनन्दाम्बुनिधि में निमग्न करके अपूर्व सुकृत संचित कर रहे हैं वहां मुनियोंका ऐसा आतंक था कि सिंहके बच्चे गायोंके बछडों के साथ खेलते कूदते और बन्धुभाव निभाते हैं। सर्प तथा वृश्चिकादि विषैले जन्तुओंका वहां नामतक कोई नहीं जानता इत्यादि अनेकानेक आश्चर्य कारिणी घटनाओं का अनुभव करते २ राजा और राणी श्री वशिष्ठ मुनि की पर्णशाला के समीप जा पहुंचे।

राजा और राणी ने जाते ही ऋषि दंपती के चरणों में प्रणाम किया। उन दोनों ने भी उन्हें जय का आशीर्वाद दिया। ऋषिराज उस समय अपने आह्निक कृत्य से निवट चुके थे अतः शिष्यों को आज्ञादी कि तुरन्त इनके स्थान भोजनादिका प्रबन्ध करो। फिर जब ये मार्ग जनितश्रम से निवृत्त हो जावें तब इन्हें यहीं ले आवो (ये भारताधीश्वर हैं और आप संयोगवश अपने अतिथि बने हैं। इनकी पूरी २ सम्हाल रक्खो किसी भी बात का इनको कष्ट होने नहीं पावै। गुरुवर्य की आज्ञा सुन शिष्यों ने सविनय बाढम् कहा। फिर उनको उत्तम स्थान पर लेजा कर ठहरा दिया और सब प्रकार का प्रबन्ध कर राजा और राणी को नाना भाँति से प्रसन्न कर लिये (जब विश्राम के उपरान्त दोनों ऋषि महाराज के पास पहुंचे तो पहले अनामय पूछी और बोले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि राजन् ! आपका अकस्मात् आगमन कैसे हुआ ! प्रजा में तो सब कुशल क्षेम है ? किसी कारण विशेष से राजा और प्रजा में कोई विवाद तो नहिं उठा है ? आप प्रतिदिन ब्राह्म मुहूर्त्त में उठ कर धर्म और अर्थ का चिन्तन तो सदैव करते रहते हो या नहीं ? आपके ऋत्विग्वर्ग यज्ञानुष्ठान द्वारा दैवी और मानुषी आपदाओं का निवारण करते रहते हैं या नहीं ? राज्य का मूल गुप्त मंत्र है सो उसका रहस्य सर्वत्र फैल तो नहीं जाता ? आपके राज्य में गो और ब्राह्मणों पर तो कोई कष्ट नहीं आ पड़ा है ? विदेश से आये हुए शूरवीर विद्वान् कवि चारण आदि लोग तो यथायोग्य सत्कार पाये बिना नहीं लौटते ? राज्य के अंतर्गत निवास करने वाले साधु महात्मा जो सदैव धर्मोपार्जन ही में लगे रहते हैं उनको किसी प्रकार की असुविधाओं ने तो नहीं घेरा है ? श्री प्रजापति देव ने चार वर्ण और चार आश्रमों का वेदों द्वारा अटल नियम बाँधा है उसे कोई अस्तव्यस्त तो नहीं कर देता ? समुद्र पार देशान्तरों में जाकर जो व्यापारी वैश्य लोग भरतखण्ड के वाणिज्य की वृद्धि करते रहते हैं उनको लूट खसोट द्वारा कोई दुष्ट बाधा तो नहीं पहुँचाता ? श्री भगवान् ने संसार को चलाने के लिये स्त्री पुरुषों का जोड़ा रचा है सो कहीं वे परस्पर विभ्रम व्यवहार से मर्यादा त्याग तो नहीं करने लग गये ? द्विजातिगण शूद्रादि वर्गों का तिरस्कार कर कलह का बीज तो नहिं बोने लगे हैं ? चतुर्थ वर्ण जो सेवा ही के लिये जन्मा है त्रिवर्ण के साथ स्पर्द्धा कर उनकी अवहेलना तो नहीं करता ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आप प्रतिदिन राजसभा में जाकर प्रजा के दुःखों को स्वयं सुनते रहते हैं या नहीं ? देवकार्य पितृकार्य और मानुषी कार्यों के परिपूर्ण सहायक ऐसे पशु समुदाय को कोई विशेष पीड़ा तो नहीं देते ? बहुधा राज के कर्मचारी वर्ग उत्कोच (घूंस) लेकर प्रजा का धन अपहरण करने लग जाते हैं सो ऐसा अनर्थ तो कहीं होने नहीं लग गया ? मंत्री पुरोहित सेनापति आदि जो राज्य के मुख्यांग हैं उनका अनुराग तो आपसे नहिं हट गया है ? आपका कोष वृथा विवाद से उत्पन्न हुए ऐसे कलहों में तो व्यय नहीं होता हैं ? आपका व्यय आयके विरुद्ध तो नहीं होता रहता है ? लोभी कर्मचारी थोड़ेसे वेतन वृद्धिके स्वार्थसे प्रजाके ऊपर नित नये कर तो नहीं लगाने लगे हैं ? इत्यादि अनेक उपयोगी प्रश्न पूछ कर महर्षि उत्तर सुननें के अभिप्राय से चुप हो गये।

इसप्रकार गुरुदेवके बचन सुन राजा हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगा कि कृपानिधान ! धन्य हमारे भाग्य जो आप जैसे परम-हितैषी गुरु मिले।

सूर्य वंश समशुद्ध कुल, श्रेष्ठ पुरोहित आप ।
फिर क्योंकर दुख दे सकें, हमें त्रिविध संताप ॥
श्रुति स्मृति और पुराण के बचनों के अनुसार ।
चक्र चलाऊं इसलिये सुखी सकल संसार ।
ज्यों तर्पण श्राद्धादि सें करूं पितृ सत्कार।
त्यों मेरे पीछे चहिय पिण्डद पुत्र उदार ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परमेश्वर प्रसाद से सकल सुलभ हैं भोग।
एक पुत्रकी प्राप्ति हित करन चहूं उद्योग॥
हम दोनों सब काम तजि आये हैं ऋषि द्वार।
दया दृष्टि कर आप अब कर दीजे उद्धार॥

महाराज! इस संसार में जो कोई आता है वही कुछ न कुछ अपना चिन्ह छोड़ जाता है यहां तक कि वृक्ष जाति भी अपने लाखों वीजों में से एक बीज द्वारा पृथ्वी की शोभा बढ़ाने वाला धन छोड़ आप लीन हो जाता है! राजा के ऐसे बचन सुन ऋषि-पत्नी अरुन्धती बोल उठी कि राजन्! आपके विचार बहुत श्रेष्ठ हैं। पुरुषों की अपेक्षा पुत्रों की लालसा स्त्रियों को बहुत सताती रहती है। आपने यहां पधार कर बहुत अच्छा काम किया। महर्षि अवश्य आपको उत्तम उपाय बतावेंगे (दूसरे आपके वंश में बड़े २ धर्मनिष्ठ राजा होचुके हैं सो उनके भी पुण्य प्रभाव से निश्चय वंश की वृद्धि होगी। जो लोग परभूमि, परदारा पर परिश्रम का फल और पराई कीर्त्ति को अपहरण करते रहते हैं उन्हीं के वंश का विच्छेद होता है। आपके गोत्र से ये बातें कोसों दूर हैं इसलिये न्हाते भी बाल बाँका नहीं होगा। पुराणी बातों को जाने दीजिये। अभी भी आपकी महाराणी सुदक्षिणा दान धर्म-व्रत और उपवासों में सत्ययुगी स्त्रियों से किसी भी बात में न्यून नहीं है। स्त्री जाति में ऐसी नारी रत्न को देखकर मेरा भी मन आश्चर्य सागर में डूब जाता है। मैं पार्वती परमेश्वर से विनय करती हूं कि आपका जोड़ा जब तक श्रीगंगा-यमुना में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जल रहे तब तक विद्यमान रहे। उपरोक्त वार्त्तालाप को सुन कर ऋषिराज बोले कि आपका कथन शास्त्र सम्मत है यथाः—

अथ त्रयो वावलोकाः। मनुष्यलोकः पितृलोको देवलोकश्चेति। सोऽयं मनुष्यलोकः पुत्रेणैव जय्योनान्येन कर्मणाइति ॥ वृ० उ०।

अर्थात् तीन लोक विख्यात हैं मनुष्यलोक, पितृलोक और देवलोक सो यहमनुष्यलोक पुत्र प्राप्ति से ही सार्थक होता है उपायान्तर से नहीं। आपके सब कर्म श्रेष्ठ हैं फिर क्यों अन्तराय पड़ा। इसप्रकार कहकर कारण की खोज के लिये एकाग्रचित्त हो ध्यान करने लगे। ऋषि त्रिकालदर्शी थे। एक मुहूर्त्त के उपरान्त उन्हें योग विद्या द्वारा ज्ञात हुआ सो कहने लगे कि राजन्? एक समय आप देवराज के दर्शनार्थ इन्द्रपुरी पधारेथे। वहां से लौटते समय आपको स्मरण आया कि रानी ऋतुमती है सो "ऋतौभार्यामुपेयात्" अर्थात् ऋतुकाल में भार्या के पास अवश्य जाना चाहिये इस वाक्य के अनुसार वीर्यदान देने के निमित्त आप अत्यन्त त्वराके साथ जाने लगे (इधर राणी भी ऋतुकाल के तथा प्रशस्तरात्रियों के अतिरिक्त समय में मैथुन सेवन द्वारा वृथावीर्यपात को भ्रूणहत्या के समान समझती थी इससे आपको उसका अधिक ध्यान था। वहीं मार्ग में कहीं कल्पवृक्ष की छाया में साक्षात् कामधेनु भी विराजमान थी। आपने न तो उसकी ओर देखा और न प्रणाम किया इस पूज्य पूजा व्यतिक्रम से असन्तुष्ट होकर उसने शाप दिया कि जिस कार्य के लिये तू जाता है वह काम सफल नहीं होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जहँ अपूज्य पूजा लहें पूज्य भुलाये जात।
तहँ भय मरण अकाल ये तीन होंय उत्पात॥

इसां यदि कभी कामदुधा वा उसकी संतति की सेवा बनेगी तब इस अमंगल का परिहार होगा। दूसरा कारण यह भी था कि वहां आकाश गंगा का बहाव था अतः उसकी घर घराहट में आप इस शाप को सुन नहीं सके;

ऋषिवर के ऐसे वचन सुन तुरन्त राजा पछतावा करने लगा। फिर प्रार्थना की कि कृपानिधान! इस दोष का शीघ्र ही परिमार्जन कीजिये जो मेरे मनका खटका जाय। तब वशिष्ठ मुनि बोले राजन्! आप किसी बात की चिन्ता मत कीजिये। मेरे पास उसी कामधेनु की पुत्री नंदिनी है सो उसकी सेवा से शीघ्र ही आपका मनोरथ सिद्ध हो जायगा। आपको गो सेवा व्रत इस भाँति करना होगा यथाः—

उत्थितायूत्थितस्तिष्ठेद् उपविष्टासु च स्थितः।
अभुक्तवत्यां नाश्नीयात् अपीतासु च नो पिवेत्॥
त्राणंचैवात्मना कार्यं भयार्त्ताश्च समुद्धरेत्।
आत्मानमपि संत्यज्य गोव्रतंतत् प्रकीर्त्तितम्॥ म० स्मृ०॥

अर्थात् जब वह उठे तब आप उठें। उसके बैठने पर आप भी बैठ जावे। जबतक वह नहीं खाय तबतक आप भी कुछ नहीं खावे। वह जल पान नहीं करे तबतक आप भी पिपासित रहे। यदि उस पर कोई संकट आ पड़े तो धन और मन तो क्या किन्तु तन को भी समर्पित कर दे। इस प्रकार एक मास तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गो व्रत किया जाता है सो गाय सम्बन्धी समस्त अपराधों को मेट कर सकल कामनाओं का दाता है। राजा और ऋषिराज के बीच इस प्रकार बातें हो रहीं थीं कि दैवेच्छा से उसी समय प्रसन्न मुख राँभती और पूंछ फटकारती वह मुनि धेनु वहां आ पहुंची। उसे देख खड़े होकर राजा ने जब प्रणाम किया तब मुनि बोले यह बहुत अच्छा शकुन हुआ। अब आप किसी भी बात की चिन्ता न करें। शकुन शास्त्र का सिद्धान्त है कि:—

जिससे तुम मिलना चहो वह यदि सम्मुख आय।
कार्य सिद्धि तब सुलभ है शकुन शास्त्र बतलाय॥

ऐसे वाक्य सुनकर राजा ने कहा महाराज! तथास्तु, इसके उपरान्त ऋषि की आज्ञा पाकर दोनों ही अपने निवास स्थान को पहुंचे और रातको आनंदपूर्वक व्यतीत की। प्रभात होते ही राजा और राणी दोनों ऋषि की आज्ञा पाय कामधेनु के पास जा पहुंचे। वहां गंध अक्षत धूप दीप नैवेद्य आदि द्वारा यथाविधि पूजन कर दिव्य पुष्पों की माला पहनाई। फिर कोमल तृण सामने धर हाथ जोड़ प्रार्थना की कि हे गो माता! तू प्रसन्न होकर हमारे मनोरथ को सिद्ध कर। इसके उपरान्त बछुड़े को धपाऊ चुखा कर बन में चराने को लेजाने के अभिप्राय से खोली। चलते समय गाय के चरण जो धरती पर पड़ते थे उससे मार्ग की धूलि पवित्र हो जाती थी। आगे राजा और पीछे चलती हुई राणी ऐसी सुशोभित होती थी जैसे श्रुति के साथ २ स्मृति चलती हो। गाय तो मानों पृथिवी स्वरूपिणी दिखती थी और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चारों थन चार समुद्रों के समान थे। इस प्रकार चलती हुई गाय जब बहुत दूर पहुंच गई तो राजा ने अपने सेवक वर्ग के साथ राणी सुदक्षिणा को आश्रम की ओर लौटा दी। राजा दिलीप के साथ यद्यपि कोई भी नौकर चाकर साथ नहीं था तो भी वे अपने तेज प्रताप से सुरक्षित ही प्रतीत होते थे। महाराज मनु के वंशज अपनी रक्षा आपही कर लेते हैं उनकी रक्षा के लिये दूसरे रक्षकों की आवश्यकता नहीं होती। कभी तो राजा हरी हरी घास चुनकर उसे खिलाते हैं, तो कभी मक्खी मच्छरों को उड़ा कर उसको प्रसन्न करते थे। जहां गोमाता जाती उधर ही आप भी चले जाते थे जहां वह बैठती वहां आप भी बैठ जाते जब वह उठ खड़ी होती तब आप भी उठ खड़े होते। ज्योंही वह जल पीने लगती त्यों ही आप भी पीने लगते। राजा इस प्रकार अनुसरण करते जैसे गाय की मानों परछाई ही होगये थे। बनवास के कारण राजा ने यद्यपि सभी राज चिह्न त्याग दिये थे तो भी वे अपने ऐश्वर्य से ज्वलंत पुरुष दिखाई देते थे। जिस भाँति छिपी हुई दानरेखा से मदोन्मत्त हाथी सुशोभित होता है वैसे वे राजा गुप्त तेज से विभूषित थे। सघन जंगलों में गाय के साथ चलते २ उनके केशों का बन्धन खुल जाता तो वे लता तन्तुओं से बाँध कर उसे ऐसे ठीक कर लेते थे जैसे धनुर्धरा बिखरें हुए बाणों को समेट कर धनुष को सुसज्जित करता हो। वहां राजा का आगमन केवल ऋषि की धेनु को चराने ही के लिये नहीं था किन्तु हिंसक जंतुओं से शष्प भोजियों की रक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना यह भी एक उद्देश्य था। वृक्षों की डालियों पर बैठे हुए नाना प्रकार के पक्षी जो प्रिय शब्द बोलते थे सो मानों परोपकारी राजा को जय शब्द द्वारा आशीर्वाद सुनाते थे। राजा जिस लता के पास से होकर निकल जाते थे वहां पर उन पर पुष्पों की वृष्टि हुआ करती थी। जिस प्रकार पधरावनी के समय नगर की कन्यायें लाजा बरसाती हैं उस दृश्य का अनुभव वहां होता था। वन में घूमती २ हरिनियां अनायास जब राजा के पास आ जाती थीं तो इसके पास धनुष बाण को देख कर वे नहीं डरतीं थीं प्रत्युत उसके मनोहर स्वरूप को निरख कर अपने विशाल नेत्रों का फल पाती थी। वन के बाँसों के छेदों में से जो शब्द सुनाई देता था वह ऐसा जान पड़ता था कि मानों वन के देवता उस गृहागत अतिथि का स्वागत गान करते हों। बाँसों की रगड़ से वन में कहीं २ आग लग जाती थी सो वह भी बिना ही वृष्टि के केवल राजा ही के आतंक से शांत हो जाती थी। इस प्रकार दिशा और विदिशाओं में घूम कर महर्षि की धेनु धीमी चाल से सन्ध्या के समय आश्रम की ओर मुड़ी। सूर्यास्त के समय को निकट जान शूकरों के झुन्ड जल का प्रसंग छोड़ सूखे घास वाले क्षेत्रों का आश्रय लेने लगे। आकाश के उच्चतम प्रदेशों में भी उड़ने वाले पक्षी अब आगे बढ़ना छोड़ अपने घोंसले तथा निवास स्थानों की ओर लौटने लगे। थनों के बोझ से तो गाय और शरीर की स्थूलता के कारण राजा धीमी चाल से चलते हुए बड़े ही सुहावने प्रतीत होते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्याम का समय निकटवर्ती होने से इधर राणी सुदक्षिणा भी नन्दिनी सहित राजा के आगमन की प्रतीक्षा करने लगी। जब गाय सम्मुख आई तो थाल में धरी पूजा सामग्री से उसका अर्चन कर आरती उतारी इधर राणी बीच में गाय और उसके पीछे राजा को उस समय देखकर ऐसी शोभा प्रतीत होती थी मानों दिन और रात के बीच में सन्ध्या सुशोभित हो। यद्यपि दिन भर के वियोग से गाय बछड़े से मिलने को अत्यन्त ही उत्कण्ठित थी पर राजदम्पती का आदर सत्कार देखकर वह स्थिरता पूर्वक खड़ी रही। इस प्रकार गाय माता का अनुराग देखकर दोनों ही ने निश्चय कर लिया कि अवश्यमेव इस गो-सेवा का शुभोदर्क होगा। बड़ों का कहना है कि "होनहार विरवान के होत चीकने पात" अर्थात् जो वृक्ष लगने वाला होता है उसके पत्ते पहले ही से हरे भरे और लहलहाते रहते हैं। राजा और राणी की ऐसी आस्तिकता देखकर आश्रमवासी ऋषि मुनि मन ही मन प्रसन्न होते और सराहना करते थे धन्य राजा तेरा सत्स्वभाव। जिसने अपने बाहुबल से अनेक शत्रुओं का संहार किया है वह इस प्रकार गो सेवा के लिये तल्लीन है। इसके अनन्तर जब कामधेनु गौशाला में पहुंची तो नियमानुसार बछुड़े को चुखा दूध दुह कर ऋषिराज के समर्पित किया। फिर दीपदान द्वारा समग्र विधि समाप्त कर रात के नीरणे आदि की व्यवस्था बाँध हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इहैव गाव=एतंने हो शकेव पुष्यत ।
इहैवोत प्रजायध्वं मयि संज्ञानं मस्तुवः ५ अ । अ ३ । सू । १४ ॥

भाषार्थः—(हे गावः) हे गायो ! (इह) यहां (एव) ही (एतन) आइयो (इह) यहां ही (शका) मक्खियों के समान (पुष्यत) असंख्यात पने को धारण कीजिये । (उत) और (इह) यहां (एव) ही (प्रजायध्वम्) वंश विस्तार कीजियो । (वः) तुम्हारी (मयि) मुझ में (संज्ञानम्) प्रेमभाव (अस्तु) बना रहे । इस प्रकार विनति कर विश्राम करने को चले जाते ऐसे करते २ राजा और राणी के २१ दिन निर्विघ्न समाप्त होगये जब २२ वां दिन आया तो गायने अपने भक्त की परीक्षा लेने की ठानी । प्रति दिन के नियमानुसार चलती २ सम्मुख आयी हुई हिमालय की किसी गुफा में प्रवेश किया । राजा के मन में इस बात का पूरा २ भरोसा था कि यह गाय देवताओं की विभूति है । इसलिये इसका अनिष्ट कोई मन से भी नहीं कर सकता ऐसा सोच विचार कर भूधर की शोभा देखने में लगगया ।

क्षणभर के उपरान्त राजा को सिंह की गर्जना सुनाई दी । तत्काल राजा देखना भालना छोड़ गुफा में घुसा तो क्या देखता है कि सिंह ने गाय को दबोच रक्खी है । उस समय गाय के ऊपर आरूढ मृगराज ऐसा प्रतीत होता था मानों गैरूं की गुफा पर लोध्र का वृक्ष उगा हुआ हो । राजा तुरन्त ही कोपाविष्ट हो, ज्योंही उसे मारने को बाण निकालने को भातड़े में हाथ डाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्योंही उसका जींवणा हाथ चिपक गया। चित्र लिखित के समान स्तब्ध नरेश ने कई प्रकार के बल किये पर उस समय उसकी एक भी नहीं चली। अपराधी को अपने समक्ष निर्भीक खड़ा देख राजा मनही मन में ऐसा संकुचित होता था जैसे कोई मंत्र प्रयोग से विवश निस्तेज ठूंठ सा खड़ा हो। राजा को चकाचौंधी से विह्वल जान उसे द्विगुणित आश्चर्य सागर में डुबोता हुआ सिंह मनुष्य की वाणी से कहने लगा। राजन् ! अब आप वृथा परिश्रम मत कीजिये। कारण देवताओं के प्रभाव से मुझ पर शस्त्र प्रहार नहीं हो सकता। देवाधिदेव महादेव जब नंदी पर चढ़ते हैं तब वे पहले मेरी पीठ पर चरण धरते हैं। उनकी इस कृपा से मेरी पीठ ऐसी पक्की हो गई है कि इस पर किसी अस्त्र शस्त्र का प्रभाव नहीं पड़ता। भला आप ही सोचिये कि देवताओं की शक्ति के सामने मानवी शक्ति क्या कर सकती है ? देखिये वायु का वेग वृक्ष को उखाड़ सकता है पर पहाड़ पर उसका कुछ वश नहीं चलता। मैं निकुंभ का मित्र हूं। कुंभोदर मेरा नाम है शंकर के गण मुखिया वीरभद्र के हम आश्रित हैं आपके सामने यह जो देवदारू का वृक्ष खड़ा है उसके आरोप का साक्षात् पार्वती बल्लभ महादेवजी हैं। स्वामी की रुचि देखकर श्री पार्वतीजी भी इसको स्वयं इस प्रकार जल पिलाते हैं जैसे उन्होंने कार्तिक स्वामी को स्तन्यपान करा कर पाला पोषा था। एक बार यहां अकस्मात् कोई जंगली हाथी आ पहुंचा। उसने मदान्धता वश अपनी कनपटी खुजाई जिससे इसकी छाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपड़ गई और वृक्ष भी समूल उखड़ने से बचगया। तब ही से भगवान् शूलपाणिने मुझे सिंह बनाकर यहां बैठा रक्खा है। मैं आहारार्थ अन्यत्र नहीं जाता किन्तु इसके आस पास की जो नियत भूमिका है वहीं अनायास प्राप्त जीवजंतु को मारकर अपना प्राण पोषण करता हूं। मैं कई दिनों से भूखा पड़ा हूं। आज दैवेच्छा से जो भोजन प्राप्त हुआ है उसको खाने में तू कदापि मेरा बाधक मत बन।

हे राजा! मेरे कथन को मान लज्जा त्याग आप आश्रम को पधार जाइये। जो वस्तु शस्त्र द्वारा रक्षित नही होती वहां बुद्धिमान लोग शस्त्री को दूषण नहीं देते। श्री महादेवजी के प्रभाव से गर्वभरी सिंह की वाणी सुन पछतावा छोड़ राजा मन ही मन में विचार करने लगा कि आज मेरी वह दशा हुई है कि जैसे दक्ष प्रजापति के यज्ञ में श्री शंकर की दृष्टि से वज्र उठाते समय देवराज इन्द्र की हुई थी। अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि इसके पास अवश्य कोई दैवी सिद्धि है। ऐसे नाना भाँति के संकल्प विकल्प करता मिष्ट शब्दों द्वारा सिंह को आकर्षित करने का प्रयत्न करने लगा। हे मृगेन्द्र! आप देव दूत हो अतः सब रहस्य समझते ही हो कि जिस प्रकार आपको अपने स्वामी की आज्ञा का पक्ष है उसी प्रकार मुझे भी तो अपने गुरुवर्य की धरोहर का पूरा २ ध्यान है। संसार की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय भी मर्यादा को बाँधने वाले महादेवजी की आज्ञा को कौन टाल सकता है? पर ऋषि लोग भी तो हरिभक्त होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनकी मान मर्यादा रखना भी तो आपका काम है। मेरे पूज्य गुरु की थाथी को नेत्रों के सम्मुख नष्ट होती देखूं और मैं चुपचाप खड़ा २ देखता रहूं यह बात भी तो क्षात्रधर्म के सर्वथा विरुद्ध है। फिर देखिये इसका छोटा बछड़ा आश्रम में इसकी प्रतीक्षा में बिलबिला रहा होगा ? तथा ऋषि महाराज का सभी काम इसी के आधीन हैं इत्यादि बातों का विचार कर मैं आपसे सांजलि निवेदन करता हूं कि मेरे इस देह को खाकर आज प्राण पोषण कीजिये। इस दया मूर्ति गाय को तो कदापि मत सताइये। इसके छोड़ने से आपको तिलभर भी कष्ट नहीं होगा प्रत्युत मुझ पर बड़ा भारी उपकार का बोझ रहेगा। इस असार संसार में जो मेरा सुयश बढ़ेगा उसका पूरा २ श्रेय भी आपही को प्राप्त होगा।

राजा के ऐसे कातर वचन सुन अपनी दन्त प्रभा द्वारा गुफा के अँधेरे को दूर करता हुआ सिंह मंद मंद मुसक्याता हुआ बोलाकि नरेश्वर विदित होता है कि इस गाय में आपका अगाध प्रेम है पर थोड़ासा विचार भी कीजिये कि आप रूपवान् कुलवान् समृद्धिवान् और जवान राजा हैं अतः इस अमूल्य जीवनसे स्वर्ग समान राज्यका सुख उपभोग कीजिये ऐसी गुरुभक्ति और गोसेवा में क्या धरा है ? एक साधारण गाय के लिये अपने प्राणों की आहुति देना मैं तो इसमें आपकी बुद्धिमत्ता नहीं समझता ? इस बातको तो अल्प बुद्धि भी समझ सकता है आप तो विद्वान् बहुश्रुत और अनुभवी नरेश हैं नीति का वचन भी है कि—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अल्प लाभ हित अधिक व्यय करै नहीं गुणवान ।
यह ही तो चतुराइ है लघुतें अधिक बचान ॥

इसके उपरांत श्रीमद्भगवद्वाक्य वेद भी आज्ञा देता है कि "सतत मात्मानं गोपायीत" अर्थात् आत्मा की रक्षा सदैव करनी चाहिये। फिर यदि आप गुरुजी की एक गाय के नाश से ही इतने डरते हैं तो घड़े के समान मोटी गाद्य वाली दूध की धाई ऐसी सैंकड़ों गायें इसके प्रतीकार में मुनिराज को दे सकते हैं। यदि आपका जीव न रहेगा तो ऐसी सहस्रों गायें पुराय करके पुरायो पार्जन कर सकेंगे। विद्वानों की सम्मति है कि धनधान्य पूर्ण राज्य ही पृथ्वी का स्वर्ग है और वह जब आपके करतलगत है तो भला कौनसा धर्म और कौनसा अर्थ तथा काम आपसे दुर्लभ है। इन तीनों का विधिवत् पालन करने ही से चौथा पदार्थ मोक्ष मनुष्य को प्राप्त होता है।

राजा दिलीप सिंह के ऐसे युक्ति संगत बचन सुन कर स्तब्ध हो गया फिर गाय की कातर मूर्ति को देखकर विह्वल हो गया। बहुत सोच विचार कर यह दृढ़ निश्चय किया कि यदि क्षत्रिय होकर संकटापन्न की रक्षा नहीं की तो यह नाम केवल निन्दा ही का पात्र होगा। हे मृगेन्द्र! सज्जनों का कथन है कि जिनके परस्पर सात पदों की बात चीत कुशल प्रश्नादि द्वारा हो जाती है वे आपस में मित्र हो जाते हैं। मैं इस वन में आया हूं अतः आपका एक प्रकार से अतिथि हूं। चाहे मित्र के नाते अथवा अतिथि के धर्म से मेरा कथन अवश्य स्वीकृत होना उचित है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्म शास्त्र में भी राजा को जो महत्व दिया जाता है उसका भी प्रयोजन यही है कि वह प्रजा के हितार्थ अपने प्राण न्योछावर करदे। हे मृगराज! आपने कहा कि ऐसी गाय के लिये क्यों प्राण खोते हो यह बात मेरे ध्यान में नहीं आती। यह साक्षात् कामधेनु की पुत्री है यदि इसके स्थान में असंख्यगायें दे दूं तो भी महर्षि को कदापि प्रसन्नता नहीं होगी। पंचास्य! आपने जो इसको दबोची है इसमें दैवी शक्ति ही कारण है अन्यथा सामान्यसिंह तो क्या एक बार तो यमराज भी इसका बाल तक बाँका नहीं कर सकते। श्री भगवान की कृपा से मुझे अच्छा अवसर मिल गया है मेरे तो दोनों हाथ लड्डू हैं इधर आप देवकिंकर हैं उधर गोमाता है। यदि आपको यथार्थ ही दया आती है तौ माटी के बरतन से काचे इस शरीर की रक्षा का ध्यान छोड़कर यशोविग्रह की रक्षा कीजिये यथाः—

यश की रक्षा अमर है तन रक्षा स्थिर नाहिं।
ऋषि दधीचि हरिचन्द्र गुण अबलों गाये जाहिं॥

जब इसप्रकार का सत्याग्रह देखा तो सिंह बोला तथास्तु फिर क्या था उसी क्षण राजा ने देह को नाशमान समझ पिण्ड के समान उसके सम्मुख गिराय मन ही मन प्रसन्न हो सोचने लगा कि:—"यह कब मुझे खालेवे कब मुझे खा जाय।"

राजा की ऐसी धर्म वीरता देख जय जय शब्द उचारते इधरतो विद्याधरों ने फूल बरसाये और उधर नंदिनी ने अपनी माया समेट बोली हे वत्स! उठ, ऐसे प्रिय वचन सुन आनन्दा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्नुनिधि में मग्न होता हुआ राजा उठा तो क्या देखता है कि साक्षात् भगवती कामधेनु तो सम्मुख खड़ी है और सिंह की वहां बास तक नहीं है। राजा को फिर भी संकोच वशजान कामधेनु बोली बेटा ! तुम अब अपने मनमें किसी बातकी शंका मत करो। मैंने ही तुम्हारी भक्ति परखने के अभिप्राय से ऐसी माया रची थी। थोड़ासा विचार तो कर, कि ऐसे ब्रह्मर्षि की गाय को भला कौन छेड़ सकता है ? अब मैं तुझ पर संतुष्ट हो गई हूं चाहे सो वर माँग। हे राजन् ! निश्चय तुम्हारा वात्सल्य-भाव प्रशंसा के योग्य है। मेरी माता स्वर्ग की साक्षात् काम-धेनु है उसीकी कुक्षि में जन्मने से मुझे भी शापानुग्रह शक्ति सुलभ है। श्री नंदिनी के ऐसे प्रेमार्द्र वचनों को सुन राजा हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगा कि मातेश्वरी ! यदि आप वास्तव में ही प्रसन्न हो गई हो तो मैं यह वर माँगता हूं कि आपकी पुत्र-बधू राणी मागधी को दिगन्त कीर्त्ति पुत्र की प्राप्ति हो। इस प्रकार राजा के बचन सुन गोमाता बोली पुत्र ! तथास्तु। परन्तु अब तू किसी वृक्ष के पत्तोंका दोना बनाकर मुझे दुह और दूध को पी। तेरे सब काम सिद्ध होंगे। तब हाथ जोड़ राजा ने निवेदन किया कि माई ! बड़ों का कथन है कि "बाँटखाना और बैकुण्ठ को जाना।" मैं आश्रम पर चलकर पहले दुग्ध बछड़े को पिलाऊंगा। फिर अग्निदेव के अर्पण करूंगा। इसके उपरान्त गुरु और गुराणी की भेट करूंगा। फिर जो बचेगा उसमें राणी को पिलाकर पृथ्वीके करके समान षष्ठांशपान करूंगा। जब गुरुजनों पर ऐसा असाधा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रण अनुराग और धैर्य को देखा तो बड़ी प्रसन्नता से बोली कि अच्छा जैसी तुम्हारी रुचि हो वही ठीक है। कहा भी है कि—

रविवंशिन का सहजस्वभावा। विन विभाग कोई वस्तु न खावा।

ऐसे बातों ही बातों में अपराह्णकाल आया जान मुनिधेनु पर्वतीय प्रदेश को छोड़ आश्रम की ओर मुड़ी। राजा भी प्रमुदितमन उसके पीछे २ हो लिया। जब दोनो आश्रम के निकट आये तो मुनि दंपती ने विना ही कहे सब रहस्य जान लिया।

राजा नित्य के नियमानुसार गो सेवा से निवृत्त होकर सब वृत्तान्त महर्षि को कह सुनाया। जिसे सुनकर ऋषि दम्पती ने राजा के भाग्य की भूरि २ प्रशंसा की और बोले हे नाथ! आप इन शुभ समाचारों को तत्काल ही रानी को सुना दीजिये। इस प्रकार गुरुजी की आज्ञा लेकर राजा सुदक्षिणा के निकट पहुंचा। उधर प्रसन्नमुख राणी भी पति के दर्शनार्थ उत्कण्ठित बैठी थी। भूप द्वारा उत्तम संदेश सुनकर अत्यन्त ही प्रसन्न हुई। तत्पश्चात् राजा ने कामधेनु को दुह यथा विधि उसका विभाग कर राणी को पिलाकर आपनें भी पान किया। फिर रीति पूर्वक सायंकाल की पूजा कर प्रार्थना करने लगा—

मया॑ गावो॒ गोप॑तिना सचध्वमु॒यं वो॑ गो॒ष्ठ इ॒ह पो॑षायष्णुः।
राय॒स्पोषे॑ण बहु॒ला भव॑न्तीर्जी॒वा जीव॑न्ती॒रुपे॑वः सदेम॥
अ। अ। ३। १५। १॥

भाषार्थ—(गावः) हे गोमाताओं! (मया) मुझ (गो पतिना) गो पाल से (सचध्वम्) सदा मिलती जुलती रहो (इह)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यहां मेरे स्थान पर (वः[१]) तुम्हारी (अयम्) यह (गोष्ठः) निवास स्थान (पोषयिष्णुः) पोषण करने वाला बना रहे। तुम (रायस्पोषेण) धनकी पुष्टि से (बहुलाः) बहुतसी (भवन्तीः) होती हुई (जीवन्तीः) दीर्घ जीवन पाती हुई बनी रहो (वः) तुम्हें (जीवाः) दुग्धादि पदार्थों से पोषण वाली भूलोकवासी हम प्राणिवर्ग (उपसदेम) पास रहते हुए निरन्तर सेवा किया करें। फिर राणी सुदक्षिणा बोली—

वस्व्यदितिरस्यादित्यासि रुद्रासि चंद्रासि।
बृहस्पतिष्ट्वा सुमने रम्णातु रुद्रो वसुभिराचके। य। ४। २१॥

भाषार्थ—हे गोमाता तू (वस्त्री) वसुदेवता स्वरुपिणी है (अदितिः) देवमाता (असि) है (आदित्या) बारों ही सूर्य स्वरुपा (असि) है (रुद्रा) रुद्र देवता स्वरुपिणी (असि) है (चंद्रा) चंद्र स्वरुपा (असि) है बृहस्पतिः) देवगुरु (त्वा) तुझे (सुम्ने) सुख के लिये (रम्णातु) बाँधे वा खोले (रुद्रः) श्री रुद्रदेव तुझे (वसुभिः) अष्ट वसुओं के साथ (आचके) कान्तियुक्त बनाने में सदैव सहायता करते रहें।

इस प्रकार प्रार्थना कर राजा और राणी आनंदपूर्वक सोये।

प्रभात होते ही राजा और राणी उठ नित्य से निवृत्त हो ऋषिराज के समीप जा पहुंचे। फिर उन्हें साष्टांग प्रणाम कर बोले कृपानिधान! श्री भगवान् की दया और आप सरीखे गुरुजनों

---

१ कर्मकाण्ड की यह प्रणाली है कि वेदमंत्रो में जहां व आता है तब आर्शीवाद का काम देता है और वः के स्थान में नः बोलें तब वही प्रार्थना का काम देने लग जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के अनुग्रह से हमारे सकल अभीष्ट सिद्ध हो लिये। कहिये अब क्या आज्ञा है! राजा के प्रेमयुक्त बचनों को सुन महर्षि बोले राजन्! अब आप शीघ्र ही राजधानी को प्रस्थान कीजिये। न्याय पूर्वक प्रजा का पालन कर अखण्ड यश कमाइये हमारा तो यही उपदेश और आशीर्वाद है।

शान्ताद्यौः शान्तापृथिवी शान्तमिद मुर्व१न्तरिंक्षम्।
शान्ता उदन्वतीरापः शान्तावः सन्त्वौषधीः ॥
अ। १६। का। अ। ५। सू० ६॥

शान्तानि पूर्वरूपाणि शान्तं वो अस्तु कृताकृतम्।
शान्तं भूतं च भव्यंच सर्वमेव शमस्तु वः ॥ २ ॥

भाषार्थ—आकाश तुम्हारे लिये शान्तिकारक हो। पृथिवी तुम्हें शान्ति दे। यह विस्तीर्ण अंतरिक्ष तुम्हें सुख देवे। समुद्र शान्तिकारक हों। जल सुखप्रद हों। औषधियां तुम्हारे लिये शान्तिप्रद होंवे। आपके मनोंरथों के पूर्व रूप शान्ति के दाता हों। आपने जो काम किये हों उनमें यदि त्रुटि रही हों तो वह भी फल प्रद हो। अथवा जिस काम को आपने नहीं छेड़ा हैं उसका फल भी सब प्रकार अच्छा हो। जो कार्य हो चुका अथवा जो अब होगा सबही ठौर सर्वदा आपको सुखशान्ति का सुख मिलता रहे।

इस प्रकार राजा और राणी ने ऋषि दम्पती से आर्शीबाद और आज्ञा पाकर श्री यज्ञनारायण भगवान् की प्रतिमा स्वरूप अग्निदेव को दण्डवत् कर वत्स सहित गोमाता की प्रदक्षिणा की। तत्पश्चात् समग्र ऋषिमण्डली को शिष्टाचार द्वारा प्रसन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर विदा हुये। लौटते समय जो जो ऋषि मुनि ब्रह्मचारी योगी महात्मा आदि मिलते उन्हें सादर सिर नवाते और आशीर्बाद लेते रहते थे। ऐसे दिव्य रथ में विराजमान राजा और राणी मार्गवर्ती नदी नाले ग्राम वन और उपवनों की शोभा निहारते २ श्री अयोध्यापुरी के पास आ पहुंचे। व्रत और उपवास से कृश शरीर राजा और राणी के दर्शन करने को नागरिक नरनारि उलट पड़े। उस समय राजदर्शन के लिये प्रजा को ऐसा चाव था जैसा कि कृष्णपक्ष के अन्त में नवीन चन्द्रमा के दर्शन के लिये उत्साह होता है। राजा के आगमन के शुभ समाचार सुन घर २ मंगलाचार होने लगे। प्रत्येक द्वार पर बाँदनमाला बाँधी गई ध्वजापताका तोरण तथा कलशों के स्थम्वन से सारी नगरी मंगलमयी हो गई थी। असंख्य सौभाग्यवती स्त्रियां मस्तक पर पूर्ण कलशों को धर कर राज दम्पती के सम्मुख उपस्थित हुईं। नगर की कन्याओं ने अपने २ महल मालिये और अटारियों पर से राजा और राणी पर पुष्प और लाजाओं की वृष्टि की। इस प्रकार नाना प्रकार के आनन्द मंगलों का अनुभव करते हुए राजा दिलीप राजद्वार में प्रविष्ट हुए। समग्र मंत्रिमण्डल ने अत्यंत आदर सत्कार के साथ उनकी पधरावणी की और सम्पूर्ण राज्य की सुख शांति की सूचना देकर सब कार्य भार राजाके सम्मुख उपस्थित किया। इन्द्रादि लोकपालों के दिव्य तेज को धारण करने वाले राजा ने सर्वाधिकार हाथ में ले लिया। इस प्रकार निर्विघ्न राज काज चलने लगा। कुछ समय के उपरांत महाराणी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गर्भवती हुई। इन शुभ समाचारों से समग्र राज्य में महोत्सव मनाये जाने लगे। गर्भ के दिनों में राणी ऐसी सुशोभित थीं जैसे चन्द्र किरणों से आकाश। श्री महादेवजी के तेज से जैसे गंगाजी वैसे सूर्यवंश की वृद्धि करने वाली राणी शोभायमान होने लगी। पूरे दिनों पुत्र रत्न का जन्म हुआ। राजा दिलीप ने इस उत्तम अवसर पर असंख्य धन गो ब्राह्मण की सेवा में लुटाया। उस समय जो कोई आया उसी ने मुँह माँगा पदार्थ पाया। जब नाम करण संस्कार का समय आया तो विद्वानों ने रघु नाम रक्खा। महाराज रघु भी बड़े ही दानवीर हुए। इन्होंने सम्पूर्ण विभूति दान करके विश्वजित्यज्ञ किया इन्हीं जैसे धर्मात्माओं के वंश में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री भगवान् रामचन्द्रजी का प्राकट्य हुआ। जिनकी विमल कीर्त्ति को जानकर आदि कवि महर्षिवाल्मीकि ने भवसागर को पार कराने वाली रामयण की रचना की। यह रामायण भारतवासियों के लिये स्वर्ग लोक की निसरणी है। श्रीमती गंगाजी की बहती हुई धारा में से जैसे कोई पंचपात्र भर लेता है वैसे ही गोमाता की महिमा रूपिणी सरिताका यह चरित्र बिन्दुमात्र हैं।

श्रीगोमाता का चरित पढ़ै सुनै चितलाय।
उसको धन औ संपदा देते प्रभु हरषाय॥
जहाँ गऊ तहँ धर्म है, जहाँ गऊ तहँ अर्थ।
जहाँ गऊ तहँ काम औ गो जहँ मोक्ष समर्थ॥

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओ३म्नमः शिवाय

अथ नृगराजर्षिकाचरित्र

द्वितीय प्रकरण।

यो देवानां प्रभवश्चोद्भवश्च विश्वाधिपो रुद्रो महर्षिः।
हिरण्यगर्भं जनयामास पूर्वं सनो बुद्ध्या शुभया संयुनक्तु ॥श्वे॥उ०॥

श्री द्वापर के अन्त में राजा नृग परम गो भक्त हुआ है। यह सूर्य वंश का ज्वलन्तरत्न था। संसार में यह गो दान के लिये अद्वितीय दानी है। इसको प्राकृतिक दृश्य देखने का बड़ा चाव था। एक समय यह तीर्थाटन करता २ कलाश पर्वत पर जा पहुंचा। वहां पर देवाधिदेव साक्षात् महादेव पार्वतीजी के दर्शन कर कृतार्थ हो आ रहा था कि मार्ग में इसको पिप्पलाद महर्षि मिले। ये महात्मा श्री दधीचि मुनि के पुत्र और वैशेषिक शास्त्र के कर्त्ता थे। इनका दूसरा नाम कणाद भी था। राजा ने इन्हें देख साष्टांग प्रणाम कर ज्ञानोपदेश सुनने की अत्यन्त उत्कण्ठा प्रगट की। राजा की प्रार्थना सुन महर्षि ने उत्तर दिया कि राजन्! आपका और मेरा सत्संग तो फिर कभी हो ही जायगा पर यहां पास ही सिद्धदेश (तिब्बत) हैं उसमें बड़े २ महात्मा उद्दालक मुनि जैसे विराजमान हैं उनके पास जा कर कुछ दिन निवास करो और ज्ञानामृत को पीवो। राजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बोला जो आज्ञा। ऐसा कह उसी आश्रम की ओर विदा हुआ! मार्ग में अनेक मुनियों के स्थान थे। उन्होंने तुरन्त ही राजा को उद्दालकजी महाराज के पास पहुंचा दिया। महात्मा के दर्शन कर राजा ने चरणों में दण्डवत् कर जय का आशीर्बाद प्राप्त किया। महर्षि ने परिचय पाकर राजा का बड़ा सत्कार किया। मुनि महाराज अत्यन्त वृद्ध थे। इनके बाल सब श्वेत हो गये थे। भँवारे और पलकों के बाल बहुत बढ़ जाने से नेत्र ढक गये थे। दाँत तिबारा आ चुके थे। सब शरीर के ऊपर जीर्णावस्था के कारण तुषपड़ गये थे। उनका शरीर केवल अस्थि पंजरसा हो गया था। यथोचित ब्रह्मचर्य और निरन्तर ध्यान से इनकी चेष्टा जाज्वल्यमान थी। ये करुणारस की मूर्ति, क्षमा और शांति के आधार स्तंभ थे। क्रोध भुजंग के विषवैद्य सुपात्र तथा सत्पथ दर्शक थे। वेदादि शास्त्रों के वक्ता और इतिहास विद्या के तो असाधारण ज्ञाता थे।

इनके स्वभाव में हिंसा, राग, द्वेष, मोह, मद और ईर्षा का लेश भी नहीं था। हिमालय से दक्षिण भाग का प्रदेश भारत वर्ष ही क्या किन्तु उत्तरीय प्रदेश चीन जापान आदि देशवासी भी कैलाशयात्रा निमित्त इधर आते और इन महर्षिजी का दर्शन कर सत्संग का लाभ उठाते। एक दिन मुनिवर शान्ति से बैठे थे उस समय राजा ने प्रश्न किया कि कृपानिधान! दया करके मुझे भी देश कालानुसार कोई कल्याण का मार्ग बताइये? राजा के ऐसे वचनसुन मुनिराज बड़े ही प्रसन्न हुए और बोले नरनाथ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आप बड़, भागी हो। भगवान् आपकी सुमति सदैव ऐसी ही बनाई रक्खे। राजा का शरीर बड़े पुण्यों से मिलता है। इसे पाकर भी जो प्रजा पालनादि द्वारा धर्मोपार्जन नहीं करता उसे चारों ही खूंट में कहीं ठौर नहीं है। श्री वेदाज्ञ के अनुसार ४ वर्ण ओर ४ आश्रम हैं जिनमें करने योग्य अनेक कर्म हैं तिनमें तीन प्रधान माने गये हैं।

यज्ञोदानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्। भ. गी।

अर्थात् यज्ञ, दान, और तप ये तीन कर्म बुद्धिमानों की दृष्टि में पवित्र माने गये हैं और येही पवित्रता के देने वाले हैं। आप नरेश्वर हैं अतः तीनों ही का यथावत् पालन कीजिये।

नृग—महाराज! जो आज्ञा। पर तीनों में श्रेष्ठ कौनसा है?

उद्दा—राजन्! सुनिये।

तपः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते।
द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं कलौयुगे॥

अर्थात्—सत्ययुग में तपश्चर्या, त्रेता में ज्ञान, द्वापर में यज्ञ और कलियुग में दान ही प्रधान हैं।

फिर सुनिये।

त्रयाः प्राजापत्याः प्रजापतौ पितरि ब्रह्मचर्यं मूषुर्देवा मनुष्या असुरा उषित्वा ब्रह्मचर्यं, देवाऊचुर्ब्रवीतुनो भवानिति तेभ्यो है तदक्षरमुवाच "द" इति इतिव्यज्ञासिइष्टा इतिव्यज्ञासिष्म होचुर्दाम्यते तिन आत्थेत्योमिति होवाच व्यज्ञासिष्टेति। वृ ह० उ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाषार्थ—प्रजापति अर्थात् जगत्पिता ब्रह्मदेव से देवता मनुष्य और राक्षस ये तीनों ही प्रकट हुए हैं। इन तीनों ही ने प्रजापति की आज्ञा में रहकर ब्रह्मचर्य व्रत पालन किया। एक समय सब से प्रथम धर्मोपदेश सुनने की इच्छा से देवता लोग ब्रह्माजी के पास जाकर बोले कि कृपासागर! आप हमें शिक्षा दीजिये। इनके वाक्यों को सुनकर ब्रह्माजी ने "द्" इस प्रकार एकाक्षरी मंत्र का उपदेश देकर बोले कि समझ गये? तब देवताओं ने सोच समझ कहा कि महाराज! आपने हमें इन्द्रियों के दमन को कहा है। इस पर ब्रह्मदेव बोले कि ठीक है आप लोग समझ गये हो।

अथ हैनं मनुष्या ऊचुर्ब्रवीतुनो भवानिति तेभ्यो है तदेवाक्षर मुवाच "द्" इति व्यज्ञासिष्ठा ३ इति व्यज्ञासिष्मेति होचुर्दत्तेति न आत्थेत्योमिति होवाच व्यज्ञासिष्ट इति।

भाषार्थ—फिर मनुष्यों का वर्ग भी इनके पास जाकर बोला कि हे ब्रह्मदेव! हमें कुछ शिक्षा दीजिये। इस पर महाराज ने श्रीमुख से "द" ऐसी ही आज्ञा दी और बोले कि समझे? तब मनन करके मनुष्य बोले हां महाराज! समझ गये। आपने हमें यह उपदेश दिया है कि दिया करो! इस पर ब्रह्माजी बोले अच्छा तुम समझ गये हो।

अथहैन मसुराऊचूर्ब्रवीतुनो भवानिति। तेभ्यो हैतदेवाक्षर मुवाच "द" इति। व्यज्ञासिष्ठा ३ इति। व्यज्ञासिष्मेति होचुः "दयध्वमिति" न आत्थे त्योमिति होवा च व्यज्ञासिष्ठतितदेत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवैषा दैवी वागनुवदतिस्तनयित्नु ददद दाम्यत दत्त दयध्वमिति। तदेतत् त्रयं शिक्षेत दमं दानं दयामिति।

भाषार्थः—इसके उपरान्त असुरों ने जाकर पुकारा कि महाराज! हमें भी आप कुछ बताइये? तब उन्हें भी वही एकाक्षरी मंत्र "द" बताया और कहाकि समझे? तब वे सोच विचार बोले हाँ महाराज! हम जान गये। आपने हमें दया का उपदेश दिया है। ब्रह्माजी ने कहा हां बस यही तुम्हारा कर्त्तव्य है। इतने ही में बिजुली किड़की और ददद ऐसी आवाज़ हुई। इस पर ब्रह्माजी ने कहा कि देखो इस मेरे कथन की साक्षी बिजली भी देती है सो तुम्हारे तीनों ही दलों को अपना २ कर्तव्य समझाकर प्रथम वृन्द को दमन द्वितीय को दान और तृतीय को दया का विचार रखना चाहिये। इसलिये यही तीन महावाक्य हैं कि दम दान और दया को परम धर्म समझ कर इसी के अनुसार कार्य किया करो। देवता पूर्ण काम होते हैं अतः उनके लिये दम ही उत्तमोपाय हैं। मनुष्य कामनाओं के आधीन होते हैं अतः उनके लिये दान श्रेष्ठ है। असुर लोग बहुधा हिंसक हुआ करते हैं अतः उनका कल्याण दया ही कर सकती है।

नृग—महाराज! बहुत अच्छा उपदेश दिया। मनुष्य के लिये दान ही श्रेष्ठ उपाय है पर दानों में कौनसा दान उचित है।

उद्दा—गो दान सर्वोपरि है यथाः—

गोभ्यो यज्ञाः प्रवर्त्तन्ते गोभ्यो देवाः समुत्थिताः।
गोभ्यो वेदाः समुद्गीर्णाः सषडंग पदक्रमाः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् गायों से यज्ञ प्रचलित होते है। गायों से ही देवता प्रकट होते हैं। गायों ही से षट्शास्त्र षडंग और घन क्रम जटा आदि सहित वेद राशि भी गायों ही से प्रकठ हुई हैं। आप एक समृद्धशाली राजा हैं अतः गोमेध यज्ञ करना चाहिये।

नृग—इसकी क्या रीति है ?

उद्दालक—यह दो प्रकार का होता है। एक ज्ञान गोमेध दूसरा दान गोमेध।

नृग—कृपया दोनों ही का संक्षेप से विधान बताइये ?

उद्दा—राजन्! यह गो शब्द अनेकार्थ द्योतक हैं। जहां विद्वन्मण्डली द्वारा शास्त्रार्थ होकर प्रकृति पुरुष वा जीव ब्रह्म आदि का विवेचन होता है वह ज्ञान गोमेध है। पुरातन समय में जैसे राजा जनक ने किया था जिसकी चर्चा वृहदारण्यकोपनिषद् में की गई है यथाः—

जनको वैदेहो बहु दक्षिणेन यज्ञेनेजे ‖। तत्र कुरु पांचालानां ब्राह्मणा अभि समेता बभूवुः। तस्य जनकस्य वैदेहस्य विजिज्ञासा बभूव। कः स्विदेषां ब्राह्मणानामनूचानतम इति। सह गवाँ सहस्रमवरुरोध। दश २ पादा एकैकस्याः शृंगयोराबद्धाबभूवुः। अर्थात् विदेह वंशी राजा जनक ने एक वृहद्यज्ञ किया था जिसमें ब्राह्मणों को बहुतसी दक्षिणा दी गई। उस यज्ञ में हरियाणा कुरुक्षेत्र प्रान्त के तथा पंजाब के बहुत से ब्राह्मण एकत्रित हुए थे। उन्हें देखकर राजा जनक की यह धारणा हुई थी कि इस ब्राह्मण वृन्द में कौनसा ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं जो सांगो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पांग वेदो का ज्ञान रखता हो। वहां उसने सहस्त्रगायों का झुंड एकत्रित करके उनको एक बड़े बाड़े में रखदीं। फिर उन सबों के सीगों में दस दस सोने के खुर बनवाकर टँकवा दिये।

तान्होवाच ब्राह्मणा भगवन्तो यो वो ब्रह्मिष्ठः स एतागा उदजता मिति।

फिर उनको बोला कि हे महाशयों ? आप सबों में जो सर्वोपरि ब्रह्मवेत्ता हो वही इन सब गायों को ले जावे। उस समय उपरोक्त गुण संपन्न महर्षि याज्ञवल्क्य थे। उन्होंने राजा के समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया और गायें लेलीं। इस प्रकार ज्ञान चर्चा जहां हो वह ज्ञान गोमेध कहलाता है।

दूसरा गोमेध दान द्वारा किया जाता है जिसकी रीति यह है कि धर्मानिष्ठ और समृद्धि शाली यजमान पहले तो एक वृहद्यज्ञ करे। फिर जब यज्ञ समाप्ति का अवसर आय तब सुपात्रों को दक्षिणा स्वरूप में सहस्त्रों ही गायों का दान करे। ऐसा महादान गोमेध कहलाता है। उसीके शाखा प्रशाखा स्वरूप में देव कार्य और पितृ कार्य में जो दान किया जाता है जो परम मंगलीक और पुण्य प्रद गिना गया है यथा:—

जलदानाद्दशगुणं दानमन्नस्य कथ्यते।
तस्मादौषधिदानं च विद्यादानं ततोऽधिकम् ॥
ततः परं भूमिदानं तस्माद गोदानमुत्तमम्।
यतोऽनेनैवदानेनधर्म वृक्षस्यसिंचनम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् जलदान से दशगुणा फल अन्नदान का है। उससे औषधिदान और उससे अधिक विद्यादान है। इससे बढ़कर भूमि दान और उससे अधिक गोदान है क्योंकि इसी दान से धर्मवृक्ष का सिंचन होता है।

नृग—महाराज ! यह दान किसको देना चाहिये ?

उद्दा—दान के मुख्याधिकारी ब्राह्मण हैं उन्हें देना चाहिये। और आवश्यकता पड़ने पर अन्य भी ले सकते हैं।

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामकल्पयत् ॥ मनु० ॥

अर्थात् वेदादि शास्त्रों का पढ़ाना, पढ़ना, यज्ञ करना, कराना दान लेना और देना ये ६ कर्म ब्राह्मणों के बताये गये हैं।

नृग—ब्राह्मण के लक्षण बताइये ?

उद्दा—जात्याकुलेन वृत्तेन स्वाध्यायेन श्रुतेन च।
एभिर्युक्तोहि यस्तिष्ठन्नित्यं स ब्राह्मणः स्मृतः ॥ अ० पु ।
जीवितं यस्य धर्मार्थं धर्मोरत्यर्थ मेव च।
अहोरात्राश्च पुण्यार्थं तं देवा ब्राह्मणाविदुः ॥

अर्थात् जातिकुल सदाचार शास्त्रों का पठन और श्रवण। इन कर्मों से जो नित्य सम्पन्न रहता है वह ब्राह्मण कहलाता है।

जिसका जीवन तो धर्मार्थ है विवाह संतानोत्पत्ति के निमित्त है। रात और दिन पुण्य के लिये होते हैं उसको देवता लोग ब्राह्मण कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नृग—महानुभाव ! कृपया गो माहात्म्य सुनाइये ?

उद्दा–चत्वारिश्रृंगा त्रयों अस्य पादा द्वेशीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्यां २ आविवेश॥
य। अ। १७। ६१॥

भा०—(अस्य) इस धर्मरूपी बैल के (चत्वारि) ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये आश्रम किंवा ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण (श्रृंगाः) सींगस्थानापन्न हैं (त्रयः) ऋक् यजुः और साम ये तीन वेद (पादाः) पग स्वरूप हैं (द्वे) उपदेशक और उनको दान मानादि से पालने वाले ऐसे दो प्रकार के मनुष्य (शीर्षे) मस्तक तुल्य हैं। तथा (अस्य) इस धर्म के (सप्त) यज्ञ दान जप तप तीर्थसेवन, पावित्र्य और विश्वास ये सात हाथ हैं (त्रिधा) कर्म उपासना और ज्ञान ऐसे शास्त्रीय विषयों से बँधा हुआ ऐसा यह (वृषभः) कामनाओं को पूर्ण करने वाला वृषभ (रोरवीति) पुनः पुनः टाँडता रहता है (महोदेवः) ब्रह्मा से लेकर स्तम्ब पर्यंत चराचर का परमोपकारक यह धर्म देव (मर्त्यान् २) मनुष्यों के मनरूपी मन्दिर में (आविवेश) विराजमान हो रहा है। श्रीयज्ञ पुरुष की उपासना का भी उपदेश इसी मंत्र से मिलता है।

नृग—गाय के शरीर में किन २ देवताओं का निवास हैं।

उद्दा——श्रृंगमूले गवां नित्यं ब्रह्म विष्णू समाश्रितौ।
श्रृंगाग्रे सर्व तीर्थानि स्थावराणि चराणिच॥६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिरो मध्ये महादेवः सर्व भूतमयः स्थितः।
ललाटाग्रे स्थिता देवी नासा वंशेच षरामुखः॥
कम्बलाश्वतरौ नागौ नासापुट समाश्रितौ।
कर्णयो रश्विनौ देवौ चक्षुषोः शशिभास्करौ॥
दन्तेषु वायवः सर्वे जिह्वायां वरुणः स्थितः।
सरस्वती च हुंकारे यम यक्षौच गराडयोः॥
सन्ध्याद्वयं तथोष्ठाभ्यां ग्रीवामिन्द्रः समाश्रितः।
रक्षांसि कक्षदेशेतु साध्याश्चोरसि संस्थिताः॥
चतुष्पात्सकलो धर्मः स्वयं जंघासु संस्थितः।
खुरमध्येतु गन्धर्वाः खुराग्रेषु चपन्नगाः॥
खुराणां पश्चिमाग्रेषु गणा ह्यप्सरसां स्थिताः।
रुद्राश्चैकादशपृष्ठे वसवः सर्व सन्धिषु॥
श्रोणी तटस्थयाः पितरः सोमो लांगूलमाश्रितः।
आदित्यरश्मयोवाले पिराडीभूता व्यवस्थिताः॥
साक्षाद् गंगाच गोमूत्रे गोमये यमुना स्थिता।
क्षीरे सरस्वती देवी नर्मदा दधि संस्थिता॥
हुताशनः स्वयं सर्पिर्ब्राह्मणानां गुरुः परः।
अष्टाविंशति देवानां कोट्यो रोमसु संस्थिताः॥
उदरे पृथिवीज्ञेया सशैलवनकानना।
चत्वारः सागराः पूर्णा गवांगेषुपयोधराः॥

अर्थात् गायों के सींगों की जड़ों में ब्रह्मा और विष्णु विराजमान हैं। सींगों के अग्र भाग में स्थावर तथा जंगम सभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकार के तीर्थों का निवासस्थान है। मस्तक में समस्त प्राणियों में रहने वाला शिवजी महाराज हैं। ललाट में श्री देवीजी और नलिका में श्रीकार्त्तिकेय हैं। गले के कम्बल में गंधर्व विशेष हैं। नासा पुटों में नाग देवता हैं। कानों में अश्विनीकुमार तथा नेत्रों में सूर्य और चंद्रमा हैं। दाँतों में वायु है और जीभ में वरुण देव हैं। हुंकार में सरस्वती का गालों में यमराज का और यक्षों का निवास है। होठों में दोनों सन्ध्या और ग्रीवा में इन्द्र देवता है। काछ में राक्षस तथा उरस्थल में साध्यों का निवास है। तप शौच दया और धर्म ऐसे ४ पाँव वाला धर्म देव स्वयं जंघाओं में निवास करता है। खुरों में गंधर्व और खुराग्र में सर्पों का निवास है। खुरों के पिछले भागों में अप्सरा रहती हैं। पीठ में ११ ही रुद्र वास करते हैं। सभी सन्धिस्थलों में वसुदेवता विराजते हैं। कमर में पितर और पूंछ में सोम का निवास है। केशों में सूर्य की किरणों रहती हैं। गोमूत्र में गंगाजी और गोबर में यमुना का वास स्थान हैं। सरस्वती दुग्ध में और नर्मदा दही में वास करती है। घृत में ब्राह्मणों के गुरु साक्षात् अग्निदेव विराजते हैं। रोमावली में २८ प्रकार के देवताओं की जाति विराजमान है। इसके पेट में वन और पर्वतों सहित यह समस्त पृथ्वी विद्यमान है। चारों स्तनों में चार ही समुद्र वास करते हैं ऐसी अपरंपार महिमा इस गाय माता की है।

नृग—आपने गो माहात्म्य सुना कर बड़ी कृपा की। वास्तव में इसके दान और मान के बराबर कोई धर्म नहीं है। मैं अब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजधानी में पहुंचते ही अवश्य इस पवित्र कार्य की भरपूर सहायता करूंगा। ऐसे कह मुनिश्वर को प्रणाम कर उनसे आज्ञा ले विदा हुआ। राजा के आगमन का समाचार सुन नगरवासियों ने बड़ी धूमधाम के साथ इनका स्वागत किया। घर २ में बँदन वालें लटकाई गईं। तोरण सजाये गये। द्वार द्वार पर पूर्ण कलश स्थापित हुए। ठौर २ ध्वजा और पताकायें फर्राने लगी। श्री भगवान् को मनाते हुए प्रत्येक देव द्वारों पर प्रार्थना की गई। ब्राह्मणों ने आनंद पूर्वक वेदों का पाठ तथा रुद्राभिषेक किया। महल और मालियों पर चढ़ी हुई स्त्रियों ने राजा पर पुष्प वृष्टि की। नागरिक कन्याओं ने अत्यंत मांगलिक शकुन जनाने के लिये चाँवलों की खीलें बरसाईं। उस समय राजा की सवारी का दृश्य बड़ा ही अपूर्व था। आगे २ वाजे बजते थे। उनके पीछे पैदल की भीड़ थी। उसके पीछे घुड़ सवार बीच में हाथी के हौदे पर राजा नृग विराजमान थे। चिरकाल से आये हुए राजा को जान ठठ्ठ के ठठ्ठ नरनारी उनके दर्शनों को एकत्रित हुए। कोई स्त्री तो ऐसी विभ्रमासक्त हुई कि नाक में पहनने की नथें को कुण्डल समझ कान में पहनने लग गई। किसी ने एक चरण में मेंदी लगाई और दूसरे के लगाने का समय आया तो त्वरा करके अधबीच में ही भागी। गीले पावों से जो चिन्ह छतों पर मँडे थे वे चिरकाल तक उत्सव का स्मरण दिलाते रहे। नगर के जाली झरोखे मृगनयनियों के नेत्रों से मानों कमलों के भण्डार ही हो रहे थे! इस प्रकार आनन्दानुभव करते २ चले जाते थे कि झट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजप्रासाद का द्वार आपहुंचा। सौभाग्यवती स्त्रियों ने मंगल गीत गाय २ स्वागत किया। जब रणवास में पहुंचे तो महाराणी ने थाल भरे मोतियों से वारणे लेकर बरसा दिये। महलों में घृत के दीपक जलाये। समग्र नगर में दीपावली मनाई उस समय का महोत्सव सर्वथा अवर्णनीय है।

प्रभात होते ही राज द्वार में एक अनुपम उत्सव मनाने की सामग्री एकत्रित हुई। दूर २ से आये हुए ऋषि मुनि राजा महाराजा सेठ साहूकार कवि, पण्डित, चारण, भाट, गायक, मल्ल आदि जितने भी महमान आये सबका यथायोग्य सत्कार हुआ। प्रत्येक महमान राजा से वातचीत और आदर सत्कार पाकर बहुत ही प्रशंसा करने लगा। पुरोहित ने स्वस्तिवाचन का पाठ और अभिषेक किया। प्रजाजनों ने जो भेंट की उनको सादर ग्रहण की और उनकी योग्यतानुकूल पारितोषिक आदि देकर राजा ने भी सबका परितोष किया। किसी को रत्न किसी को पदवी और किसी के वेतन की वृद्धि की आज्ञा हुई।

सब से प्रथम राजा ने दश सहस्र गायों का दान दिया। फिर समस्त भारतवर्ष भर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि महर्षि उद्दालकजी महाराज के उपदेश से मैंने यह प्रण किया है कि देश भर में कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं मिले कि जिसके पास गाय नहीं हो। मेरे जो सामन्त हैं उनको यह आज्ञा है कि इस वर्ष का कर यहां नहीं भेंजे किन्तु उनकी गायें लेलेकर ब्राह्मणों को दान करदें। इसके अतिरिक्त जो दान के अधिकारी हैं अथवा जिनका निर्वाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं हो सकता है उन्हें भी गायें ही दी जावें मैं चाहता हूं कि इस गोमेध यज्ञ में कोई नंगा भूखा नहीं रहने पावे। एक ग्राम के ठाकुर से लेकर बड़े २ सामन्तों तक ने राजा की आज्ञा का पालन किया और गोदानमहोत्सवसानंद समाप्त हुवा।

राजा ने ये दश आज्ञायें प्रचलित की थीं।

(१)

न गोदानसमं दानं नगोदानंसमं तपः।
न गोदानसमं तीर्थं नगोदानसमं जपः॥
दान नहीं गो दानसम, तप नहिं सम गोदान।
तीर्थ नहीं गोदानसम, जप नहिं सम गोदान॥

(२)

गौर्या प्रतिग्रहेनीता तस्यादानं तु युज्यते।
क्रेता तथा च विक्रेता तुल्य पापस्य भागिनौ॥
जो गैया ली दान में उसेभि दीजे दान।
बेचे अथवा मोल ले दोनों पाप समान॥

(३)

गोरक्षा सर्व सुखदा गोहिंसाऽनेक दुःखदा।
इति संचिन्त्य गोसेवा कार्या सर्वार्थ सिद्धये॥
गोरक्षा सुखदेत सब, गोहिंसा दुःखदान।
अस विचार गोसेइये सकल सुमंगल पान॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४)

विप्रो वा क्षत्रियोवास्याद् वैश्यः शूद्रोऽथवा भवेत् ।
सर्वोऽपिधर्म रक्षार्थं गोदानं प्राप्तुमर्हति ॥
ब्राह्मण हो वा क्षत्रि हो वैश्य शूद्र कोइ होय ।
सभी धर्म के त्राणहित गाय ले सके सोय ॥

(५)

गो हितार्थ प्रतिग्रामं त्यजेद गोचर भूमिकाम् ।
यत्र ग्राम गवां यूथो चरित्वा सुखमाप्नुयात् ॥
सब गावों में गायहित तजिये गोचर बीड़ ।
जहँ सब गायें घास चर पावैं नहिं कुछ पीड़ ॥
न गोषु पक्षपाओो मे न द्वेषो महिषीषु च ।
गुणाधिक्यं हि सत्कारं दापयत्येव मेमतिः ॥
गायों में नहिं पक्ष हैं भैंसों में नहिं द्वेष ।
मेरो मन तो यह कहै गुण में प्रीति विशेष ॥

(८)

वृषोत्सर्गो जनैः कार्यो गो वंशस्यभिवृद्धये ।
तस्य संरक्षणं पुण्यं गोदानेनसमं स्मृतम् ॥
बैल आँकनो चाहिये, गो को वंश बढ़ान ।
उसकी रक्षा भी अवशि, है गोदान समान ॥

(९)

बलीवर्दाः कार्यरता स्तेभ्यः श्रमनिवारकः ।
अवकाशः प्रदातव्यः सप्ता हे दिवसस्य च ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कार्य लग्न जे वृषभ हैं तिन्ह की हरण थकान।
सात दिवस में एक दिन छुट्टी दो सुखपान॥

(१०)

अति भारेण कुत्रापि पीड्यानैव वृषादयः।
रुग्णावस्थासु पशवः पालनीयाः प्रयत्नतः॥
वहुत भार से नहिं कभी पशु को पीड़ा देउ।
रोग दशा में उन्हों की सब विधि सुधबुध लेउ॥

(११)

आषाढ्या माश्वयुज्यां च पौष्यां माघ्या च सर्वदा।
न गृह्णीयाद् गवां क्षीरं सर्वं वत्साय निक्षिपेत्॥
आषाढी पुन्यों तथा शरद पूर्णिमा आय।
पौष मास पुन्यों दिवस वत्सहिं धाप चुँखाय॥

(१२)

पश्चपकारं संचिन्त्य तेषुयो दयते नरः।
तस्मै पशुपति स्तुष्टो ददाति सुख सम्पदः॥
पशुओं का उपकार लखि करैजु उनकी टैल।
पशुपति उनमें तुष्ट हो देत सम्पदा म्हैल॥

(१३)

द्वौमासौ पाययेद्वत्स त्रितीये द्विस्तनं दुहेत्।
चतुर्थे त्रिस्तनं चैव यथा न्यायं यथा बलम्॥
बछड़े को दो मासतक दूध धपा उ पिवाय।
मास तीसरे दोय थन चौथे एक चुँखाय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा की आज्ञा शिरोधार्य कर लाखों ही गायों का दान दिया गया। राजा प्रति दिन उठते ही १० गोदान किया करता था। उसके समय में गायों की ऐसी वृद्धि हुई कि देश भर में दूध दही की नदियां बहने लग गई थीं। उसके राज्यकाल में कोई नंगा भूखा नहीं दिखाई देता था। स्त्री पुरुष बाल बच्चे सभी हृष्ट पुष्ट और नीरोग रहते थे। सबको पर्याप्त दूध दही और घृत मिलने से मांसहारियों की संख्या उँगलियों पर हो गई थी। खेतीबाड़ी ऐसी अच्छी होती थी कि असंख्य मण अन्न केवल कीड़ी मकोड़ी तथा चिडी कमेडी आदि के लिये ही खेतों में छोड़ दिया जाता था। राजा और प्रजा सब आनंदित रहते थे। घर घर दोनों समय अग्निहोत्र होता रहता था। यदि कोई गाय, बैल वा बछड़े के वृथा लकड़ी आदि की देता तो तुरंत दण्ड पाता था। गृहस्थ लोग सदा गाँव और नगरों में गायों को अपवित्र वस्तु नहीं खाने देते थे। जहां तक हो उच्छिष्ट भी नहीं खाने देते थे। उधर ग्वाल लोग भी अमेध्य वस्तुओं से उन्हें बचाते थे जिससे पाँचों ही गव्य पदार्थ निरन्तर शुद्ध मिलते थे। कोई भी गाडी आदि में अधिक बोझ नहीं लाद सकता था। गाडी में ६ मनुष्य और २ बालकों के अतिरिक्त अधिक मनुष्य: नहीं बैठने पाते थे। दुर्बल और रोगी पशुओं के लिये राजा और प्रजा की ओर से गोशाला तथा चिकित्सालय नियत थे। अंकित बैल को कोई भी जोत नहीं सकता था। प्रतिदिन गृहस्थ लोग नगर में रोटी और गाँव में घास की पूली गायों के हितार्थ निकालते रहते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थे (लूली लँगडी और निराश्रित गायों की सम्हाल बहुत रहा करती थी । जिस गाय के स्तनों पर जवा चींचडी वा बुग होता तो उसके धणी तथा गवाल पर धर्माध्यक्ष की ओर से दण्ड नियत हुआ करता था ७वें दिन सब जवा चींचड़ी तोड़ते थे ।

गृहागत अतिथि का दूध दही आदि से भली भाँति सत्कार क़िया जाता था

प्रत्येक ग्राम में गायों के हितार्थ घास का बीड़ छोड़ा जाता था । देश भर में गायें आनंद से रहती थीं । प्रजा के लोग राजा को देव तुल्य मान कर उसका आदर करते थे । राजा षष्ठांश का कर लिया करता था प्रजा राजा के उपकार से संतुष्ट होकर सदैव उसकी भलाई के लिये ही तनमन धन न्योछावर करने को उद्यत रहती थी । बकरों से भी छोटी २ बालद उठवाते थे जिनसे बैलों को सहारा मिलता था और उनकी हिंसा भी बचती थी । बाल्यावस्था में पशुओं को नियमानुसार स्तन्य पान करवाया जाता था । जिससे पशु बलवान् और कार्यक्षम हुआ करते थे । पशुओं की हड्डियां जंगलों में पड़ी रहती थीं समय पाकर गलते गलते उनका खाद बनकर आप ही खेतों में काम आता था । पशुओं की वृद्धि से जंगलों में आरणे छाणे बहुत होते थे । उनके खाद से भी अन्न की वृद्धि हुआ करती थी । यात्री लोगों के लाभ के लिये मार्ग के आसपास फल वाले वृक्ष लगाये जाते थे । राजाज्ञा से किसी को परमार्थ निमित्त और किसी को अल्प ही मूल्य पर मिलता था । कहां तक लिखा जाय कि गोदानी राजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के पुराय प्रताप से समग्र देश भर में रोगशोक का नाम भी कोई नहीं जानता था। स्वयं देने दिलाने और अनुमोदन से असंख्य गोदान का फल राजा ने उपार्जित कर लिया था। गोवंश के साथ २ राजा का भी वंश बढ़ा। बड़े २ और दूरवर्त्ती देश राजा के अनायासही वश में हो गये। श्री प्रियव्रत मान्धातादि चक्रवर्ती राजाओं के साथ ही राजा नृग गोदानी की चर्चा होने लगी। राजा और राणी इस प्रकार चिरकाल तक सांसारिक सुख भोगते रहे। राजा प्रतिदिन गोदान करते समय यह प्रार्थना किया करता था।

३ १ २ ३ २ ३ १ २ १ २ ३ २ ३ २
उतनो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत।
३ १ २ ३ १ २
नृवत्कृणु ह्यूतये। सा। उ। १६। ख। ३। १।

भाषार्थः—हे पूषन्! (उत) अब (नः) हमको (गोषणिं) गायों की देने वाली (अश्वसाम्) घोड़ देने वाली (वाजसाम्) अन्न देने वाली (उत) और (नृवत्) पुत्र पौत्र और सेवकादि की देने वाली (धियम्) बुद्धि को अथवा कर्म शक्ति को (नः) हमारी (ऊतये) रक्षा के निमित्त (कृणुहि) प्रकट कीजिये।

१ २ १ ३ २ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आत्वा उद्य सर्वदुघा ँ हुवे गायत्र वेपसम्।
६ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १.२
इन्द्रधेनु ँ सुदुघामन्यामिषमुरु धारामरं कृतम्।

भाषार्थः—(इन्द्र) हे इन्द्रदेव! (अद्य) आज (सर्वदुघाम्) अधिक दुग्ध देने वाली (गायत्रवेपसम्) प्रशंसनीय वेग वाली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(सुदुघाम्) सुख से दुहने योग्य (अन्याम्) विलक्षण प्रकार की (उरुधाराम्) दुग्ध से पूरित धार देने वाली (इषम्) स्पृहणीय (धेनुम्) गाय को (अरंकृतम्) शोभा युक्त तुझको (तु) शीघ्र ही (आहुवे) बुलाता हूं।

१ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २
परिनो अश्वमश्वविद् गोमदिन्दो हिरण्यवत्।
१ २ ३ २ ३ १ २
क्षरा सहस्त्रिणीरिषः। सा। उ। अ। ६। ३।

भाषार्थः—हे देव ! (अश्ववित्) घोड़े प्राप्त करने वाला तू (नः) हमें (गोमत्) गायों सहित (हिरण्यवत्) सुवर्णयुक्त (अश्वम्) अश्व तथा (सहस्त्रिणीः) असंख्य (इषः) अन्नादि पदार्थों को (परिक्षर) चारों ओर से वितीर्ण कर।

१ २ ३ १ २र
आनो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूति मुक्षताम्।
२ ३ १ २
मध्वा रजा ँ सि सुक्रतू। सा। उ।

भाषार्थः—(सुक्रतू) हे उत्तमोत्तम कर्म कराने वाले मित्रा वरुण देवता ! (नः) हमारे (गव्यूतिम्) गवों के निवास स्थान को (घृतैः) घृतोत्पादक दुग्धों से (आ उक्षतम्) चारों ओर से सींचो अर्थात् हमें भरपूर दूध देने वाली गायें प्रदान करो (रजांसि) हमारे लौकिक और पारलौकिक निवास स्थानों को (मध्वा) मधुर रस सम्पन्न दुग्ध से भली भाँति से सिंचित किया करो।

इस प्रकार राजा को राज्य करते बहुत वर्ष बीत गये। अत्यंत दान के प्रभाव से राजा की कीर्त्ति समग्र भूमण्डल पर फैल गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होनहार बड़ा प्रबल होता है जिसके वश राजा को अभिमान ने आ घेरा। दान की व्यवस्था भी धीरे २ बिगड़ने लगी। एक दिन ऐसा हुवा कि प्रतिदिन के नियमानुसार राजा ने गोदान किया। एक ब्राह्मण राजा से गाय लेकर चला। गाय अपना ठाण छोड़ना नहीं चाहती थी सो बार २ लौट कर पीछी ही आती थी। ब्राह्मण की असावधानी से बिना दी हुई गायों के बाड़े में आ घुसी। राजा ने अजानपन से उसे दूसरे ब्राह्मण को देदी। अब तो दोनों ब्राह्मणों में विवाद उत्पन्न हुवा होते २ वह कलह राजा के कानों तक पहुंचा। राजा बहुत पछताया पर क्या होय। इधर ब्राह्मण भी दोनों पूरें हठी थे। राजा ने बहुत कुछ समझाया पर दोनों ही जब अपने २ हठ पर आरूढ़ रहे तब राजा ने कहा—

लाख रुपैया लेय कर बेचदेय कोइ गाय।
तो संकट मिट जाय अरु मेरो मन हर्षाय॥

तब एक बोला—

कौटि रुपैया ग्रहण कर बेचें नहिं हम गाय।
पीछी गैया आप लो तो विवाद मिट जाय॥

राजा बोला—

क्षत्रिय के लिय दान कों कियो न शास्त्र विधान।
जिनके पृथ्वी हस्तगत वे क्यों लेवें दान॥
क्षत्रिय होकर दान ले उसका तेज नसाय।
तेज हीन के हाथ से राजपाट छिन जाय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उस समय राजा के मन में भी कुछ तमोगुणसा आ गया। इससे गो ब्राह्मण धर्म और ईश्वर के अस्तित्व पर कुछ अस्तव्यस्त बात कह बैठा। जिससे अप्रसन्न हो दोनों ही ब्राह्मण गाय छोड़ भाग गये। अब राजा को विशेष चिन्ता हुई। जाते हुए ब्राह्मण ने शाप दिया कि राजन् ! देवद्विज निन्दा करते समय गिरगट की तरह नाड़ हिलाते हमारा ठठ्ठा किया था जिससे पुण्य के प्रताप से जागृत दशा में तो नहीं किन्तु स्वप्नावस्था में तुमको गिरगट की योनि मिलेगी। उसी समय संयोगवश महात्मा हारीत मुनि भी विवाद सुन वहां आ पहुंचे। राजा ने उठकर साष्टांग प्रणाम किया। महाराज ने जय का आशीर्वाद दिया और यथोचित आसन पर बैठ गये। राजा की चित्त वृत्ति को अति खिन्न देख मुनिवर ने प्रश्न किया तो राजा ने सब वृत्तान्त कह सुनाया तब ऋषिराज बोले राजन् ! आप किसी भी बात की चिन्ता मत करो। अभी तो इस गाय को किसी आश्रम में भिजवा दो और इसका दूध जन्म भर बछड़ा ही पिया करे ऐसी व्यवस्था करदो। राजा ने जो आज्ञा कहकर वैसी ही व्यवस्था करदी।

नृग—महात्मन् ! इस विवाद ने मेरा चित्त अत्यन्त खिन्न कर दिया।

हारीत—राजन् ! गाय के लिये तो अनादिकाल से विवाद चला आता है।

नृग—कृपा कर सुनाइये जो मेरे मनका संतोष हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हारीत—एक समय राजर्षि विश्वामित्र प्रजा की स्थिति देखते भालते अकस्मात् श्रीवशिष्ठाश्रम में जा पहुंचे। वहां अनेक ऋषि :मुनियों से भेट कर महात्माजी के भी दर्शन कर चरण स्पर्श किये। महर्षि ने भी राजा को जय का आशीर्वाद दिया। परस्पर वार्त्तालाप के अनंतर महर्षि ने कंद मूल फलादि-द्वारा अनुपम सत्कार किया और कहा कि राजन्! अरण्यादिकों में जो सुप्रबन्ध रहता है वह सब नरेश्वरों के उत्तम प्रबन्ध का फल है। ऋषीश्वर के ऐसे बचन सुन राजा बोले द्विजराज! आप हमारी अधिक स्तुति मत कीजिये। आप लोग जिन जिन उपायों से धर्म सेवन किया करते हैं उन परिश्रमों के सामने यह दान पुण्य तुच्छसा ही प्रतीत होता है कल प्रभात ही मुझे प्रस्थान की आज्ञा दीजिये। महाराज गाधिनंदन की ऐसी प्रेमभरी बात सुन ऋषिराज बोले महाभाग! आपका आगमन दैवयोग से हो गया है सो आज तो समय नहीं है कल्ह ससैन्य यहीं भगवत् प्रसाद ले यथोचित प्रदेश को पधारिये।

विश्वामित्र—क्षमा कीजिये मेरे साथ खटहल्ला बहुत है।

वशिष्ठ—आपके पास चाहे जितनी सैन्य हो मेरे पास भी कामधेनु है।

विश्वामित्र—जो आज्ञा। आप प्रवन्ध कीजिये। मैं मध्यान्ह को उपस्थित होऊंगा।

वशिष्ठ—अत्युत्तम बात। ऐसे निमंत्रण देकर श्री कामधेनु के पास पहुंच कर कहने लगे कि मैया?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एह्येहि शबले क्षिप्रं शृणुचापिवचो मम।
सबलस्यास्य राजर्षेः कर्तुं व्यवसितोऽस्म्यहम्॥
भोजनेन महार्हेण सत्कारं संविधत्स्वमे।
यस्य यस्य यथाकामं षड्रसेष्वभिपूजितम्॥

अर्थात् हे शबले ? तू मेरी प्रार्थना अंगीकार करके शीघ्र आजा आजा। कारण मैं सेना सहित राजर्षि विश्वामित्र की भोजनादि से मिजमानी करना चाहता हूं। तू ५६ भोग और ३६ व्यंजनों की सामग्री सिद्ध करके हमारा मनोरथ पूर्ण कर। मैया ! प्रबन्ध ऐसा होना चाहिये कि जिसको जिस पदार्थ की वांछा हो उसे वही वस्तु मिलजानी चाहिये। ऐसा होने से तेरी और मेरी दोनों की बात रहजाय। महर्षि के वचन सुनते ही गाय बोली तथास्तु। आप किसी बात की चिन्ता न करें। शीघ्र ही राजा को बुला भेजिये। प्रभात ही इधर पर्णकुटी में गाय तो विराजमान होगई उधर शिष्य मण्डल राजर्षि को बुलाने चले। राजा बुलावा आयाजान तुरन्त ही अपने सामन्त प्रधान और सैन्य वर्ग को साथ ले आश्रम में आ पहुंचा। ऋषिराज ने आते ही शिष्टाचार कर यथायोग्य आसनों पर बैठा दिये और गोमाता से विनति करने लगे। मुनि की तपस्या तथा विद्याके प्रभाव से कामधेनु प्रसन्न थी सो कई आश्चर्य कारिणी घटनायें होगईं। अब सब को पत्रावलियां दीगईं। जिस पदार्थ की इच्छा ऋषिने की तत्काल ही वे पदार्थ उत्पन्न होकर उपस्थित होने लगे। खीर, मालपूवा, कलाकंद, फीणी, दहीथड़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदि अनेक प्रकार की मिठाइयां भाँति भाँति के शाक चट-नियां कंद मूल फल ऐसे षट्रस सम्पन्न वस्तुयें सिद्ध हुईं। राजा राणी और सभीसामन्त सुभट लोग भोजन करते समय परस्पर कहते जाते थे कि जन्मभर में कई ठौर उत्सव और गोठों में भोजनकिया है पर आज जैसा स्वाद कभी कहीं पर नहीं आया। अरे! हमने व्यर्थ ही नगरों में निवास किया। हमसे तो येही वनवासी अच्छे। ऐसे नाना प्रकार की कल्पनायें करते रहे। फिर जब भोजन से तृप्त होगये तो राजा ने महर्षि की बड़ी स्तुति की और आतिथ्य के लिये अनेक धन्यवाद दिये। भोजनोत्तर सब राजा विश्राम करने गये तो इन अलौकिक चमत्कारों पर विचार करने लगे। पूछ ताछ करने से ज्ञात हुवा कि मुनिवर के पास एक कामधेनु है जिसके प्रभाव से ऐसा अपूर्व कार्य कर सके हैं। राजा ने थोड़े से समय तक तो सोच विचार किया फिर विदाई की आज्ञा के मिषसे ऋषि महाराज के पास जा पहुंचे। वहां बातों ही बातों में अपना अभि-प्राय दरसाया तो महर्षि वशिष्ठ तुरन्त ही चौंक पड़े। फिर सविनय बोले कि नरेश्वर? यह गाय हमारे प्राण हैं इसके लिये तो कुछ न कहें और जो चाहो सो आप लेलीजिये (यह समस्त आश्रम श्रीमानों ही का हैं तथा हम भी आपकी छाँह तले बसते हैं इसकी चर्चा तो आप छोड़ दीजिये (उस समय राजा मोह-वश होगया था अतः ऋषि वाक्य की अवहेलना कर उस गाय को छीनने के लिये उतारू होगया और बोला—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गवांशत सहस्रेण दीयतां शबलामम !
रत्नं हि भगवन्नेतद् रत्नहारी च पार्थिवः ॥ बा० रा। अ०

अर्थात् अन गिनत गायों को इसके स्थान में ले लीजिये पर मुझे यह गाय दे दीजिये। इस गाय के अलौकिक गुण और चमत्कार देखकर मैं इसे रत्न स्वरूप मानता हूं और रत्नों का ग्राहक राजा ही होता है यह प्रसिद्ध है। राजा के ऐसे वचन सुन ऋषि बोले नरनाथ ! न तो मुझे सो गाय चाहिये और न सहस्र मुझे इसके स्थानापन्न असंख्य गायें लेना भी स्वीकार नहीं है। इसीके अधीन हमारा हव्य, कव्य अतिथि सत्कार और गुरुकुल सम्बन्धी छात्रों का पालन पोषण है। इसलिये आप इस गाय का आग्रहातिशय छोड़ दीजिये। संसार में राजहठ बालहठ और स्त्रीहठ ये तीन विख्यात हठ हैं। राजा भला अपनी टेक कब छोड़ने वाला था। तुरंत सैनिकों को आज्ञा दी कि बलात्कार से गाय ले चलो। फिर क्या था सब मिलकर गाय को पकड़कर घसीटने लगे। ऋषि ने वार २ समझाया कि वेद आज्ञा देता है कि " मागृधः-कस्यस्विद् धनम् " अर्थात् धन किसका रहा है इच्छा मत करो। आप राजा हो ऐसा अन्याय मत करो। यदि लेना ही है तो मुझ से दान ले लो। तब तो कुपित होकर राजा बोला कि मैं क्षत्रिय हूं अतः प्रतिग्रह लेना नीति विरुद्ध है। मैं अपने निश्चय को कदापि नहीं पलट सकता। तब तो विलखती हुई गाय बोली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शबला—भगवन् ! किस अपराध से छोड़तहो अवमोय।
रक्षा कर राखो निकट सब दुख दीजे खोयं॥
वशिष्ठ—तन मन धन देकर चहूं रक्षा नृप से तोरि।
पै शबले ! ममवश नहीं, व्याकुल है मति मोरि॥

हे माता ! राजा के पास चतुरंगिणी सेना है। मेरे तो केवल तेरा ही आसरा है। तब तो कामधेनु किटक कर बोली आप मत डरो। ब्राह्मबल के सामने क्षात्र बल कुछ नहीं है इस समय यदि आप अपने तपोबल को क्षीण करना नहीं चाहो तो मुझे आज्ञा दो सो मैं अपना चमत्कार दिखाऊं। ऋषिबोले तथास्तु इतना बचन सुनते ही गाय ने मन में रक्षकों की इच्छा की तो तत्काल माया के असंख्य रक्षक प्रकट हो गये। राजा भी कोई सामान्य मनुष्य नहीं था। युद्ध करने लगा। दोनों ही दलों के योद्धा खचाखच तलवार चलाने लगे। बात ही बात में सहस्रों मनुष्य काम आगये। पृथ्वी रुधिर से लाल होगई। ठौर २ रुण्ड दिखाई देने लगे। जब सैनिकों में भग्गी मची तो राजा ने ललकार पुत्रों से कहा कि देखो यह ऋषि कहीं जाने नहीं पावे इसी पर टूट कर पड़ो बाँधो। पिता की आज्ञा से पुत्र दौड़े और तुरन्त ही ऋषि को घेर लिया। ऋषि निश्शस्त्र थे। अपने को शत्रुवेष्ठित जान उच्चाटन के अभिप्राय से हुंकार किया। इतने ही में सब राज कुमार निस्तेज हो मृतप्राय हो गिर पड़े। ऋषिवर के ऐसे चमत्कार को देख डाढ़ रहित सर्प के समान राजा भी हतप्रभ सा हो गया। इधर गाय की शक्ति से सेना में रोग फैल गया। किसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को ज्वर किसी को मूर्छा ऐसे अनेक रोगों के आक्रमण से सारा कटक अस्तव्यस्त हो गया। हाथी घोड़ा आदि चिमक २ भाग ने लगे और अपनी सेना का आप ही अनिष्ट करने लगे। ऐसी दशा देख राजा को बड़ा भारी बछतावा आया और निश्चय किया कि केवल क्षात्र बल तो तुच्छ है अब दैवी बल बढ़ाना चाहिये ऐसे सोच समझ राज्य का भार बड़े पुत्र को सौंप आप हिमालय की ओर तपस्या करने चले गये। वहां कई दिन तक मौन व्रती रहे । कभी एकाशन रहे। कितनेक समय तक उपवास करते और वायु भक्षण ही से काम चलाया। ऐसे करते बहुत समय वीत गया तो नियत अवधि पर देवाधि देव महादेव ने दर्शन दिये। राजर्षि ने हाथ जोड़ साष्टाङ्ग प्रणाम कर प्रार्थना की कि कृपानिधान! मेरा अस्त्र तथा शस्त्रविद्या पर पूर्णाधिकार होजाय। इस पर भोले नाथ आशुतोष बोले तथास्तु। ऐसे उसे वरदान देकर आप अन्तर्धान हो गये। यद्यपि राजर्षि ने बहुत दिन तक तपस्या की थी पर द्वेष बुद्धि नहीं गई थी सो तुरन्त ही अवसर पा वशिष्ठाश्रम में पहुचे। वहां सब बेसुध थे। इन्होंने अस्त्र छोड़े जिनसे कई लोग जलने लगे। पशुपक्षी भी उस आग्नेयास्त्र से दग्ध हो परलोक सिधारे। ऋषिमण्डली अपने २ गाँठ गूदड़ें और पोथी पाने लेकर वहां से बिदा हुए। जब ऐसी दशा थी वशिष्ठ मुनि ने प्रत्यक्ष देखी तो उनसे अब रहा नहीं गया। वे दोनों ही ऊँचे हाथ करके अभय दान देने लगे। हे मेरे प्यारे ऋषियों! मत घबरावो। जैसे सूर्योदय से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेघाडम्बर निरस्त होजाता है वैसे मंत्र शक्ति के द्वारा इस हठी राजार्षि का दर्प दलन हो जायगा। ऐसा कह ब्रह्म दण्ड हाथ में ले चारों ओर घुमा ने लगे। इधर से विश्वामित्रजी जिन २ अस्त्रों का प्रयोग करते उधर से ब्रह्म दण्ड की फट कार पड़ते ही तुरन्त निस्तेज हो जाते क्या आग्नेय, क्या वायव्य, क्या ऐन्द्र और क्या पाशुपत सबही अस्त्र जब रीते होगये तो क्रोधावेश से राजा ने ब्रह्मास्त्र चला दिया। सब देवता ऋषिमुनि सन्नाटे में आगये राजर्षि को समझाने लगे कि आप के पारस्परिक कलह में संसार का संहार हो जायगा। राजा क्रुद्ध तो थे ही। किसी के कहने पर ध्यान नहीं दिया। महर्षि की तपस्या भी अखंडित थी। उन्होंने भी उसका निवारण किया तो सब विघ्न बाधायें मिटगई तब तो लज्जित और पराजित होकर राजा स्वयं कहने लगे—

धिक् धिक् क्षत्रिय तेज को ब्रह्म तेज बलखान।
ब्रह्म दण्ड इकलेहिने किये अस्त्र बेकाम॥

ऐसे अद्भुत चमत्कारों से राजा को चेत आगया तब निष्कपट भाव से कहने लगे कि राजसी शक्ति से सात्त्विकी शक्ति सब भाँति प्रबल और समर्थ है। सो अब चित्त की शान्ति को प्राप्तकर इस सिद्धि के लिये फिर बन में जाकर तपस्या करूंगा। ऐसे कह राजपाट पुत्र को सम्हला कर महाराणी समेत आप वनमें तपस्या करने गये। होते २ ये ही ऐसे सिद्ध पुरुष निबड़े कि जिन्होंने राजर्षि से ब्रह्मर्षि की पदवी पाई। यह परम पवित्र और जगद्विख्यात जो गायत्री मंत्र है उसके मंत्रद्रष्टा ऋषि विश्वा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मित्रजी ही हैं। सो हे राजन् ! आप किसी भी बात की चिन्ता मत करो। मानसिक व्यथा को छोड़ो और आनन्द से रहो।

नृग-महाराज ? विश्वामित्र तो क्षत्रिय थे वे फिर ब्रह्मर्षि कैसे होगये ?

हारीत-राजन् ! सुनो। महर्षि बिश्वामित्र के पिता का नाम गाधि था। उनको कोई पुत्र नहीं था। केवल एक सत्यवती नाम की कन्या थी। राजपुत्री बड़ी गुणवती और रूपवती थी। इसका गुण गौरव दूर २ तक विख्यात था। उसी प्रान्त में महात्मा ऋचीक अखण्ड ब्रह्मचारी और बड़े विद्वान् रहते थे। ये अब गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहते थे। दैवेच्छा से ये महाराज गाधि के पास पहुंचे। राजा इनकी विद्या और बुद्धि को देखकर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले कि कहिये आपको क्या चाहिये ? तब ऋषि बोले राजन् ? हम गृहस्थाश्रम के निमित्त आपकी कन्या सत्यवती को चाहते हैं ? वचन सुनते ही राजा अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला कि मुझे कन्या देना स्वीकार है पर मैं १ वृहद्यज्ञ करना चाहता हूं जिसमें सहस्र श्यामकर्ण घोड़े चाहिये। ऋषिने कहा अच्छा। फिर महान् प्रयास करके महर्षि ने श्रीवरुण देवता का अनुष्ठान किया जिससे इनको यथेप्सित घोड़े मिले। ऋषिने वे सब श्यामकर्ण राजा के समर्पित किये और पुरस्कार में सत्यवती का पाणिग्रहण कर लिया। विवाह के उपरान्त सत्यवती और ऋचीक महर्षि का जोड़ा आनन्द में रहकर दिन बिताने लगा। एक दिन राणी ने अपने जामाता से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निवेदन किया कि आप जैसे परम धार्मिकों से सम्बन्ध होकर भी हमारा वंश नहीं चले यह बड़े ही आश्चर्य की बात हैं ? सो अवश्य आपको इस बात का विचार करना चाहिये । इस पर ऋषि बोले हम आपके लिये संतान की इच्छा से एक अनुष्ठान करेंगे जिससे १ पुत्र आपके होगा और एक हमारे भी होगा। उत्तम दिन देख महात्मा ने कार्यारम्भ किया। अच्छे २ मंत्रशास्त्री बुलाये गये । दोनों यजमानों की अलग २ वेदियां रची गईं। एक एक वरुण कलश दोनों ही के लिये अलग २ रक्खा गया। राजा के लिये जो प्रयोग किया उसमें ऐसा संकल्प पढ़ा जाता था कि जिससे परम पराक्रमी और जगद्विजयी पुत्र हो। किंतु ऋषि के लिये वेद शास्त्रों का ज्ञाता और परम धार्मिक संतान हो। दोनों ही कार्य निरन्तर चलते रहे । जब पूर्णाहुति का दिन आया तो ऋषिवरने अपनी सासू और पत्नी को पृथक् २ प्रसादी लेने की चर्चा की और आप स्नानार्थ नदीतट पर चले गये । सत्य-वती तो अवस्था में छोटी थी अतः धीरज धारे बैठी रही पर उसकी माताने सोचा कि पुत्री का भाग मैं लेलूं तो बहुत अच्छा होगा कारण जामाता ने अवश्य अपने लिये कुछ बिशे-षता रक्खी होगी। ऐसा सोच समझ पुत्री के लिये जो हुत शेष प्रसाद था उसे आप लेलिया और अपना भाग पुत्री को दे दिया। जब महर्षि आये तो उन्होंने पूछा कि प्रसाद की क्या व्यवस्था हुई ? इसपर उत्तर मिला कि भूलसे उलट पुलट प्रसाद होगया । ऋषि सुनते ही स्तब्ध होगये । तब तो दोनों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूछा कि कृपानिधान ! आप इतने क्यों घबराये ? इसपर ऋषि बोले जैसा बीज होता है वैसा फल लगता है इसलिये जिसने ब्रह्मतेज वाला प्रसाद लिया है उसकी कुक्षिमें सच्चा ब्राह्मण प्रकट होगा और जिसने क्षात्र तेज वाला हुत शेष खाया है उसके क्षात्र तेजसम्पन्न महाप्रतापशाली महाक्रोधी पुत्र होगा। ज्योंही क्रोधी शब्द का नाम सुना त्योंही घबरा कर सत्यवती थर थर काँपने लगी। इस पर ऋषि धैर्य धर बोले प्रिये ! मत डरो जो होनहार होता है सोही होता है तुम्हारे पश्चाताप से इतना होगा कि पुत्र तो वैसा नहीं होगा किन्तु पौत्र होगा। तब सबको धैर्य आया। जब पुत्र जन्म का समय आया तो महाराज गाधि की राणी में तो भुवन विख्यात राजर्षि विश्वामित्र का जन्म हुवा। फिर जब सत्यवती का प्रसवकाल आया तब विद्या और प्रताप के पुंज महर्षि जमदग्नि प्रकट हुए। इन्हींके साथ ही हैहय वंशी राजा सहस्रार्जुन का गाय ही के विषय में वैमनस्य होगया था।

नृग–महाराज ! आपने बड़ी ही कृपा करके एक अपूर्व इतिहास सुनाया। महर्षि जमदग्नि के साथ जो झगड़ा टंटा हुवा था वह भी कृपाकर सुनाइये ?

हरीत–राजन् ! सुनो। महात्मा ऋचीक के पुत्र जमदग्नि महर्षि का विवाह रेणुका नाम्नी राजकन्या के साथ हुवा था। उसकी दूसरी बहन सत्या थी जिसका पाणिग्रहण माहिष्मतीपुरी के राजा सहस्रार्जुनने किया था। यह राजा ऐसा प्रतापी था कि ७ द्वीप नवों खण्डों में इसके नाम की धाक पड़ती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक समय अपने पुत्रके विवाहोत्सव पर सत्या ने रेणुका को बुलाई थी। वहां उसे बड़े आदर सत्कार से रक्खी। जब आने लगी तो रेणुका ने कहा कि बहन? तुमने, तो मुझे बड़ा आनन्द दिया पर यदि हमारी ओर तुम्हारा आगमन हो जाय तो ऋषियों के भोज्य कंद मूल फलादि को अंगीकार करके हमारा भी मान बढ़ाना। सत्या राज पत्नी होने से अभिमान रखती थी। उसने अपने भावको छुपा कर कहा कि बहन? मैं अवश्य आऊंगी पर ठाठ वाठ से आये हुए राजा के आतिथ्य से आपको कुछ परिश्रम सहना पड़ेगा। अच्छा अभी तो पधारो पर जब समय आयगा तब देखा जायगा। रेणुका निर्विघ्न आश्रम में पहुंच गई। वहां जाकर उसने बहन के सत्कार की बहुत प्रशंसा की और साथ ही उसकी गर्वोक्ति को भी सुनाई।

महर्षि बड़े गंभीर थे। सोच विचार कर बोले प्रिये? अभी तो आप किसी भी बात का सोच मत करो जब समय आयगा तब इसका प्रतीकार करेंगे। हमारे ऊपर श्रीभगवान् की कृपा है और कामधेनु पास है हमें किसी भी बात की चिन्ता नहीं। इसके अनन्तर ऋषि दंपती का बहुत समय बीत गया। श्रीपर-शुराम जैसे महाप्रतापी पुत्र जनमे जो अद्वितीय धनुर्धर संसार में विख्यात हुए। श्रीभगवान के २४ अवतार हैं जिनमें ८ विष्णु के ८ ब्रह्मा के और ८ शिव के हैं। यह एक ही ईश्वर की विभू-तियां हैं गुणों के भेद से अलग २ नाम हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक समय वन विहार करते २ राजा सहस्रार्जुन महर्षि जमदग्नि के आश्रम के निकट आ पहुंचा। महर्षि के शिष्यों ने राजा को पास आया जान उसका बड़ा आदर सत्कार किया। राजा राणी को भी ऋषि दम्पती के दर्शन का बड़ा चाव था। उन्हों ने जाकर दर्शन कर साष्टांग किया। महर्षि ने आशीर्वाद दिया और आतिथ्य का अनुरोध किया। राजा हिच किचाया तब ऋषि बोले कि आप छत्रपति हैं और हम पत्रपति हैं आप संकोच न करें सब व्यवस्था बन जायगी। राजा ने कहा तथास्तु। फिर नियत समय पर राजा राणी मंत्रि मण्डल सामन्तगण और सैनिक वर्ग निर्दिष्टस्थान पर आकर बैठगये। ऋषिराज को योग बल से अष्टसिद्धियां प्राप्त थीं। उन्हों ने कामधेनु के पास जाकर निवेदन किया कि मातेश्वरी! क्या देखती हैं आज राजा पाहुना है सो ऐसे ऐसे ५६ भोग ३६ प्रकार के व्यंजन बना कि ब्राह्मणों का गौरव बना रह जाय। गोमाता बोली तथास्तु। फिर क्या था देखते २ नानाप्रकार की सामग्रियों के ढेर लगगये। ऋषि की आज्ञा पाकर आश्रम वासियों ने सबको पातल दोने देकर पदार्थ परोसने आरम्भ किये। कलाकंद, मोहनभोग, खीर, मालपूवा, लाडू, जलेबी आदि अनेक पदार्थ परोसे गये। अनेक स्वादिष्ट फल जिनका कभी नाम भी सुनने में नहीं आया था वहां काम में लाये गये। इस प्रकार षट्रस भोजन द्वारा अनुपम आनन्द पाकर सब लोग मुक्तकण्ठ से महर्षि की प्रशंसा करने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आश्रम का शीतल मन्द सुगन्ध पवन आश्रम वासियों के मानों त्रिविधताप और पाप मिटा रहा था। भाँति भाँति के पक्षी कोकिल, मयूर, नीलकण्ठ आदि मनोहर शब्दों द्वारा उनका मनोविनोद कर रहे थे। अन्य सब तो प्रसन्न थे पर राजा और राणी आश्चर्य सागर में गोते खाते और कहते थे कि हाय हमने राज घराने में जन्म लेकर क्या किया ? कहीं पर पटमंडप तने हैं तो कहीं पर शीस महल खड़े हो रहे हैं। उनमें रंभादि देवांगना नृत्य करके दर्शकों के चित्त को प्रफुल्लित कर रही हैं। कहीं गन्धर्व चारण अपूर्व स्वरों से हरिगुणगान करते हुए श्रोताओं के पापों को समूल नसा रहे हैं। इत्यादि अनेक घटनाओं को देख लोभवश राणी ने राजा से प्रार्थना की कि कृपानिधान ! इस अनोखी गाय की ही यह सब महिमा है । यदि ऐसी गाय राज द्वार में हो तो क्या कहना है ? राणी की बातें सुन राजा तुरन्त ही चक्कर में आगया। पूर्वाऽपर का विचार न करके ऋषि के पास दूत भेजकर कह लाया कि कृपया इस गाय को हमें दे दीजिये। ऋषिराज वचन सुनते ही तुरन्त बोल उठे कि राजन्, यह गाय हमारी नहीं है। इसका निवास स्थान इन्द्रपुरी है जब आवश्यकता होती है तब बुला लेते हैं काम सधाकर पीछी भेज देते हैं। राजा ने इन बातों पर तिल भर भी ध्यान नहीं दिया प्रत्युत गर्व में आकर कहने लगा कि ऐसी गायें रत्न स्वरूप हुआ करती हैं और रत्न राजा ही के पास शोभा पाता है। ऐसे कह बलात्कार से गाय को ले जाने लगा। राजा का ऐसा दुराग्रह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देख गाय महर्षि से कहने लगी कि मैंने आपका क्या विगाड़ किया है कि जिसके कारण ऐसे असंतुष्ट हो रहे हो। मैं देवर्षि महर्षि और ब्रह्मर्षियों के निवास स्थान को त्याग राजमहलों में जाकर कदापि बंदी के समान कारगार में रहना नहीं चाहती। कामधेनु के ऐसे आर्त्तनाद को सुनकर ऋषि बोले कि माता! मेरी सम्मति तो तुझे त्यागने की नहीं है पर राजा तुझे हठवश छीनकर ले जा रहा है। तू काम दुघा हैं अतः अपना चमत्कार दिखाकर आपही रक्षा कर। ऋषि के वचन सुनते ही गायने राक्षसों का आवाहन किया। देखते २ तत्काल माया के सहस्रों ही योधा खड़े होकर राजा के दल का संहार करने लगे। राजा भी कोई सामान्य पुरुष नहीं था। उसने भी बडी भारी वीरता के साथ युद्ध करके अनेकों को यमलोक का मार्ग बताया। जब गायको लेकर आगे बढ़े तो ऋषिराज विवश होकर परशुराम का स्मरण करने लगे। इस बात को बीते थोड़े से क्षण हुए होंगे कि इतने में क्या देखते हैं कि अस्त्र और शस्त्र विद्या के आचार्य असाधारण योद्धा परशुराम सम्मुख आ खड़े होगये हैं। पिता के चरणों में दण्डवत् कर बोले महाराज? कहिये क्या आज्ञा है? ऋषिने पुत्र को आशीर्वाद देकर कहा कि बेटा! देखते क्या हो। राजा अपनी गाय छीन कर लेजा रहा हैं। सुनते ही परशुरामजी ने पिता को धैर्य दिलाई और आप सिंहनाद कर राजा को ललकारने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

राजा भी बड़ा वीर था। अतः दोनों में घोर युद्ध हुवा। परशुरामजी ने एक ही लपेटे में उसको पराजित कर लज्जित कर दिया। फिर वहुत समय तक संग्राम चलता रहा अन्तमें राजा धराशायी हुआ। अचेत राजा को मारना वीरोचित कर्म न समझ कर परशुरामजी गायको छुड़ा आश्रमको लेगये। इस बिजय से महर्षि जमदग्नि ने पुत्र को अनेक आशीर्वाद दिये। परशुरामजी सदा तीर्थाटन और तपश्चर्या के उत्सुक रहा करते थे अतः पिताने उनका स्वभाव पहचान उन्हें आज्ञा देदी। वेभी साष्टांग प्रणाण कर माता पिता से आज्ञा लेकर बदरिकाश्रम की ओर चले गये। इधर राजा को जब चेत आया तो ब्राह्मण द्वारा हारने का उसे बड़ा भारी संकोच रहा। उस समय तो वह पराजित होकर चलागया पर मनसे उसका खटका नहीं खुला। कई दिनों तक सोच विचार करता रहा। एक समय उसने दृढ़ संकल्प कर लिया कि परशुरामजी को तो जीतना कठिन है यदि उनके वृद्धपिता ही को जीतलूं तो मेरा मुख उज्वल हो जाय। ऐसी कुभावना लाकर चुप चाप आश्रम में जा पहुंचा। महर्षि इकल्ले बैठे थे। शिष्यवर्ग इधर उधर कहीं चलेगये थे। राजा ने बैर निर्यातन का अच्छा अवसर जान तुरन्त ही जमदग्नि को मारडाला। रेणुका ने अकस्मात् पति की ऐसी दुर्दशा देखकर छाती माथे कूटने लगी। पहले तो उसने विचारा कि एक शिला से माथा फोड़कर प्राण त्याग करूं पर शिष्य मण्डली ने ऐसा नहीं होने दिया। तब तो समीप धरे हुए एक वृहत्पाषाण को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उठा कर उससे २१ बार छाती में धमेड़ लिये। रोते समय कहती जाती थी हे परशुराम ३ ! यदि आज तू यहां होता तो मेरे पति की ऐसी दशा नहीं होती। परशुरामजी को यह सिद्धि प्राप्त थी कि जब कोई उन्हें स्मरण करे तो वे जहाँ जाना चाहते जा सकते थे। उनको तुरन्त ही माता का आर्त्त नाद विदित होगया। वे शीघ्र ही आश्रम में पहुंचे। वहां जाते ही उस हत्या काण्ड का वृत्तान्त जान उनके क्रोध का पारावार नहीं रहा। माता के चरणों में गिरकर धैर्य और आश्वासन देकर कहा कि मैया ! चाहे मुझे २१ बार भी चढ़ाई करना पड़े पर मैं ऐसे दुष्ट राजा को मारे बिना नहीं रहूंगा। ऐसा प्रण कर माहिष्मती पुरी पर चढ़ाई की। राजा के सहायक वहुत थे अतः सैंकड़ों कुटुम्बी मारे गये पर राजा वचगया। परशुरामजी ने अवसर पा दुबारा चढ़ाई की। ऐसे बार २ चढ़ाई करते जाते और उसके बलका संहार करते थे। अन्त में २१ वीं बेर दोनों का आमना सामना हुवा। राजा बड़ा मायावी था। वरदान के प्रभावसे युद्ध में उसके सहस्र हाथ हो जाते थे। दोनों का घोर संग्राम हुवा। परशुरामजी ने उसके एक २ करके सहस्र ही हाथ काट डाले। जिन २ क्षत्रियों ने इस अत्यायी का पक्ष किया वे भी उनके हाथ से मारे गये। अन्तमें परशुरामजी के हाथ से राजा का मस्तक कटा और जयश्री परशुरामजी के हस्तगत हुई।

नृग-कृपासागर ! अब मुझे तिलभर भी संकोच नहीं रहा। गायों का महत्त्व ऐसा ही है राजा की ऐसी वात सुन बड़े प्रसन्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए और विदा लेकर आश्रम की ओर सिधाये। इस प्रकार गो दान करते २ बहुत वर्ष वीतगये। इस महा पुराय के प्रभाव से राजा को इस लौक में सभी सुखों की प्राप्ति हुई। पुत्र ही क्या प्रपौत्र तक राजा ने देखे। चारों खूट में निष्कंटक राज्य रहा। राजा और प्रजा में सदैव आनन्द बरसता रहा। इस प्रकार राजलक्ष्मी भोगते बहुत वर्ष वीत गये तब वृद्धा वस्था में पुत्र को युवराज बना आप उत्तरा खराड में तपस्या करने चले गये वहां भी चिरकालतक भगवद्भजन करते रहे अन्त में जब देहा-वसान हुवा तो ईश्वरीय नियम के अनुसार राजा की आत्मा धर्मराजजी के न्यायालय में पहुंचा। राजा को उठकर धर्मराज जी ने अभ्युत्थान दिया और यथोचित आसन पर बिठाया। चित्रगुप्तजी ने इनके गोदानों का लेखा सुनाकर कहा कि महा-राज! इनके पुरायों का पारावार ही नहीं है। जब ये वचन कहे तो उन्होंने धन्य २ कहकर एक अम्लानपंकजामाला पहनाई और आज्ञा दी कि हे पार्षदों! इनको गोलोक ले जावो।

चित्रगुप्त—महाराज! थोड़ासा इनसे पाप भी बन आया है।

धर्मराज—क्या।

चित्रगुप्त—कृपानाथ! दान देते समय भूल से ब्राह्मणों में कलह हो गया था जिनसे भारी क्लेश हुआ बस यही पाप का लेश है।

धर्मराज—यद्यपि इतने पुराय के सामने पाप कुछ भी नहीं है तो भी दान की नियमावली सुनावो सो कर्म बिपाक का निर्णय हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्रगुप्त—जो आज्ञा ।

भूमिदान के तुल्य ही गऊदान फलदाय ।
इन दो का दाता अवशि सुरपुर में पदपाय ॥
जो दाता के दान की पुष्टि करे हर्षाय ।
दशमभाग वह पुण्यका सहजहिं में पाजाय ॥
दान देय पीछो लहै अथवा दे पछताय ।
देतो लखि वा कुड मरे ये तीनों दुखपाँय ॥
जान बूझ कुकरम किये पूरौ लागै पाप ।
बिनजाने बन आयतो अल्प मिलै संताप ॥

महाराज ! इन्होंने जो पाप किया है बह अजाण और आवेशवश हुआ हैं अतः थोडासा ही कष्ट मिलना चाहिये ।

धर्मराज—ब्राह्मण वचन को यथार्थ करने और थोड़ासा दण्ड देने के लिये इन्हें स्वप्न में गिरगट की योनि दीजिये ।

चित्रगुप्त—जो आज्ञा ऐसा कह फिर राजा नृग से बोले कि राजन् आप घड़ीक यहां विश्राम कीजिये ।

नृग-जो आज्ञा । राजा श्री धर्मराज की पुरी में घड़ीक ठहरे वहां शीतलमंद सुगन्ध पवन चल रही थी । राजा को तुरन्त निद्रा आ गई । स्वप्न में क्या देखता है कि राजा को गिरगट योनि मिली । जहाँ एक अँधेरा कूआ था । उस घटना को देख राजा ने प्रार्थना की कि दयासागर ! इस संकट से तो शीघ्र छुड़ाइये । इतने ही में खेलता २ यादवों के बालकों का झुण्ड जल पीने की इच्छा से वहां आगया । वहां एक अद्भुत रंग के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिरगट को देखकर बड़े ही चकित हो गये। संयोगवश वाणासुर को जीतकर भगवान् श्रीकृष्ण भी वहां आ पहुंचे। बालकों की बात सुन वे भी वहां जा पहुँचे। दिव्य दृष्टि पड़ते ही तुरंत वह उस योनि से छूट नरेश की योनि को पहुंच गया। राजाकी आँख खुली तो वही धर्मराज की पुरी विद्यमान है।

राजा ने हाथ जोड़ धर्मराज से प्रार्थना की कि महाराज! मैंने स्वप्न में गिरगट की योनि पाई।

धर्मराज—आपका पुण्य अनन्त हैं इसलिये सब पाप भस्म हो गये। गऊ और ब्राह्मण सम्बन्धी मिश्रित पाप होने से क्षण भर के लिये आपको थोड़ासा कष्ट भोगना पड़ा। अब यह दिव्य विमान उपस्थित है उसमें विराजमान होकर देव तुल्य कलेवर से गोलोक में पधारिये। आज्ञा पाते ही तुरंत चार पारिषद् आ पहुंचे। उन्होंने जय ध्वनि करते हुए पुष्पवृष्टि के साथ राजा और राणी को श्री वैकुण्ठ धाम ले गये। राजाने जाते ही श्री महालक्ष्मीजी समेत गोलोक नाथ के चरण कमलों में साष्टांग प्रणाम की। ऐसे महादानी के आगमन से देव समाज में एक महोत्सव मनाया गया। वेही प्रकृति पुरुष हैं। उसी को कोई शिव शक्ति मानते हैं। कोई उन्हें ब्रह्मा सावित्री के नाम से पुकारते हैं। किसी ने वाणी विनायक मानकर उनको परमाराध्य देवता माना है। कहांतक कहा और लिखा जाय वही विश्वकर्मा नट नागर नानारूपों को धारण करके क्रीड़ा करता रहता है। उसके नाम और रूप अनंत हैं। बाह्यदृष्टि से तो भेद प्रतीत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता हैं पर वास्तव में वही एक सच्चिदानन्द परब्रह्म परमात्मा है। देवलोक की मर्यादानुसार अष्ट सिद्धियाँ जयमाल लेकर उपस्थित हुईं।

अणिमा—अगणित गौयें द्विजों को दीन्ही सो महाराज।
सेवा में रहिहों सदा कहिये क्या करूँ काज॥

महिमा—हव्य कव्य गोदान से बहुत बने शुभकाम।
तासों तीनों भुवन में अमर रहे तुवनाम॥

गरमा—गोरस तें सत्पात्र को भयो वंश विस्तार।
तासों तुम्हरे कुटुम्बकी हुइ हैं वृद्धि अपार॥

लघिमा—राजन! तुम्हरे राज्य में लघुदुख लह्यो न गाय।
तासों तीनों लोक में विचर सको सहजाय॥

प्राप्ति——प्रजापालि संसार में करत रहे नित न्याय।
तासों ज्यो चाहो वही तुरत आपपै आय॥

प्राकाम्य—गऊदान से सहज ही बन्यो अन्न को दान।
तासों छप्पन भोग अरु करो सुधारस पान॥

ईशित्व—गो हिंसा नहिं राज्य में होने दी नरनाथ।
तासों सगरी अप्सरा खड़ीं जोरकर हाथ॥

वशित्व—परधन परदारा नहीं सेई नृप पद पाय।
तासूं प्रभुता पायकर अमर बनो नरराय॥

नृग—आठों ही सिद्धियों का यथा योग्य सत्कार करके बोला कि देवियों! आपने बड़ी कृपा की जो मुझे दर्शन दिये। अब तो मैं सब ईश्वरीय लीला देख चुका हूं इसलिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुझे किसी भी बात की इच्छा नहीं है केवल सायुज्य मोक्ष की इच्छा है।

एषास्य परमागति रेषास्य परमासंपदेषोऽस्य परमोलोक एषोऽस्य परमानन्द एतस्यैवानन्दस्यान्यानिभूतानि मात्रामुप जीवन्ति। बृ० उ०

यही इस आत्मा की परमागति है। यही इसकी परमसंपदा है। यही इसका परम लोक हैं। यही इसका परम आनन्द है। तथा इसी आनंद की आशा समस्त प्राणी किया करते हैं।

श्री भगवान्—तथास्तु! ओमिति में श्री भगवान् ने श्रीमुख से आज्ञा करी कि तथास्तु! इतने ही राजदम्पती की ज्योति प्रकृति पुरुष की ज्योति में प्रविष्ट हुई।

ओंशान्तिः शान्तिः शान्तिः।

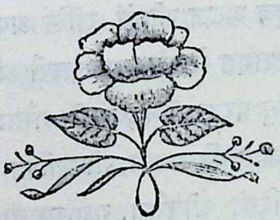

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओन्नमः शिवाय ।

अथ श्री लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का चरित्र

तृतीय प्रकरण

वंशी विभूषितकरान्नवनीरदाभात् ।
पीताम्बरादरुण विम्बफला धरोष्ठात् ॥
पूर्णेन्दु सुन्दरमुखादर विंदनेत्रात् ।
कृष्णात्परं किमपितत्वमहं नजाने ॥

राग तोडी (तीन तेवरी) मनरे परस हरिके चरण ।
सुभग सीतल कमल कोमल त्रिविध ज्वाला हरण ।
जे चरण प्रहलाद पर से इन्द्र पदवी धरण ॥१॥
जिन चरण ध्रुव अटल कीन्हीं, राखि अपने शरण ।
जिन चरण ब्रह्माण्ड भेट्यो, नखशिखौ श्रीरमण ॥२॥
जिन चरण प्रभु परस लीन्हे, तजी गौतम धरण ।
जिन चरण कालीहिनाथ्यो, गोपलीला करण ॥३॥
जिन चरण धरियो गोवर्धन, गर्व मघवा हरण ।
दास मीरां लालगिरधर, अगम तारण तरण ॥४॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अखिल संसार जिसकी वंदना करके कल्याण पद प्राप्त करता रहता है। श्री व्यासादि महर्षि और महाकवि माघादिकों ने जिनके अनुपम सुयश काव्यों में वर्णन कर अपनी भारती को सुफल की है। जिनकी अलौकिक रण कुशलता और चातुरी को विचार २ अनेक नरेश्वरों ने विजय प्राप्त की है। जिनकी दिव्य मूर्ति के दर्शन कर सहस्त्रों लक्षों ही मनुष्य वैकुण्ठधाम के अधिकारी बने हैं। जिनके मुखारविन्द से प्रकटित होकर गीता जैसा ज्ञानामृत आजदिन भी श्रुतियों के समान मान पा रहा है। ऐसे षोडशकला पूर्ण साक्षात् परम पुरुष भगवान् श्री कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द का परिचय देना त्रिभुवन प्रकाशक श्री सूर्यनारायण को फूलबत्ती दिखाने के समान यह प्रयास है।

एक समय सकल शास्त्रों के पारंगत विद्वान महर्षि गर्गाचार्य जी श्री वसुदेवजी की प्रेरणा से गोकुल में पधारे। वहां बाबा नंदरायजी की पोल पूछते २ उसी स्थान पर आ पहुंचे। उस समय श्री नंद यशोदा आनंदपूर्वक बैठे हुए श्री बालमुकुन्द का लाड प्यार करते और उनकी तोतली बातें सुनकर सुख सिंधु में मानों निमग्न से हो जाते थे। ऋषिराज के आगमन के समाचार सुनकर तुरंत ही द्वारपर आ पहुंचे। उन्हें देख दूर ही से साष्टांग प्रणाम कर सत्कारपूर्वक भीतर ले गये। पाद्य अर्घ्य और आचमनादि से यथोचित सत्कार कर उत्तम आसन पर विराजमान किये। राणी यशोदाजी ने गोद के बालक को महाराज के चरणों में लौटा दिया। ऋषिवर ने आशीर्वाद देकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बड़ा हर्ष उत्साह प्रकट किया। फिर यशोदा बोली कि गुरुदेव! आप यदु वंशियों के और हमारे कुल गुरु हैं अतः कृपाकर इस चिरंजीव का नाम संस्कार कर दीजिये। राज पुरोहित ऐसे बचन सुन बोले हे नंदराणी! आपका घर तो स्वयमेव ही पवित्र है।

नंद भवन को भूषण माई।
यशोदाको लाल वीर हलधर को राधारमण परमसुखदाई ॥ध्रु॥
शिव को धन संतन को सरबस, महिमा वेद पुराणन गाई।
इन्द्र को इन्द्र देव देवन को ब्रह्म को ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥१॥
काल को काल ईश ईशन को अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई।
नंददास को जीवन गिरिधर गोकुल गाँव को कुँवर कन्हाई ॥२॥

त्रिभुवन सुखप्रद मेघसम, इनको वर्ण निहार।
नामधरूं श्रीकृष्ण यह, सुर मुनिनर शृंगार॥
गो ब्राह्मण श्रुति संतका, हरि हैं भय तत्काल।
तासों इनका दूसरो, नाम धरूं गोपाल॥

श्रीनंद और यशोदाजी ने ऐसे अमृतमय बचन सुन स्वर्ण दक्षिणा भेट कर हाथ जोड़ प्रार्थना की कि कृपासागर! यह सब आप जैसे गुरुजनों के पुण्यों का प्रताप है। फिर उन्हें प्रीति पूर्वक षट्रस भोजन कराकर प्रसन्न किया। विदा होते समय ऋषिवरने आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा लाल चिरकालतक संसार की ढाल बनारहे (फिर रोहणी आदि व्रज ललनायें श्रीकृष्ण बलराम को खिलाती पिलाती और अनुपम आनन्द का अनुभव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करतीं थी। जब इनका अन्नप्राशन का मुहूर्त्त आया तो हवन यज्ञकर क्षीर खाँडका भोजन ब्राह्मण और कुटुम्बियों को कराया। नन्दरायजी ने बड़ी धूम धामसे उत्सव और मंगलाचार किया। जब हरि ८ वर्ष के हुए और कार्त्तिक शुक्ला अष्टमी का दिन आया तो यशोदामाता से कहने लगे (राग धनाश्री)

* मैया ! हों गायचरावन जैहों।

तू कहि महरनंद बावासों बड़ो भयो न डरै हों।
तेरे हेत मात मनसुख अरु हलधर संगहि जैहों॥
बंशीवट तर गायन के सँग खेलत अतिसुख पैहों।
ओदन भोजन दै दधिकौवरि भूख लगेतें खैहों॥
सूरदास मैं साथ सौंह देज्यो जमुना जल न्हें हों॥
गोपाष्टमी सुपर्वमें गोपूजा गोग्रास।
गो प्रदक्षिणा अनुगमन किये पापको नास॥

श्रीकृष्ण के ऐसे उत्साह को देखकर यशोदा बोली लाला! बड़ेरों के पुण्य प्रताप से बहु तेरे नौकर चाकर हैं वेही जाकर चरा लेंगे। तुमतो मेरी आँखों के तारे और इस भवनके उजारे हो। एक क्षणभरके लिये भी मैं तुम्हारा वियोग नहीं सहसकती।

---

* राजपूताने में अब भी सब स्त्रियां गायों की पूजा करती हैं। यहां एक ऐसी खोटी प्रथा चल रही है कि काचे आटे की गोलियां बनाकर उन्हें खिलाते हैं जिससे आफरा चढ़कर कई गायें मर जाती हैं यदि उनको परिपक्व और यथोचित अन्न दिया जाय तो कोई हानि की बात नहीं पर विचार के विना धर्म ही अधर्म के रूप में पलट जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाबा जब तुम्हें एक पलभर के लिये भी नहीं देखते तो तुरन्त तुम्हें ढूंढने लगजाते हैं। इसपर नन्दलाल बोले मैया! यदि तू मेरी बात नहीं मानेगी तो मैं भी कोई तेरा काम नहीं करूंगा। बालपना तो भला खेल कूद ही के लिये होता है (यदि तुझे किसी बात का डर हो तो बलदाऊ भैया को मेरी चौकसी देदे। जब इतना हट देखा तो ब्राह्मण द्वारा शुभ मुहूर्त्त पूछ बलराम श्रीकृष्ण को वनमें गायें चराने को भेजे। जब सब ग्वाल बाल मिल गायें चराने जाने लगे तब यशोदा सीख देने लगी बेटा! जंगलमें कभी इकल्ले ही बहुतदूर मतजाना। जंगलमें कई भाँतिके विषैले वृक्ष होते हैं उन्हें भूलकर भी मतछूना। लाल! कई बछड़े बड़े चंचल हुवा करते हैं वे कूदते फाँदते दूर चले जाते हैं तुम उन्हें लाने के लियै इकल्ले मत भागना। दुपहर वा तीसरेपहर जब तुम्हें भूख लागे तो बलदाऊ भैया से कहकर किसी सयानी गायको दुहकर उसका दूध पीलेना पर भूखे प्यासे इधर उधर मत भटकना। कईबार ग्वाल बालों को उपद्रव करते देखा और सुना है सो तुम उनकी देखा देखी किसी ऊंचे वृक्षपर मत चढ़ना। कई बालक कूदते फाँदते दोपरह की धूप बड़ी ही असह्य होती हैं सो वैसे समयमें किसी वृक्ष की छायामें बैठकर विश्राम करना और नाला लाँघते हुए गिरपड़ते हैं सो तुम वैसा काम कदापि मत करना। नंगेपाँव कभी मत दौड़ना। ग्वालबालों को भाई के समान समझना और उनके संग कभी लड़ाई झगड़ा न करना। हे नन्दकुमार बहुत से वृक्षोंपर कहीं मवाल कहीं टाँट्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और कहीं ततैया आदि होते हैं उनको मत छेड़ना। कई बालक पत्थर फेंककर उन्हें उड़ाते वा धूवां करते हैं सो ऐसा कभी मत करना। हे श्याम! थोड़े दिनों की व्याई गायें वहुधा चमकने वाली होती हैं सो उनके बछड़ों के पास वहुत सोच समझ कर जाना। वहुतसी गायें स्वभाव से ही मारकणी होती हैं सो वे सींगों में लेकर सामने आये छोटे बच्चों को उछाल देती हैं तुम उनकी फेटमें कभी मत आना। लाला! जब घर लौटने का समय आता है तब ग्वाल बाल बहुधा गायों की गिनती कर लिया करते हैं सो वे उस समय भिन्न २ मार्गों से घेर घेर कर लाते हैं सो तू ऐसे कठिन परिश्रम के कामसे बचना। जंगल में बहुत से कांटे वाले वृक्ष होते हैं उनसे सदा बचते रहना। कई ठौर साँप विच्छू आदि के बिल होते हैं उधर भूल कर भी पैर मत धरना। जहाँ कीड़े मकोड़े आदि का जमाव हो वहां वृथा आना जाना करके उन्हें मत सताना। यों तो जमनाजी का जल स्वच्छ शीतल पाप और ताप का नाशक हैं पर किसी २ स्थान पर जैसे कालीदह है वैसी ठौर भूलकर भी मत जाना न न्हाना और न पानी पीना। लाला! गायें बहुधा भोली भाली हुआ करती हैं सो तुम उन्हें कभी मत जाने देना। गिल्ली डंडा दड़ी घोटा आँख मिचौनी चील झपट्टा आदि सुखदाई खेल तो खेलना पर होडमार कर जूवा के खेल कभी मत खेलना। अबखी ठौर पर फूल वा फल लगे हों तो उन्हें तोड़ने का वृथा प्रयास मत करना। भैया! मैं कहाँ तक तुझे समझाऊं सब काम सोच विचार के साथ करना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और सबसे बड़ी बात यह है कि बड़े भाई बलभद्र तुमसें सयानें हैं इनकी हटक में रहना। प्यारे लाल ! बड़ों का कहना है कि अज्ञात जलाशय में न तो न्हाना न गोता मारना और न नदी को तैर कर पार करना। कंसराजका यहां बड़ा आतंक है सो किसी बातका ओलम्बा मत लाना। तुम सब ग्वाल बाल सदा ऐसा ध्यान रखना कि सूर्यास्त होते२ अपने ग्राम में प्रवेश करना यही हमारा बारंबार तुमसे कहना है। इतने बचन कह यशोदारानी बलरामजी से भी कहने लगी किलाला ! गो सेवा करना अपना परम धर्म है इस विचारसे लाला को तेरे संग भेजती हूं सो तू इसकी सब भाँति चौक्सी रखना माता की ऐसी बात सुनते ही बलराम बोले मैया ! जिसे तुम बालक कहती हो वह तुम्हारा हमारा और सबों का संचालक है। अधिक क्या कहूं यह सुर-मुनि और नर सब ही का श्रृंगार है इसकी महिमा सर्वथा अपार है। श्री बलभद्र के ऐसे बचन सुन यशोदा बोली बेटा ! अच्छा वह है सो है। तुम जानो हमारी तोतुमसे यही सीख है।

जिस समय ब्रज विहारी ग्वाल बालों को साथ लेकर बंशी बजाते गायें चराने जाने लगे तो ब्रज युवतियाँ उनके दर्शन करने को पौरी में आकर किवाड़ों के पीछे से इन्हें निहार ने लगती थीं। काली पीली भूरी धोली धूमरी इत्यादि नामों से पुकारते हुए श्रीकृष्ण को देख कितनेक नर नारी नंद यशोदा के भाग्य को सराहते थे कि इन्होंने कब किस जन्म में न जाने कैसे पुण्य किये हैं कि जिन को ऐसे अमूल्यरत्न आनंदकंद की निरंतर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छवि देखने का सौभाग्य प्राप्त हुवा है। इधर तो श्रीकृष्ण बलराम गायें चराने को बन में पहुंचे उधर मुरली मनोहर के बिना घर को सूना जान यशोदा मैया कभी बाहर जाती कभी भीतर आती और अपनी सहेलियों से कहती अरी सखी! मेरा वह गोविन्द कब आयगा? उसके धूलि धूसरित गात को निहला धुलाकर कब मैं उसकी बेणी गूथूंगी। हे कृष्ण! तू कब अपने प्रिय वाक्यों द्वारा मेरे पास आकर मैया! मुझे भूख लगी है ऐसे प्रिय वचन कहकर कलेवा माँगेगा। हे मुकुन्द! तुझे ऐसी छोटी अवस्था ही में गायों से ऐसा प्रेम हैं तो बड़े होने पर तो न जाने कितना स्नेह बढ़ जायगा। तुझे पहले भी मृत्तिका की गायें ही अच्छी लगती थीं। अब भी उठकर गायों ही का दर्शन करता हैं लाला! तेरी प्यारी कपिला का दूध मैंने अभी से ओटा रक्खा है तेरी इच्छा हो तब ही आकर पी। ऐसे नाना भाँति की कल्पना कर रही थी कि इतने ही में रोहिणी ने आकर शुभ समाचार सुनाये कि भैना! तू काहे को इतनी विकल होरही है।

रागगौरी

बनतें आवत धेनु चराय।

सन्ध्या समय साँवरे मुख पर गोपद रज लपटाये।
वरह मुकुट के निकट लसति लट मधुपन से रुचिपाये
विलसत सुधा जलद आननपर उड़त न जात उड़ाये।
विधिबाहन भक्षन की माला राजतउर पहनाये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इक वपु रही नाहिं बड़े छोटे ढोठा शिशु ग्वाल बने इकदाये।
सूरदास मिलि लीला प्रभु कीन्ही जीवत जनम यश गाये॥
आज हरि धेनु चराये आवत।
मोर मुकुट बन माल विराजत पीताम्बर फहरावत।
जिहिं जिहिं भाँति ग्वाल सब बोलत सुनिश्रवणन मन भावत।
आपन टेर लेत नन्हे सुर हरषतसुख मुनि भाषत।
देखत नंद यशोदा रोहिणी अस देखत व्रज लोग।
सूरश्याम गायन सँग आये मैया लीनो रोग॥

हे मैना ! तू देखतो सई कैसी गोरज आकाश में छारही है? तेरा वह लाल पहने बन माल सँगलिये ग्वाल बाल कैसी धीमी चलता चाल यहां आरहा है। यशोदा ने ज्योंही ऐसा कर्ण सुखप्रद शब्द सुना त्योंहीं सब काम काज छोड़ अटारी पर चढ़ उनके आगमन की बाट जोहने लगी। इतने ही में मुरली की मधुर धुनि सुनाई देने लगी। उस समय नंदरानी के मन में ऐसा उल्लास हुवा कि मानों खोई हुई सम्पदा फिरसे मिल गई है। जिस समय श्रीकृष्ण बलदाऊ गायें चराकर वन से लौटते थे उस समय व्रज ललनायें कंचनके थालोंमें आरती सजाकर प्रेम मग्न होकर द्वारपर खड़ी हो जाती थीं। श्री मोरमुकुटधारी कुंजबिहारी के दर्शनों की ऐसी लगन रहती थी कि जैसे स्वाति के बूँदों की पपैये को आशा रहती है। दर्शक लोग प्रतीक्षा करते २ चित्र से खड़े रह जाते थे। कितनेक ग्वाल बाल तो आगे चले आरहे हैं। बीच बीच में गायों का झुण्ड। इनके पीछे पीछे अश्विनी कुमारों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समान युगल मूर्त्ति श्रीकृष्ण बलराम आनन्द से हँसते २ धीमी चाल से आ रहे हैं (उस समय का जो आनंद है वह अवर्णनीय है) गोकुल में प्रवेश करते समय जिन २ ग्वालों के स्थान निकट आ जाते थे वे २ अपनी २ गायों को गिनकर साथ ही ले जाते थे। कुँवर कन्हैया के आगमन की बात ज्यों ज्यों फैलती थी त्यों त्यों उत्कंठित गोपियाँ उनके दर्शन के लिये ऐसी त्वरा से भागती थीं कि जिससे उनको अपनें देह और गेह की कुछभी सुध बुध नहीं रहती थी। कोई तो अपनी सखी की वेणी गूंथती उसे अधूरी ही छोड़ भाग कर आजाती थी। कोई स्नान कर वस्त्र धारण करती हुई दौड़ी २ द्वार के निकट आखड़ी होती थी। कोई व्रजवनिता उत्कंठित होकर आती पर द्वार पर सुसरे जेठ को खड़े देख स्वयं लज्जित हो किंवाड़ बन्द कर भीतर खड़ी हुई सन्धियों में हीसे दर्शन कर लोचनों का लाभ ले लेती थी। कोई उन गायों को देख कर प्रणाम करती और कहती थीं कि हमसे तो तुमही बड़ भागिनी हो जो नित्य बन माली के साथ २ रहकर उनके करकमलों से कोमल तृण चरतीं और सेवा कराती हो। कोई उन पर फूल बरसाती कोई चाँवलों की खीलों को फैंक २ सत्कार को जनाती थीं। घर घर के जाली झरोखों में शशिमुखियों के दिव्यस्वरूपों से एक चन्द्रमा क्या अनेक चन्द्रोदयों का अनुभव प्रतीत होता था। इस प्रकार—अनेक रंग राग देखते कृष्ण बलराम नंदरायजी की पौरी पर आये त्योंही रोहिणी और यशोदा ने सन्मुख आ कंचन के थालों द्वारा आरती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उतारी तो दोनोंही ने माताओं को प्रणाम किया। फिर जब भवन में गये तो श्रीयुगल किशोरों को थके हुए जान सुहाते २ ताते पानी से उनके पैर धुलाये। फिर उनकी अलकावली पर गोरज देख बोली कि भैया! आज तो तुमने बहुत ही अच्छी गो सेवा की। ऐसे कह उत्तम आसनों पर बिठाय मुखको चूमती हुई बार बार बलैयां लेती थी। उनके आगमन से प्रमुदित्त हो घर २ से आकर गोपियों का वृन्द वहां एकत्रित हो जाता था। गोपियां रोहिणी और यशोदाजी की दृष्टि बचा २ कर सनकारियों द्वारा ही उनका सत्कार प्रकट करती थीं। इतनेही में गोदुग्ध सम्बन्धी अनेक पदार्थ उपस्थित हुए। माता प्रेम से परोसती भोजन के समय कहती जाती थी मेरे मोहन! दिन भर के थके हुए हो प्रेम से भोजन करो। आप भोजन करते जाते और कलाकंद आदि पदार्थों की बड़ाई करते २ माता के चित का प्रमोद बढ़ाते थे। मैया! मैंने अमृत का नाम सुना है उसको किसने देखा है। फिर माता ने बन यात्रा का प्रश्न किया तो आप बोले मैया! अपने गुरुदेव श्रीगर्गाचार्यजी ने गोसेवा ही को अपना परमधर्म बताया हैं सो उन्हींके कथनानुसार मैं गोसेवामें तत्पर हूं। हम लोग पतित पावनी श्रीयमुनाजीके तट पर खेलते कूदते और गायें चराते हैं। वहां तट पर ऋषि मुनि और महात्माओं के जो आश्रम आते हैं उनके दर्शन करनेसे भी अपूर्व आनन्द हमको प्राप्त होता रहता है।

मैया! तू तो समझती है कि वन में कष्ट हैं पर वहां नाना प्रकार के वृक्ष अपनी अपूर्व छटा दिखा रहे हैं। उनकी डालियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर तोता मैना आदि भाँति २ के पक्षी मीठे शब्द सुनाकर श्रोताओं के चित्तको अत्यन्त प्रमोद दिलाते रहते हैं। कहीं पर मोर नाचते हैं और कहीं पर बंदर इस शाखा से उस शाखा पर कूद फाँद कर अनौखा कौतुक दिखाते रहते हैं। कभी हम सब ग्वाल बाल गेंद बल्ला खेलकर शरीर को बड़ा लाभ पहुंचाने की चेष्टा करते हैं। जननी! मैं सच कहता हूं कि जैसी शीतलमंद सुगन्ध पवन बनमें चलती है उसका शतांश भी आनन्द बस्ती वालों को नहीं मिलता है। अम्ब! जब हम सब बालक कालिन्दी के तीर वाले उद्यानों में चले जाते हैं तो वहां के रक्षक मालाकार लोग नाना-प्रकार के मधुर फल लाकर हमें खिलाते और उत्तमोत्तम पुष्पों की माला गूंथ २ कर हमारा अत्यंत ही सत्कार करते हैं। जब प्रेमभरी बातें सुनी तो प्रसन्न होकर श्रीयशोदाजी बोली कि लाडिली लाल! तुम्हारी गोचारण में ऐसी रुचि रहती है तो मैं अवश्य तुमको बनमें भेजा करूंगी। लाला! अबतो बहुत रात बीत गई हैं तुम भी शयन करो और हम भी दिनभर की थकी थकाई हैं निद्रा लेने जाती हैं। फिर जब प्रभात हुवा तो नंदजी के परिचारक गोपालवर्ग श्रीकृष्णचन्द्र को जगाने के लिये मंगल-मय गीत गाने लगे।

(राग बिलावल)

जागिये गोपाललाल! प्रकटभई हंसमाल,
मिट्यो अंधकाल उठो जननी सुख दिखाई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुकुलित भये कमलमाल कुमुदवृंद बन विहाल,
मेटहु जंजाल त्रिबिध तापनसाईं ।
गैयन भइ बड़ी बार भरि भरिपै थननिभार,
बछरागन करि पुकार तुम बिन यदुराई ॥
तातें अटकपटी दुहन कानसों हँकरि उठि,
आनहुँ क्यों न हरी बोलत बलभाई ।
मुखतें पटकि डारि चंद्र बदन दै उघारि
यशुमति, बलिहारि जलजलोचन सुखदाई ।
धेनु दुहन चले जाइ रोहिणी तब लेबलाइ
दोहनी मुहिदै मँगाइ तब हीं लै आई ।
बछरा थन दियोलगाइ दुहत बैठके कन्हाइ,
हँसत नंदराइ तहां मात दोउभाई ।
दोहनि कहुँ दूधधार सिखबत नंद बार बार
यह छबि नहिं वार पार नंद घर बधाई ।
तब हलधर कह्यो सुनाइ गायन बनचलै लिवाइ
मेवा लीन्हो मँगाइ विविधरस मिठाई ।
जँबत बलराम श्याम संतन के सुखद धाम
धेनुकाज नहिं विराम यशुदा जल ल्वाई ।
श्यामराम मुखपखारि ग्वाल बाल लिय हँकारि,
यमुना तट मनविचारि गायन हँकराई ।
शृंग वेणु नादकरत मुरलीमुख अधर धरत
जननी मनहरत ग्वाल गावत सुरसाई ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृंदावन तुरतजाइ धेनुचरति तृणअघाइ,
श्याम हरषि पाइ निरखि सूरज बलिजाई ।

इधर यशोदा मैया भोर ही उठ टहलनियों के साथ बड़े २ बरतनों में दही को मथने लगी । उस नंद महलमें जो गो दोहन का शब्द होता था सो मानों भादों मास की मेघ गर्जनाकासा प्रतीत होता था । ऐसे ज्यों ज्यों दिनोदय का समय आने लगा त्यों त्यों कहीं तो विप्रघरोंमें से वेद ध्वनि सुनाई देने लगी । अग्निहोत्री गृहस्थ पावकदेव के लिये आहुतियां देने लगे । विष्णुभगवान् वा शिवके उपासक लोग देवद्वारों में जाकर विनीतभाव से प्रार्थना करने लगे । लोग ठौर २ गो दोहनके लिये त्वरा करने लगे । कहीं गायें भाँ भाँ करके बछड़ों को दूध पिलाने का संकेत करने लगीं कोई बछड़ा माँमाँ पुकारता अपने मनोहर शब्द द्वारा गोपालोंके चित्तको प्रफुल्लित करके लगा । इतने में श्रीश्यामसुंदर अरुणोदय बेलाजान शौच स्नानादि से निवृत्त हो उदित हुए श्री सूर्यनारायण के दर्शनकर स्वयं दंडवत् कर अपने साथियों से भी कहने लगे कि मित्रों ! यह हिरण्यगर्भ भगवान् प्रत्यक्ष परमेश्वर है । इनको प्रणाम करने से अनेक अमङ्गलों का नाश होता है ।

यथाः—आदित्यस्य नमस्कारं, ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्रेषु, दारिद्र्यन्नोपजायते ॥

अर्थात् जो प्राणी प्रतिदिन उठकर श्रीसूर्यदेव को १०८ बार दंडवत् करता रहता है उसके पास अनेक जन्मों में भी दारिद्र्य नहीं आ सकता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्रीव्रजराज के ऐसे वाक्यों को सुनकर सभी ने प्रतिज्ञा की कि हम आज से सदैव ऐसा ही किया करेंगे। इतने ही में माता रोहिणी भी वहां आ पहुंची और बोली लाला! मुझे गाय दुहना है सो चलो और तुम इसमें हमें सहायता दो। सुनतेही श्रीकृष्णचन्द्र तुरन्त ही गोष्ठ में जा पहुंचे। वहां कहीं बछड़े को थामा तो कहीं किसे दूध पिलाने में सहायता दी। किसी को पूछा और किसी को पपोला। श्रीमाता द्वारा दोहन क्रिया को देखते और प्रसन्न होतेथे। जिनके मस्तक पर जड़ाऊ मुकुट कानों में कुण्डल गले में गजमुक्ता की माल ऐसे नंदलाल अपूर्व शोभा के सदन थे। अभ्यास करने को चौड़े मुँह वाली छोटीसी दोहनी गोड़ों में दबाकर बड़ी सावधानी से गाय दुहने लगे। जब दोहन क्रिया समाप्त हुई तो माता से कहने लगे मैया! इस भानुमती का बछड़ा इतना दुबला क्यों है? इस सुशीला के शरीर पर आज कल चमक दमक क्यों नहीं है? क्या इसे आज राम सेवक ने पोंछी पपोली नहीं है? फिर आप कहने लगे कि देखरे मनसुखा! गायों को माता समान समझा कर। जैसे माता की सार सम्हाल लेना परमधर्म है वैसे ही इनकी भी सेवा परमावश्यक है। मैं ने तो अपने गुरु महाराज से जो कुछ सुना और निर्णय किया सो तुझे कहता हूं।

गावो मे चाग्रतः संतु गावो मे संतु पृष्ठतः।
गावो मे हृदये संतु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् गायें मेरे आगे पीछे रहें। गायें ही मेरे हृदय में विराजें और मैं गायों में निवास करता हूं। श्रीमहाराज के ऐसे वचन सुन दास ने हाथ जोड़ प्रार्थना की कि कृपा नाथ! आज से मैं विशेष कर दत्त चित्त रहूंगा आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। उस समय के भाषण को सुन प्रसन्न मुखी नंदरानी ने कहा बाबा! तुमतो अभी से ही गायों में ऐसा प्रेम रखते हो तो बड़े होने पर तो न जाने क्या करोगे ? तुम्हारा नाम गोपाल धरा सो उचित ही है। लाला! जैसा तुम इन पर प्रेमभाव दरसाते हो वैसे ये भी कैसे चाव से तुम्हारी बाक्यावली सुन रही हैं। फिर माता ने दिन चढ़ा जान थोड़ासा माखन मिसरी का कलेवा कराया। इस प्रकार प्रतिदिन हँसते खाते गायें चराते और नंद यशोदादि गोकुलवासियों को सुख देते बहुत समय बिता दिया।

जब ग्यारहवें वर्ष का प्रवेश हुआ तो यज्ञोपवीत संस्कार का महोत्सव हुवा। महर्षि गर्गाचार्यजी ने श्रीगायत्री मंत्र की दीक्षा दी थीः—

ॐतत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्,

अन्वयः

तत्, (तस्य) सवितुः, देवस्य, वरेण्यम्, भर्गः धीमहि, यः नः, धियः प्रचोदयात्—श्रीसायण भाष्यम्—(ईश्वरपक्षे)

(यः) सवितादेवः (नः) अस्माकम् (धियः) कर्माणि धर्मादि विषया वा बुद्धीः (प्रचोदयात्) प्रेरयेत् (देवस्य) द्योतमानस्य (सवितुः) सर्वान्तर्यामितया प्रेरकस्य जगत्स्रष्टुः पर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेश्वरस्य (वरेण्यम्) सत् स्वरूपतया ध्येय तयाच भजनीयम् (भर्गः) अविद्यातत्कार्ययोर्भर्जनात् भर्गः स्वयं ज्योतिस्तेजः परब्रह्मात्मकं धीमहि (वयं ध्यायामः) यद् भर्गो धियः प्रचोदयति ततयथंध्यायाम इति समन्वयः ।

विभूतिपक्षे

यदा यः सविता सूर्यः (धियः) कर्माणि (प्रचोदयात्) तस्य (सवितुः) सर्वस्य प्रसवितुः (देवस्य) द्योतमानस्य सूर्यस्य (तत्) सर्वदर्शनीय तया प्रसिद्ध (वरेण्यम्) सर्वैर्भजनीयम् (भर्गः) पापानां तापकं तेजो मण्डलं (धीमहि) ध्येयतया मनसा धारयेम ।

भाषार्थः—जो सवितादेव हमारी धर्मोपार्जन करने वाली बुद्धियों को प्रेरणा करे अर्थात् उत्तम कामों में लगावे । सबश्रुतियों में प्रसिद्ध उस प्रकाश युक्त सर्वान्तर्यामी होकर जगत् के प्रेरक परमेश्वर के सत् स्वरूप और जाननेयोग्य होने से सबके उपासना तथा स्तुति करने योग्य अविद्या और उसके कार्यरूप संसार के भर्जन से स्वयं प्रकाशमान परब्रह्म परमात्मा ज्योतिः स्वरूप का हम ध्यान करते हैं ।

समस्त संसार की आत्मा जो सूर्य देव हैं जो उदय होते ही सब को अपने २ कामों में लगाता है उस भगवान का जो प्रकाश पुन्ज प्रार्थनीय दिव्य तेज है हम सब उस पापों के विनाशार्थ और सब पुण्यों का उत्पादक तेज को ध्याते रहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रकार ब्रजवासी और नन्द यशोदा को सुख चैन देते १६ वर्ष वीतगये। उन दिनों राजा कंस के अत्याचारों से प्रजा वहुत पीड़ित थी। कंस भी रात दिन श्रीकृष्णचन्द्र के अनिष्ट साधन में लगा रहता था। अक्रूरजी के द्वारा उसने श्रीकृष्ण वलरामजी को कपट प्रवन्ध द्वारा मथुरा में बुलाकर उन्हें समूल उखाड़ना चाहा पर "यतो धर्मस्ततो जयः" अर्थात् जहां धर्म वहां जय रहता है इसके अनुसार कंस का विनाश हुआ और श्रीकृष्ण बलदेव आनन्दित रहे।

कंस की मृत्यु के अनन्तर मगध देश का राजा जरासंध वार बार चढ़ाई करके बूढ़े राजा उग्रसेन को सताया करता था। तव यादवों की सहायता से द्वारका पुरी राजधानी हुई। राजा उग्रसेन ने चाहा कि महाराज श्रीकृष्णचन्द्र सिंहासन पर विराजें पर भगवान् यदुराजा के शापका पालन करने को पाट पर नहीं विराजे। आप ही की सम्मति से सब राज काज चलता था। किसी को भी किसी बात का कष्ट नहीं था। उन दिनों एक भौमासुर नाम का वड़ा कामी राजा था। उसने आज्ञा दे रक्खी थी कि भारत वर्षान्तर्गत अंग वंग कलिङ्ग आदि जो देश हैं उनमें से १०० स्त्रियां मैं छाँटकर उनके साथ विवाह करूंगा। उसकी इच्छा थी कि प्रसिद्ध २ देश लगभग संख्या में सो के आसपास हैं उतनी ही स्त्रियां रखकर मानों संसार का सुख भोगूंगा। राजाज्ञा से पहले सोलह सहस्र स्त्रियां एकत्रित की गई फिर उनमें से छाँटकर सो स्त्रियां रक्खी गई। वे सुन्दरियां

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसको नहीं चाहती थीं अतः कारागार में विरुद्ध रहीं। सबने मिलकर श्रीकृष्णचंन्द्र के पास प्रार्थना पत्र भेजा इसपर आपने चढ़ाई करके उसका विनाश किया। सो की सो ही स्त्रियोंने आपको जयमाल पहनाई तो आपने बड़ी कठिनाई से स्वीकार की। श्री महाराज के तो ८ विवाह हुए थे। पहली प्रियतमा श्री राधिकाजी थीं। इनका नियम था कि मैं जन्मभर यमुनातट छोड़कर कहीं चिरकाल का निवास स्वीकार न करूंगी। इसलिये ये जन्मभर व्रजमें ही निवास करती रहीं। श्रीभगवान् समय २ पर यहां पधार जाते और उनका मनोरथ पूर्ण कर दिया करते थे।

श्री भगवान् को गो ब्राह्मण की सेवा करना ही रुचता था। इसी हेतु विश्वद्रोही कंसादि राक्षसों का बध किया। ब्राह्मणों को निहाल करने की साक्षी तो सुदामा चरित्र दे रहा है और उनपर श्रद्धा कैसी थी इसके लिये राजसूय प्रकरण में व्यासदेव ने लिखा है कि "कृष्णः पादावनेजने" अर्थात् राजा युधिष्ठिर के यज्ञ में आप स्वयं ब्राह्मणों के चरण प्रक्षालन के कार्य पर रहे थे। धन्यकृपानिधान ! धन्य ! इसीसे तो आप अवतारों में सर्व श्रेष्ठ माने जाते हो। श्रीकृष्ण महाराज के शासन काल में गायों के लिये निम्नलिखित नियम प्रचलित थे।

(१) गायके पैर कोई नहीं लगा सकता था।

(२) दान में ली हुई गायको ब्राह्मण बेचने नहीं पाता था।

(३) दानमें ली हुई गाय के दूध दही द्वारा अतिथि का सत्कार हुआ करता था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) जङ्गलों में गायों के लिये कहीं कोई रोक टोक नहीं थी।
(५) पशुओं को वृथा कोई मार नहीं सकता था।
(६) वृद्ध व रोगी पशु से कोई काम नहीं लेता था।
(७) भार अधिक नहीं ढोना पड़ता था।
(८) बछड़ों के पोषण पर भी पूरा २ ध्यान रखना पड़ता था।
(९) प्रत्येक गृहस्थ को गाय रखना पड़ता था।
(१०) पशुओं को सप्ताह में एकदिन अवकाश मिलता था।
(११) अंकित बैल की पूरी २ सार सम्हाल रखनी होती थी।
(१२) जवा चींचड़ी बुग आदि जन्तवों से गायों की रक्षा होती थी।
(१३) गोशाला की स्वच्छता पर बहुत ध्यान रक्खा जाता था।
(१४) गोपाष्टमी आदि त्योंहारों पर ब्राह्मणों को उपदेश देना होता था।
(१५) मन वचन और काया से कोई भी गाय को नहीं सता सकता था।
(१६) अंधादि असहायोंके लिये अलग स्थान नियत थे उनको घर घर भटक के अन्नादि का कष्ट भोगना नहीं पड़ता था।

इस प्रकार श्री कृष्णचन्द्र के आधिपत्य में त्रिविध पाप और त्रिविध ताप दबे रहते थे। यादवों की शाखा ५६ कोटि अर्थात् ५६ भागों में विभक्त हुई। इनका परिवार बहुत बढ़ा। यहांतक कि द्वीपान्तरों में भी इनका यशः सौरभ फैलगया।

एक समय दशसहस्र शिष्यों को साथ लेकर महर्षि दुर्वासा द्वारका में आपहुंचे। श्रीकृष्णचन्द्र ने पाद्य अर्घ्यादि से यथोचित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्मान कर उत्तम स्थान पर ठहरा दिया। यादवगण बहुधा वहां जाते और अनेक प्रश्न कर लाभ उठाते रहते थे। एकदिन अनिरुद्धजी ने प्रश्न किया कि महाराज ! आज यहां अनेक यादवों का जमघट है सो कृपाकर हमें गोसेवाका प्रसंग सुनाइये। हमारे पूज्य पितामह पुण्यश्लोक श्रीकृष्णचन्द्र इनका इतना आदर क्यों करते हैं ? राजकुमार का प्रश्न सुन महर्षि बोले कि वत्स ? अच्छा प्रसंग पूछा। इनका नाम गोपाल वा गोविन्द इसी से धरा गया है। इनको गायों से अपार प्रेम है गो ब्राह्मण साधु और वेद इन्हीं की रक्षा के लिये आपने अवतार धारण किया हैं।

प्रासादा यत्र सौवर्णाः शय्या रत्नोज्वला स्तथा।
वराश्चाप्सरसो यत्र, तत्र गच्छंति गोप्रदाः॥

अर्थात् जहां सुवर्ण रचित महल मालिये हैं रत्नजटित पर्यंक पर मनोहर शय्या बिछी हुई है। जहां सुन्दर अप्सरायें नाचती और गाती रहती हैं वैसे दिव्य भवनों में गोदान करने वाले प्राणी रहते हैं।

तुष्टास्तु गावः शमयन्ति पापं, दत्तास्तुगाव स्त्रिदिवं नयन्ति।
संरक्षिता श्चोपनयंतिवित्तं, गोभिर्नतुल्यं धनमस्ति किंचित्॥

अर्थात्—प्रसन्न हुई गायें पाप क्षय करती हैं (दान दी हुई गायें स्वर्ग लोक को ले जाती हैं। रक्षा की गई धन और धान्य की वृद्धि करती हैं इसलिये गायों के बराबर कोई धन नहीं है।

अनिरुद्ध—कृपानाथ ! कोई इतिहास सुनाइये।

दुर्वासा—अयोध्यापुरीके राजा अम्बरीष बड़ा धर्मात्मा था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन दिनों नरान्तक नाम राक्षस पूर्व पापों के कारण सिंह की योनि को पा चुका था। विन्ध्याचल की कंदरा में रहता और समीप आये पशुओं को खाजाया करता था। एक दिन तीर्थ यात्रा करता २ राजा अंबरीष महर्षि गोभिलाचार्य के आश्रम में आ पहुंचा। ऋषि उस समय उद्विग्न थे। राजा ने कारण पूछा तो बोले राजन्! हमारी ब्रह्मसुता गाय अभीतक नहीं आयी। बालक कौत्स अन्य गायों को तो ले आया पर वह नजाने कहाँ रह गई? राजा बोला महाराज! आप निश्चिन्त रहिये मैं जाता हूं:-

गोब्राह्मण के त्राण में तन मन धन का दान।
जो करता उस पुरुष पै तुष्ट हॉय भगवान॥
गाय धर्म का स्तंभ है गाय मोक्ष दिलवाय।
तासों इसका त्राण करिलीजे कीर्त्तिकमाय॥

ऐसे कह राजा ढूंढने चला। आगे जाकर क्या देखता है कि नदी के तट पर गाय और सिंह में विवाद होरहा है। राजा गुप्त होकर सुनने लगा।

ब्रह्मसुता—मृगराज! क्या चाहते हो?
सिंह—तुझे खाना चाहता हूं—
गाय—मैं प्राण देदूं पर घर पर बाल बछड़ा है।
सिंह—संसार में कोई नहीं जो मौत के मुँह में आप ही आजाय।
गाय—मैं सदा सत्पथ पर चलती हूं। विश्वास रख।
सिंह—तू शंकर की शपथ खा।
गाय—मृगेन्द्र! मैं अनेक सौगन्दें खाती हूं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नास्तिकता को मान करि करैन श्रुति विश्वास ।
वह पातक मुझको लगै जोन आउँ तव पास ॥
मातपिता गुरु स्वामिका करै जो नर अपमान ।
वह पातक मुझको लगे खड़ी न रहुँ यदि आन ॥
पुरुष स्वपत्नी को तजै नारि तजै निजनाथ ।
वहै पाप मोकों लगै आउँ न जो तुवहाथ ॥
देते लेते दान में जो कोइ आड़ लगाय ।
वहै पाप मोय लागियो जो नहिं आऊं धाय ॥
गो ब्राह्मण अरु साधु की निन्दा करै उमाय ।
वह पातक मोय लागियो जो नहिं आऊं धाय ॥
विद्या पढ़कर शिष्य को, जो नहिं देवै ज्ञान ।
वह पातक मुझको लगै, यदि न आउँ इसथान ॥
ज़ियत पितर सेवै नहीं, मृतकश्राद्ध तजि देत ।
वह पातक मोय लागियो, जो न आउँ इस खेत ॥
बन्धु वृत्तिको हरण करि जो निज स्वार्थ बनाय ।
बहै पाप मोय लागियो जो न आउँ यहां धाय ॥
परधन परदारा निरत, पर निन्दा दिन रैन ।
वहै पाप मुझको लगै यदि हो अनृत वैन ॥
काम क्रोध मद लोभवश, करै धर्म पथ त्याग ।
वह पातक मोय लागियो, जोन आउँ यहाँ भाग ॥
हित शिक्षा को स्वार्थ वश जो पाखंड बतात ।
वहै पाप मुझको लगे जो न कहूं सच बात ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋण उधार लेकर मनुज देत करै उत्पात।
वह पातक मोय लागियो, आउँन पूर्व प्रभात॥
राजा होकर प्रजा की करै न सार सम्हाल।
वहै दोष मुझको लगे, जो न आउँ तत्काल॥
पाय संपदा कृपण हो दान धर्म नहिं चाय।
वहै पाप मोय लागियो आउँन वत्स चुँखाय॥

इतने वचन सुन सिंह प्रसन्न हो बोला। जा और काम कर के झट आ। फिर क्या था गाय तो आश्रम की ओर दौड़ी और सिंह गुफा में धसा। राजा इन बातों को सुन बड़ा प्रसन्न हुवा। फिर मनमें सोचा कि गाय तो निर्विघ्न पहुंच गई। ऐसा अवसर चूकना ठीक नहीं ऐसा सोच विचार कर गुफा के पास जाकर जय जय महादेव बोला।

सिंह—प्रतिध्वनि से चौंककर गर्जना करता बोला तुम कौन हो?

राजा—मैंअयोध्या का नगररक्षक अम्बरीष हूं।

सिंह–यहां कैसे आये?

राजा–गो रक्षा के लिये।

सिंह–गाय को कौन मारता है?

राजा–जो विश्व का अहितैषी हो।

सिंह–तो हमारा पेट कैसे भरे?

राजा–जहां रक्त गो का गिरे तहँ अपार दुख होय।
ता सों मोकूं खाइये रोकूं पुनि पुनि तोय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गऊ मांस संतत कुपथ पीनसादिरुज देय ।
दुर्जर लखि शुभ जीव इहिं सपनेमें नहिं सेय ॥

गाय-मृगराज ! उपस्थित हूं ।

सिंह-अब मैं तुम्हें नहीं खासकता ।

गाय-(मन ही मन प्रसन्न होकर अरे ! ऐसा उग्रभागी कौन है) प्रकट कारण बतावो ।

सिंह-तुम्हारेपीछे एक मनुष्य आया उसने गोमांस खाना बड़ा पाप और अत्यंत हानिकारक बताया जिससे मेरा मन उचट गया ।

गाय-तो मेरी प्रतिज्ञा झूठी होगी ?

राजा-देवि ! जब क्षत्रियका पुत्र सम्मुख खड़ा है भला तुझे कैसे मरने देगा ?

सिंह-मैं मृगेन्द्र हूं थाप मारे विना नहीं खानेका ।

राजा—मैं भी नरेन्द्र हूं बिना लड़े पीठ नहीं दिखाने का ।

दोनों द्वन्द्व युद्ध करने लगे । ज्यों ही राजाके शरीरका स्पर्श हुवा त्यों ही उसकी काया पलटगई और चित्रसेन गंधर्व का सा रूप धर बोला ।

चित्र—राजन् ! आज अच्छा सूर्य उगा ।

राजा—आश्चर्य में आकर क्षमा करो ।

चित्र—मैं पूर्व जन्म में गन्धर्व था । भूल से गोनिन्दा मुझसे बन आगई तो प्रथम जन्ममें नरान्तक नाम राक्षस बना । दूसरे जन्म में सिंह बना । महात्मा नारदजी से उन्हीं दिनों शाप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को अन्त पूछा तो उन्होंने कहा था कि तुझे परम हरिभक्त राजा अंबरीष के दर्शन होंगे तब तेरी योनि पलटेगी।

श्रीमती गायों के लिये नमस्कार! स्वर्गकी कामधेनु के लिये नमस्कार। श्री ब्रह्मसुताओं के हेतु नमस्कार। ऐसी परम पवित्र गायों के लिये नमस्कार हैं।

इस प्रकार अनिरुद्धादि राजकुमारोंने महर्षि दुर्वासा द्वारा अम्बरीषोपाख्यान सुन बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। फिर बोले महाराज! निस्संदेह गायों की महिमा अवश्य कल्याणकारिणी है। अब एक प्रार्थना है कि आपका यहां जो शुभागमन हुवा है उसको चिरस्थायी करने के लिये कुछ नियम वना दीजिये कि जिनके पालनसे हमारा कल्याण होता रहै ऋषिबर बोले तथास्तु।

विप्रो वा क्षत्रियः किंवा वैश्यो वा शूद्र एववा।
यथाशक्ति प्रतिगृहम् पालयेद् गांनिरन्तरम् ॥ १ ॥

अर्थात्—ब्राह्मण हो वा क्षत्रिय हो वैश्य हो भावै शूद्र हो। प्रत्येक घरमें यथाशक्ति गायको सदैव पालनी चाहिये।

यादबानांच राज्येऽस्मिन् मनोवाक्कायकर्मभिः।
पीडयिष्यतियः कोऽपि गां स दण्ड्यो भविष्यति ॥

इस यादवों के राज्यमें मन वचन काया और कर्म से जो कोई गाय को पीड़ा पहुंचावेगा वह दण्डनीय होगा।

क्षेत्राधीशोऽथग्रामेशः सम्राट् सामन्त एववा।
गवांहिताय सर्वोऽपि त्यजेद् गोचरभूमिकाम् ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चाहे खेत का स्वामी हो वा ग्रामेश हो वा चक्रवर्त्ती हो वा एक देशाधिपति हो सभी को गायों के कल्याण के लिये गाँव में गोचर भूमि छोडनी चाहिये।

यागौः प्रतिग्रहेदत्ता तस्यादानंतु युज्यते ।
क्रयकर्त्ता च विक्रेता द्विगुण दण्डमर्हतः ॥

जो गाय दानमें दीगई हो उसका उसका स्वामी (प्रतिग्रहीता) दूसरे को फिर दान दे सकता है। पर उसको बेच देवे तो बेचने वाला तथा मोल लेने वाला दोनों दण्ड के अधिकारी हैं।

गवांवंश विवृद्ध्यर्थं वृषोत्सर्गे विधिःस्मृतः ।
अत स्तस्य प्रचारोऽपिगोदानाच्छ्रेष्ठउच्यते ॥

गायोंका वंश बढ़ानेके लिये वृषोत्सर्ग (बैलको आँकना) किया जाता है इसलिये इसका प्रचार गोदानसे भी बढ़कर माना गया है।

गोरक्षार्थंच सर्वत्र गोशालाः स्थापयन्तुवै ।
यत्रा नाथाश्च रोगिण्यो गावः सुख मवाप्नुयुः ॥

प्रति ग्राम और नगरोंमें गोशालाओंको निश्चय स्थापन करो जहां पर अनाथ किंवा रोगिणी गायें निवास करके सुखको प्राप्त होती रहें।

ब्राह्मणो वा नृपालोवा वैश्यो वा शूद्र एववा ।
सर्वोऽपि गो हितार्थाय दद्याद्वित्तं यथोचितम् ॥

ब्राह्मण हो वा राजा हो वैश्य हो किंवा शूद्र हो। सभीको उचित है कि गायोंके कल्याण के लिये यथा योग्य धनदान किया करें।

मनुष्याणां हितार्थंहि पशुसृष्टिः प्रवर्त्तते ।
अतस्तेषां प्रियंकृत्वा नरश्चानृण्यमृच्छति ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यों के उपकारार्थ ही पशुवों की सृष्टि की गई हैं अतः पशुओं का पालन करे तभी मनुष्य पशु ऋणसे छुटकारा पाता है।

सोमवारे गवांप्रीत्यै बुगां श्चिचिडिकां स्तथा।
गो शरीरा च्च गोपालो धृत्वादूरे परित्यजेत्।

गवाल का काम है कि सोमवार के दिन गवों के लाभार्थ बुग चींचड़ी और जवा आदि जो दुःखदाई जंतु हैं उनको उसके गोवर में लपेट कर दूर करे।

वृद्धं कृशंरोगिणंवा वृषंयः शकटादिषु।
नियोजयतिलोभेन सोऽवश्यं दण्ड मेष्यति॥

जो कोई बूढ़े दुबले वा रोगी बैल को गाड़ी आदि में लोभ वश जोतेगा वह अवश्य दण्ड को पायगा।

कार्यं नीत्वा च वृद्धत्वे यः कोऽपि स्वपशुं त्यजेत्।
सोऽप्यवश्यं नृपालेन दण्डनीयो भविष्यति॥

जीवन पर्यंत घरका काम कराके बुढ़ापे में जो कोई अपने पशुको छोड़ देता है वह भी अवश्य राजा द्वारा दण्डित होगा। पशुपालन का व्यय उसके स्वामी से राजा संस्था को दिलावे।

प्रतिमासममावास्या राका चैकादशी तथा।
पशूनामवकाशाय निर्दिष्टा धर्मशिक्षकैः॥

प्रत्येक महीने में अमावस पून्यों तथा २ एकादशियें त्योंहार ऐसे ये ६ दिन खेती बाड़ी आदि से पशुओं को अवकाश मिलना चाहिये ऐसा धर्मशिक्षकों का कहना है (इस प्रकार गोमाहात्म्यका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रसंग चलरहा था कि वहां श्रीकृष्णचन्द्र भी पधार गये। आपने संवाद को सुना और वड़े प्रसन्न हुए)

श्रीकृष्ण महाराज–थोड़ेसे वेदमंत्रों द्वाराभी गोमहत्त्व वताइये?

दुर्वासा—तथास्तु।

येन देवाः पवित्रेणा त्मानं पुनते सदा।

तेन सहस्रधारेण पावमानीः पुनन्तुनः॥ सा। उ। १। ५॥

भाषार्थ—(देवाः) देवता लोग (येन) जिस (पवित्रेण) पवित्रता के देने वाले ज्ञान ध्यान वा गो दान से (सदा) निरन्तर (आत्मानम्) अपने को (पुनते) पवित्र करते हैं (तेन) उस (सहस्रधारेण) सहस्रों धारवाले गोदान किं वा विद्यादान से (पावमानीः) पवमान देवता सम्बन्धिनी स्तुतियां (नः) हमको (पुनन्तु) पवित्र करें।

सं सिंचामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।

संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ॥ अथ ॥ ४।२६

भाषार्थः—हे देव! (गवाम्) गायों के (क्षीरम्) दूध को (समाज्येन) उत्तम घृत के साथ (संपातयामीतिशेषः) भलीभांति से मिलता हूं तथा उस आज्य के साथ (बलम्) अन्न और (रसम्) रसको एकत्रित करता हूं ऐसे (संसिक्ताः) मिश्रित पदार्थ अग्नि में समर्पित होकर श्रीभगवान् के प्रीत्यर्थ होवै तथा यज्ञावशिष्ट स्निन्धान्न भोजी (अस्माकम्) हमारे (वीरा) भाई व पुत्र पौत्रादि संतान (ध्रुवाः) दृढ़ गात्र होवें (मयि) मेरे (गोपतौ) गोपाल होने पर (गावः) गायें हृष्टपुष्ट और सदा प्रफुल्लित बनी रहें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुरूप कृत्नु मूतये सुदुघामिव धेनवः ।
जुहूमसि द्यवि द्यवि । सा । उ । अ ७ । १ ।

भाषार्थः—हे मनुष्यों ! (सुरूपकृत्नुम्) सुन्दर स्वरूप युक्त कर्मके कर्ता इन्द्रदेव को (ऊतये) रक्षार्थ (द्यविद्यवि) प्रतिदिन (जुहूमसि) बुलाते रहते हैं जैसे (गोदुहे) गायों को दुहने के लिये (सुदुघाम्) सुन्दर दूध देने वाली गाय को पुकारा करते हैं (इव) वैसे हमभी इन्द्र देवको पुकारते रहते हैं ।

उपनः सवनागहि सोमस्य सोमपाः पिव ।
गोदा इद्रेवता मदः॥ सा । उ । अ । २ ।

भाषार्थः—(सोमपाः) सोमरस के पीने वाले इन्द्रदेव ! (सोमस्य) सोम के रस को (पिव) पान करो (नः) हमारे (सवनाः) तीनों सवनों के (उप) समीप (गहि) आइये (रेवतः) धनयुक्त आपका (मदः) हर्ष गोदाइन् (गायों ही का देने वाला हुवा करता है ।

त्वमीशिषे पशूनां पार्थिवानां ये जाता उतवा जनित्राः ।
मेमं प्राणोहासीन्मा अपानो मेमं मित्रा वधिषुर्मो अमित्राः
॥ अ । ५ । २८ । ३ ॥

भाषार्थः—हे अग्नि देव ? (त्वम्) तू (पार्थिवानाम्) पृथ्वी में उत्पन्न हुए (पशूनाम्) गो आदि पशुओं के (ईषिशे) स्वामी हो (ये) जो (जाताः) उत्पन्न होगये (उतवा) अथवा (ये) जो (जनित्राः) उत्पन्न होंगे (मा) मत (इमम्) इसे (प्राणः) प्राणवायु (अहासीत्) छोड़े (मा) मत (अपानः) अपान वायु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छोड़ने पावे अर्थात् दोनों ही वायु इनकी रक्षा किया करें। (मा मत इमम्) इसे (मित्राः) मित्र लोग (वधिषुः) मारने पावें और (मा) न कभी (अमित्राः) शत्रु लोग भी इनको कष्ट पहुँचा सकें।

ऐसे महर्षि के वाक्यों को सुनकर सब श्रोतागण बड़े प्रसन्न हुए। फिर श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द व अक्रूरजी तथा अनिरुद्धादि सभी यादववृन्द महर्षि दुर्वासाजी का यात्रार्थ संकल्प जान उन्हें उदकान्त पहुंचा कर श्रीद्वारकापुरी में आकर धर्म पूर्वक गो ब्राह्मण की रक्षा और प्रजापालन में तत्पर रहने लगे इतिशम्।

॥ ओं शांतिः शांतिः शांतिः ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ओनमः शिवाय ॥

अथ श्रीवीरशिरोमणि पाबूजी राठोड़ का चरित्र ।

चतुर्थ प्रकरण

नारिनेहसरिधारमेंड्बे अगणितवीर ।
इक पाबू राठौरही पार पहुंचगे चीर ॥

राजपूताने प्रान्त में जहां अनेक क्षत्रियों के प्रताप शाली विभिन्न गोत्र हैं उनमें राठौर वंश भी अपने गौरवसे दिगन्तकीर्त्ति कई बार हो चुका है । इसमें अनेक शाखा हैं उनमें धाँधल गोत्र ने बड़ी महिमा पाई हैं। मारवाड़ में पलौधी परगणे में लूनागढ़ ग्राम है वहां विक्रम संवत् १३०० के आस पास धर्मवीर पाबूजी का जन्म हुवा था। इनके पिता का नाम धाँधलजी था। माता रतन कुँबर और बहन प्रेम कुंवर थी । इनके ज्येष्ठभ्राता बूड़ाजी बड़े प्रतिष्ठित और ग्रामाधीश थे। पाबूजी को जन्मसे ही शस्त्र विद्या से बड़ा प्रेम था। जब ये बड़े हुये तो इनको घोड़े चढ़ने की बड़ी रुचि रही। इनके १ परम मित्र था जिनका नाम गोगाजी था। इन दोंनों ही के शिव पार्वती का इष्ट था। दिनको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये शिव पूजन करते और रात के समय दुर्गाजी का आराधन किया करते थे। एक समय दोनों ही वीर विचार करके श्री पुष्करराज की यात्रा को चले। यहां आकर स्नान दान कर बड़े प्रसन्न हुवे। जब देव दर्शन से निवृत्त हो ये प्रदक्षिणा करने जा रहे थे मार्ग में इनकी एक योगी से भेट हुई। दोनों ने झुककर प्रणाम किया और योगी ने जय का आशीर्वाद दिया।

योगी—आप कौन हैं?

पाबू—महाराज? हम क्षत्रिय हैं।

योगी—क्षत्रिय किसे कहते हैं?

पाबू—आपही बताइये?

योगी—जो प्रजा को क्षत अर्थात् घाव से बचावे।

पाबू—जो आज्ञा।

योगी—तीर्थ में क्या प्रण किया?

पाबू—महाराज? अमाबस पून्यों और दोनों एकादशियों में मद्य मांस और आखेट का त्याग।

योगी—बहुत अच्छा।

पाबू—कृपानिधान? अमरहोने का कोई उपाय बताइये?

योगी—गो ब्राह्मण की रक्षा करो। वेद शास्त्रों के सारभूत रामायण महाभारत भागवत और गीतादि अच्छे पुस्तकों को पढ़ो और सुनो।

पाबूजी—जो आज्ञा (इस प्रकार प्रतिज्ञा कर कुछ दिन ये तीर्थ तट पर ही टिके रहे) संयोगवश इन्हें एक अच्छा कथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यास मिल गया। उसकी अच्छी सेवा शुश्रूषा करके उसे अपने गाँव लेगये। एक दिन पाबूजी ने प्रश्न किया कि महाराज ! मुझे गोरक्षा से बड़ा प्रेम है कोई उपाख्यान महाभारत में से हो तो मुझे सुनाइये। व्यासजी बोले सुनो।

एक समय कौरवगण सभा में बैठे बातचीत कर रहे थे तब दुर्योधन ने कहा कि भाइयों ! १२ वर्ष अपने आनंद से बीत चुके। १ वर्ष अज्ञातवास का भी पूरा होने आया है। यदि ऐसी ही दशा में उनका पता ठिकाना लग जाय तो १२ वर्ष के लिये फिर छुट्टी मिलजाय। इस पर अन्यतो सब चुप रहे पर त्रिगर्त्ताधिपति सुशर्मा बोला कि विराट राजा के यहां कुछ सुलसुल जान पड़ती है। अर्जुन का यह प्रण हैं कि अन्य किसी कार्य में विलम्ब कर दूं पर गो और ब्राह्मण के काम में क्षण भर का विलम्ब भी मुझसे सहा नहीं जाता। सो चलो वहां से गायें हर लावें सब भेद आपही खुल जायगा।

तब द्रोणाचार्य बोले यही नहीं किन्तु जहां पाण्डव होंगे वहां ये बातें भी रहेंगी

गावश्च बहुला स्तत्र न कृशा नच दुर्बलाः।
पयांसिदधि सर्पींषि रसवंति हितानिच॥
गुणवन्तिच पेयानि भोज्यानिरसवंतिच।
तत्र देशे भविष्यंति यत्र राजा युधिष्ठिरः॥

अर्थात् जहां राजा युधिष्ठिर होंगे वहां गायें बहुत मिलेंगी। उनमें न कोई कृश होंगी और न दुबलीं। दूध दई और घृतादि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पदार्थ वड़े स्वादिष्ठ और हित कारक होंगे। पीने के पदार्थ भी गुण कारक होंगे। भोजन की सामग्रियां भी उत्तम होंगी इत्यादि सभी बातों का वहां आनदं होगा। ऐसे नाना प्रकार के तर्क के पश्चात् कृष्ण पक्ष की अष्टमी की रात को जाकर कौरवी सेनाने विराट राजा के समग्र गोधन को हरण कर लिया। प्रभात होते ही गोपालोंने सूचनादी तो राजा बड़े भारी संकोच में पड़ गया। राजा को उदास जान कंकादि परिचारक वर्ग ने बड़ी ढाँढस बँधाई तब जाकर राजा के जीव में जीव आया

फिर प्रभात होते ही राजा विराटने किरीट कुण्डलादि आभूषणों को धारण कर कवच और शिरस्त्राण पहना। ढाल तलवार शक्ति तोमर भाला आदि युद्ध सामग्री को पास ले रथ में जा विराजे। राजा के साथ कई घोड़ों पर कई गो रथों पर और कितनेक पैदल ही साथ हो लिये। राजभ्राता शतानीक सेनापति बने। यात्रा करते समय नगर के नरनारिंयों ने पुष्पवृष्टि करके शुभ शकुन जनाये। शंख ध्वनि के साथ सेना विदा हुई। थोड़े समय में मत्स्य देश की सेना ने त्रिगर्ताधिपति की सेना का सामना किया। फिर क्या था दोंनों दल भिड़गये। हाथीवाला हाथी से घुड़ सवार घोड़ेवाले से रथी रथी से और पैदल पैदल से लड़ने लगा। दोनों और की बाणवृष्टि और घमसाण युद्ध की रज से परस्पर के मनुष्यों का मुख दिखना बंद होगया। कोई तलवार चलाता तो कोई खाँडे का वार करता कोई दाँतपीसता भाले की नोक से ही शत्रु का संहारकर अपना हृदय ठंड़ा करता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था थोड़े से समय में पृथिवी रक्त वर्ण होगई। कहीं रुण्ड पड़े हैं तो कहीं मुंड ही मुंड दिखाई दे रहे हैं। कहीं हाथ कटा पड़ा है तो कहीं कोई पैर छटपटा रहा है। गिद्ध आदि मांस भक्षक पक्षी वहां आकर मृत शरीरों के मांस नोच २ कर खारहे हैं। उपरोक्त दृश्य को देख अरुचि प्रकट करते हुए मानों भास्कर देव अस्ता चल की ओर सिधारहे हैं। धीरे २ अंधकार ने प्रवेश पाया और सैनिकों को मानों रात्रि भगवतीने विश्राम करने को अवकाश दिया।

प्रभात होते ही स्नान संन्ध्या से निवृत्त हो भोजन कर सेना पतियों ने रण वाद्य बजाया। सुनते ही दोनों दल फिर जुटगये। घमसाण युद्ध होने लगा। इधर राजा सुशर्मा और उधर राजा विराट थे। द्वन्द्व युद्ध की ठहरी। राजा सुशर्मा बड़ा दक्ष था। बात ही बात में विराट को पराजित कर पृथ्वी पर गिरा दिया गिरते ही राजा अचेत होगये। घायल को सैनिक लोग अपनी शिविर में लेगये और सुशर्मा विजयके मदसे प्रफुल्लित हो निर्भय विचरने लगा। राजा के ऐसे साहस को देख विराट की सेना के लोग तीन तेरह हो गये (सेना को हताशजान राजा युधिष्ठिर ने भीमसेन से कहा कि भाई ! अपनी विद्यमानता में राजा की यह दशा नहीं होनी चाहिये (बड़े भ्राता के वचन सुन भीम बोला आप किसी भी बात की चिन्ता न करें मैं इकला ही सब काम करदूंगा आप तो मेरे पृष्ठपोषक रहिये। फिर श्रीगणेशजी को मना कर सब भाँति सुसज्जित हो भीमसेन आगे बढ़ा भीम को देखते ही राजा सुशर्मा भयभीत होगया पर वह भी साधारण पुरुष नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

था। साहस करके आभिड़ा। दोनों में बाणवृष्टि होने लगी। इधर नकुल सहदेव सहित राजा युधिष्ठिर भी सेना सहित आ पहुंचे। दोनों दलों में घनघोर युद्ध हुवा विराट की सेना ने बात ही बात में कौरवी सेनाके दाँत खट्टे करदिये (सुशर्मा बड़ा दक्ष था उसने भीमसेनके रथ को ढकदिया। इधर सावचेत होकर राजा विराट भी वहां आ पहुंचा। भीमसेन ने कहा आप अन्य लोगों के साथ लड़ो इसे तो मैं ही सीधा करूंगा यों कह तुरन्त उसके रथ में जाघुसा। राजा उतर कर भागने लगातो झट उसके झोंटे पकड़ नीचे देमारा और बोला कि क्या ऐसे ही बल के भरोसे गायें छीनी जाती हैं? अब उठो और द्वन्द्व युद्ध करो। जब वह खड़ा हुआ तो तुरन्त ही उसे गिरा दिया और छाती पर चढ़ बोला कि अब इष्टदेव का स्मरण कर एक ही घोंसे में तुझे यमलोक भेजता हूं। राजा सुशर्मा भयातुर हो जब मूर्छित होगया तब उसे रथमें पटक महाराज युधिष्ठिर के पास लेगये। राजाके सचेत होने पर कहा कि विराट राजा की आज्ञा से तुम्हें प्राण दान दिया जाता है। तब भीमसेन बोला महाराज! इससे यह प्रण करावो कि काम पड़ने पर धर्म का पक्ष करे अधर्म का नहीं। सुशर्मा नीचे मस्तक किये खड़ा था इससे युधिष्ठिर महाराज को दया आगई उन्होंने तुरन्त उसे छोड़ दिया। लज्जित मुख होता हुआ प्रणाम करके चुपचाप वहां से विदा हो गया। इसके उपरान्त राजा विराट सेना सहित पुर को लौटे। नगर में बड़ा भारी उत्सव मनाया गया प्रजा ने पुष्पों की वृष्टि की राजसभा में पहुचते ही विराट ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने सरल स्वभाव से जब सबके सामने स्पष्टतया प्रकट किया कि मेरे मित्रों ! यह जो विजय प्राप्त हुवा है उसमें विशेष श्रेय पाण्डवों के परिचारक वर्ग जो मेरे पास रहते हैं उनकी गोभक्ति का ही यह फल है।

सुशर्मा के समाचार सुन राजा दुर्योधन वड़ा उदास हुवा। इसने पितामह भीष्म द्रोण और कर्णादि महारथियों को विराट की गायें घेरने का फिर हल्ला बोल दिया। गोपालों ने राजपुत्र भूमिंजय से पुकार की कि आपकी गायें कौरव घेर लेगये। राजकुमार कुछ वाक्शूर था। उसने क्रोधावेशमें आकर कहा कि अभी थोड़े ही दिन पहले मेरा अच्छा सारथि मरचुका है नहीं तो अभी ही करके कुछ दिखला देता। गुप्तवेश धर अर्जुन वहां ही खड़ा था उसने संकेत से द्रोपदी द्वारा कहलाया कि आपके यहां जो यह वृहन्नला रहता है वह सारथि का काम अच्छा कर सकता है। राजकुमार भूमिंजयतो सोच विचार करने लगा इतनेमें उत्तरकुमार बोल उठा कि सैरन्ध्रि ! क्या नपुंसक भी संग्राम में जाया करते हैं ? इसपर द्रोपदी बोली कि लड़की को पढ़ाते समय कुछ लड़ाई भिड़ाई की बातें भी यह चलाता रहता है सो सब बात चौड़े आजायगी। राजपुत्री ने अपने भाई का हित जान तुरंत ही नाट्यशाला के समीप खड़े हुए वृहन्नला से बोली।

कौरव हमरे राज्य का गोधन छीनत जात।
उनको जीतन के लिये भ्राता मोर सिधात॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सारथि चहिये साथ में सुघड़ तुह्मार समान।
सैरन्ध्री के कथन से भेजी तुम्हें बुलान ॥

राजकन्या के बचन सुन वृहन्नला बोला कि हम तो राज-सेवक हैं चाहो सो काम लेलो। पर मैं वहां जाकर क्या करूंगा तब उत्तरकुमार बोलाः–

वृहन्नला तू इस समय गान बजावन त्याग।
श्रेष्ठ हयों का जोड़ रथ मोऽँग द्रुतगति भाग ॥

कुमार के बचन सुन वृहन्नला उलट पुलट कवच को पहन साथ होने लगा। इस कौतुक को देख अन्तःपुर की स्त्रियां हँसने लगीं। राजपुत्रने युद्धोपयोगी वेश बना ढाल, तलवार, धनुषबाण आदि अस्त्र शस्त्र ले सेना सजाय नगरसे विदा हुआ। प्रस्थान करते समय राजकुमारी बोली कि आप रणमें जाते हो सो वहां योद्धाओं को जीता उनके उत्तमोत्तम वस्त्रों को अवश्य कतरलाना क्योंकि मेरे गुडिया बनाने को कौशेय वस्त्र चाहिये हैं। इसपर वृहन्नला बोला कि बाई! युद्ध जीतना तो राजकुमार का काम है और कपड़ा कतरना तुम कहती हो सो जो होगा सो मैं लाऊँगा। इस प्रकार हास्य विनोद कर वृहन्नला इष्टदेव को मनाय दिव्य रथ का सारथि बन उसे हाँकने लगा। बात ही बात में वृहन्नला ने रथको डपटा कर कौरवी सेना के समक्ष खड़ा कर दिया। आमना सामना होते ही उत्तरकुमार दंग रहगया। असंख्यतो कौरवी सेना और उनके भी प्रमुख भीष्मादि महारथियों को देखकर उत्तरकुमार का मुख फीकासा पड़गया। फिर गिड़गि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ड़ाते स्वरसे कहने लगा कि भाई वृहन्नला ! इन्हें देख मेरा साहस तो कपूर के समान उड़ता चला जारहा है। तव वृहन्नला ने उत्तर दिया कि कुमार ! रणवासमें तो बड़ी २ डींग मारते थे यहां अब क्या होगया है संग्राममें क्या खीर पुड़ी परसी रहती है ? अब मैं क्या करूं ? पीछे चलें तो सब रणवास हँसेगा—इस पर उत्तरकुमार बोला—

चाहै नारी गण हँसो चाहै पिता डराय ।
राजपाट सब संपदा कल जाती अभिजाय ॥
गायें फिरभी छीनलो मेरा मन यह च्हाय ।
अलख ठौर जाकर छिपूं तब मन स्थिरता पाय ॥

ऐसे कह रथ से उतर कर भागने लगा। सेना के लोग ऐसा कौतुक देख हँसते और कहते थे वाह २ कैसा अद्भुत खेल हैं ? कोई कहता यह सारथितो अर्जुन ही दिखाई देता है ? कोई कहता जो होगा सो चौड़े आयगा चलो काम करो। राजकुमार को भयभीत जान वृहन्नलाने बहुत कुछ समझा बुझा कर इस बात पर खड़ा किया कि युद्ध वृहन्नला करे और राजकुमार रथ हाँके। इस प्रकार के समाचार सुन भीष्मजी बोले कि महाराज ! आज यह क्या हो रहा है ? अकस्मात् ही आकाश में धूल छारही है। तलवारें खिसी जारही हैं ऐसे उत्पात देख जान पड़ता है कि आज कोई भारी उत्पात होने वाला है ? तब द्रोणजी बोले—

नदीज ! लंकेशवनारिकेतुर्नगाह्वयो नाम नगारिसूनुः ।
एषोऽङ्गना वेशधरः किरीटी जित्वा वयं नेष्यति चाद्य गावः ।
वि० अ। ३९ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् हे गोगेय ! रावण के बनको विध्वंस करने वाले हनूमानजी की ध्वजावाला * अर्जुन वृत्त का नाम राशि और इन्द्र का पुत्र यह स्त्री वेशधारी किरीटी (अर्जुन) अपने को जीतकर आज गायें लेजावेगा यदि कोई रक्षा का उपाय हो तो करो। इसने किरात वेशधारी देवाधि देव महादेव को प्रसन्न करके विजय का वरदान पाया है। देवराज इन्द्र इसका संरक्षक है दीर्घ काल के वनबास जनित क्लेशों से खिन्न होकर वैरनिर्यातन के लिये अदम्य साहस को काम में लाता हुवा निःशङ्क आरहा है आप इसे देखिये। आचार्य के ऐसे वचन सुनते ही कर्ण जल भुन कर राख होगया, और निःश्वास फेंकता बोला

अर्जुन की स्तुति गानकर हमें डरावो नाहिं।
दुर्योधन होगा जयी दृढ़ता है मन माँहि।

कर्ण के ऐसे श्रवण प्रिय वाक्य सुनकर दुर्योधन बोला कि मित्र ! यदि यह अर्जुन हो तो फिर इसे वनवास भेजने का प्रयत्न करना चाहिये। इस पर सबने उत्साह वर्धक वाक्य कह कर राजा को प्रसन्न कर दिया।

इधर बृहन्नला ने उत्तर कुमार से कहा कि भद्र ! आपके पास जो अस्त्र शस्त्र हैं उनसे इन महॉरथियों के साथ युद्ध नहीं कर सकते। यह जो पासही खेजड़ी खड़ी है उस पर पाण्डवों के शस्त्र धरे हुवे हैं चलो उन्हें ले आवें। इस पर कुमार बोला कि

* देखिये आजसे ५ सहस्र वर्ष पहले भी हनुमानजी की पूजा होती रहती थी जो अर्जुन के रथ उपर उनका चित्र अंकित था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुझे तो मृत प्राणियों की खोपड़ियांसी दीखती हैं तुमही जावो। वृहन्नला जैसे तैसे समझा बुझाकर उसे साथ लेलिया और वहां जाकर अपने शस्त्रोंको लेकर तुरन्तही रणक्षेत्रके समीप आपहुंचा।

महादानी कर्ण और राजा दुर्योधन रथारूढ़ अर्जुन को देख कर आश्चर्य सागर में गोते खाने लगे । जब कौरवाधिपति चिन्तातुर हो सोच विचार करने लगा तो कर्ण ने बड़ी २ डींगें हाँकी। इसपर अन्य सब तो चुप रहे पर आचार्यपुत्र अश्वत्थामा बोल उठे कि अङ्गराज सदा राजा को कुबुद्धि सिखाकर ही ऐसे कलहोत्पादक समय उपस्थित करते रहते हो । सभासदों का कर्त्तव्य है कि राजा को अच्छी सम्मति दिया करें और नरपति का धर्म है कि राग द्वेष छोड़ उनकी बातपर ध्यान दिया करें।

देखिये स्मृतियां क्या कहती हैं ?

ब्राह्मण वेदाभ्यास करि, यज्ञ करैर कराय।
दान लेय अरुदेत रह तव वह सत्फल पाय॥
क्षत्रिय सीखै युद्धगति याजकता नहिं चाय।
प्रजा सम्हालै पुत्र सम तब सुख संपति पाय॥
वैश्य न्याय से द्रव्य पा करै बहुत उपकार।
तवही जीवन धन्य है गावै गुण संसार॥
शूद्र त्रिवर्ण हिंसेय कर उत्तम गति को पाय।
मर्यादा के त्याग से चक्र तुल्य भ्रम खाय॥
सुतके समही शिष्य प्रिय अस विचार मम तात।
अर्जुन के गुण को कहो कर्ण ! न दूसरि बात॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रिपुके गुण को लीजिये तजिये गुरुके दोष ।
पुत्र शिष्य दोउ तुल्य गिन चतुर लहैं संतोष ॥

दुर्योधनः-हे गुरु ! हे आचार्यसुत ! क्षमा करो अपराध ।
समयोचित साहाय्यदे काटो मोरि उपाध ॥

राजा के ऐसे विनीत वचन सुन द्रोणाचार्य बोले कि हेवीर पुरुषों ! इस समय अपना परम कर्त्तव्य है कि राजा की रक्षा करो। १३ वर्ष के कष्ट से खिन्न होकर अर्जुन इस पर वार नहीं करै इस बातको कदापि मत भूलो। महामति भीष्मपितामह ने भी आचार्य की बात पुष्ट करते हुए कहा कि ऐसी व्यवस्था हो कि चौथाई सेना राजा के साथ रहे चौथाई गायों की रक्षा करे और शेष भाग हमारे साथ रहकर अर्जुन से युद्ध करे ऐसा व्यूह रचो कि जिस में राजा सुरक्षित रहे। सभीने पितामह की आज्ञा को मानली और सभी कौरवीसेना यथावस्थित जमकर लड़नेको सावधान होगई। महावीर अर्जुन अब कौरवदल के सम्मुख उपस्थित हुआ। आते ही अर्जुन ने दृष्टिपसार कर देखा तो राजा को वहां नहीं पाकर सारथिको आज्ञा दी कि चलो निस्संदेह वह पापात्मा समरक्षेत्र को छोड़ दक्षिण की ओर से गायों को लेकर जारहा होगा पहले उसीसे जाकर मुठभेड़ करूं। उत्तर कुमारने रथ को दौड़ाया वह तुरंत ही सेना को चीरता हुआ राजा दुर्य्योधन के पास जा पहुंचा। जब कौरवोंने देखा राजा इकल्ला अर्जुन से नहीं लड़ सकेगा तो शीघ्र ही उसकी सहायता करनेको पहुंचे। महावीर अर्जुन की गति रोकने को सबसे प्रथम राजा कर्ण ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाण चलाये। अर्जुन ने उन्हें तुरंत ही काट गिरा दिये फिर जब साहस करके वह आगे बढ़ा तो अर्जुन ने एक ही बाण ऐसा मारा कि जिससे विकर्ण निश्चेष्ट हो पृथिवी पर आ पड़ा। भाई की ऐसी दशा देख राजा कर्ण अर्जुन के सम्मुख फिर आया। दोनों वीरों का संग्राम देखने को कई वीर भी आ उपस्थित हो गये। कर्ण ने आते ही अर्जुन पर बाण चलाये। उन में से कोई सारथी के लगा। कई घोड़ों के लगे और कोई बाण, अर्जुन के लगा। धनञ्जय के शरीर पर पहिले ही से दृढ़ कवच था सो वह बाण फूल के समान लग कर निस्तेज हो गया। भीष्मपितामहादि महारथी भी इतने में वहां आ पहुँचे। इन्हें देख अर्जुन ने कर्ण पर ऐसी बाण वृष्टि की कि उसका समग्र रथ ऐसा ढक गया जैसे बादलों में सूर्य्य। फिर उनमें से १ बाण तो भुजा में लगा एक मस्तक पर और १ ललाट में जाकर लगा जिस के कारण उसके शरीर में से रुधिर की धारा बह चली। महा बली कर्ण की ऐसी दशा देख देशकालका विचार करके चतुर सारथी बिवश कर्ण को संग्राम स्थलसे हटाकर अलग कहीं लेगया। इस बात से राजा दुर्योधन बड़ा ही लज्जित हुआ तुरन्त वह अर्जुनसे युद्ध करनेको समुख आया। अश्वत्थामा, कृपाचार्य द्रोणाचार्य और भीष्मपितामह भी इसके सहायक होगये। दोनों ओर से बाण वृष्टि होने लगी। अर्जुन के अनुपम साहस और कौशल को देखकर सभी ने बार बार बड़ी प्रशंसा की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर अर्जुन थोड़ी सी दूर ही चले होंगे कि संयोगवश लाल घोड़ों से सम्पन्न दिव्य रथ में विराजमान महारथी द्रोणाचार्य सम्मुख आये।

धनञ्जय ने उत्तर कुमार से कहा—

शक्रतुल्य मतिमन्त औ गुरु सम नीति निधान।
धनुर्वेद निष्णात ये द्रोणाचार्य सुजान॥
शम दम सत्य दयालुता आर्जवादिगुणधाम।
ब्राह्मण गुण के तिलक ये श्री आचार्य ललाम॥

अर्जुन ने कमण्डलु का चिन्ह रथ पर देख सारथि को आज्ञा दी कि यह रथ मेरे गुरुदेव का है अहा! ये साक्षात् धनुर्वेद के मूर्त्तिमान् अवतार हैं चिरकाल से इनका दर्शनकर मैं आज कृतार्थ हुँगा। ये समस्त शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ और मेरे परम पूजनीय हैं। इनके रथ की प्रदक्षिणा और प्रणाम करना उचित है। यह आचाय पुत्र अश्वत्थामा भी उपस्थित है। श्री गुरु महाराज के तुल्य यह भी माननीय है। अब मेरा यह कर्तव्य है कि पहिले इनकी ओर से प्रहार हो तब मुझे शर प्रयोग करना चाहिये। अन्यथा इनको क्रोध आगया तो मेरा शिष्य धर्म विचलित हो जायगा।

फिर जब आचार्य महोदय अत्यन्त ही समीप आ पहुंचे तब—

अभिवाद्य महाबाहुः सामपूर्वमिदं वचः।
उवाचश्लक्ष्णया वाचा कौंतेयः परवीरहा॥
उषिताः स्मो वने वासं प्रतिकर्मचिकीर्षवः।
कोपं नार्हसि नः कर्त्तुं सदा समर दुर्जय॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहन्ते प्रहते पूर्वं प्रहरिष्यामितेनघ।
इति मे वर्त्तते बुद्धि स्तद्भवान् कर्त्तु मर्हति ॥ वि० प० ॥

अर्थात् महाबाहु शत्रुतापक अर्जुन ने सादर गुरुदेव को प्रणाम कर नम्रभाव से निवेदन किया कि हे कृपानाथ ! अद्वितीय योधा गुरुदेव हमने चिरकालतक बनवास जनित कष्टों को भोगकर अब क्रूराचार के प्रतीकार करनेकी मनमें ठानी है। इसलिए आप अब इस भूल चूक को क्षमा करेंगे। हे प्रभु ! पहले जबतक आप प्रहार नहीं करेंगे तबतक आपका शिष्य मैं शस्त्र कदापि नहीं चलाऊंगा। ऐसे मेरे सद्विचार को आपही सहायता पहुंचावेंगे। इतने बचन सुनते ही परम चतुर द्रोणाचार्यने पहले ही २१ बाण अर्जुन पर चलाये। पार्थ ने तत्काल ही उन्हें काटकर गुरुदेव को अपने चातुर्य का परिचय दिया। फिर द्रोणाचार्य ने घोड़ों पर ऐसे तीखे २ बाण फेंके कि जिनसे अर्जुन एक साथ घबरा उठा। फिर सम्हल कर आचार्य के रथ को ढकना विचारा। इधर गुरु भी शरप्रयोग द्वारा अर्जुन के रथको ढकने में सफल हस्त हुए। दोनों के रण कौशल को देखने के लिए सभी सैनिक चित्र लिखित से होगए। उस समय का दृश्य बड़ा ही विस्मयकारी था। जिधर देखो उधर बाण ही बाण दिखाई देने लगे। फिर आचार्यने महाप्रयास करके रथके आगेके सब बाणों को छिन्नभिन्न कर इस प्रकार अपना स्वरूप दिखाया। जैसे धूवां हटाकर प्रभाकर अग्नि दर्शन देते हैं। उधर अर्जुन भी असावधान नहीं था। उसने भी अपने हस्तलाघव द्वारा शरजाल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

को काटकर जैसे तैसे अपने को बचाया। इसप्रकार बहुत समय तक लड़ने पर भी जय पराजय का निर्णय नहीं होता देखा तो दोनों ही वीर किटकटा कर एक दूसरे पर नानास्त्रों की बौछाड़ करने लगे। कभी बाण कभी शक्ति कभी तौमर फेंका। किसीकी ध्वजा किसीके घोड़े किसीका सारथि और किसीकी शस्त्रावलि को खण्डित की तो सब सेना छिन्न भिन्न होगई।

इतने ही में राजा 'दुर्योधन' का रथ भी समीप आ पहुँचा। कृपाचार्य उसके संरक्षक बने। अर्जुनने उनके रथकी भी प्रदक्षिणा कर शंखध्वनि की। इधर कृपाचार्य ने भी वीर को संमुख आया जान शंख नाद किया। आचार्य तो जानते ही थे कि धनञ्जय पहिले ब्राह्मण पर शस्त्र प्रयोग नहीं करेंगे इसलिये पहिले आपही ने दश बाण चलाये। अर्जुन ने बड़ी ही फुरती के साथ उनको काटकर धरती पर गिरा दिये। कृपाचार्य ने दूसरी वार शर पंजर का प्रयोग किया जिससे अर्जुन का रथ तुरन्त ढक गया। तब तो कौरवों की सेना प्रफुल्लित हो उठी। क्षण भरके लिये अर्जुन विवश तो हो गया पर धैर्य के साथ उनत को काट ऐसे निकल आया जैसे मेघों को हटा कर सूर्यनारायण निकल आते हैं। अब के अर्जुन ने जब कृपाचार्य का 'धनुष' खंडित कर दिया तो क्रोध में आकर आचार्य ने शक्ति चलाई। सब लोग तो इससे भय भीत होगये पर सम्हल कर अर्जुन ने एक साथ दश बाण ऐसे चलाये कि जिन से वह अधबीच ही में टूट कर गिर पड़ी। फिर पार्थ ने एक साथ १३ बाण चलाये। ४ बाणों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से तो ४ घोड़ों को घायल कर दिये एक से सारथि को विवश किया। एक से धनुष को तोड़ा और शेष बाणों से कृपाचार्य को डांटा। ऐसी संकटापन्न दशा में कृपाचार्य ने आंगणे से ही गदा का प्रहार किया। अर्जुन ने तुरन्त उसे भी काट कर अपना पराक्रम दिखा दिया फिर कौरवीसेनाने पदाति कृपाचार्यको बचाने के लिये चारों ओर से उन्हें घेर लिया। अर्जुन ने अवकाश पा उधरसे रथको हटवाकरआज्ञा दी कि अब दूसरी ओरको चलो। जो योद्धा अपने सम्मुख आवेगा उसी के साथ संग्राम करेंगे।

अर्जुनने सारथीसे कहा कि मुझको अन्य सब महारथियोंके तो दर्शन हो गये एक केवल पितामह भीष्मजी के दर्शन करने हैं सो शीघ्र आगे बढ़ो आज चिरकालसे उनके दर्शनकर अपने नेत्रों को सफल करूँगा। सारथिने जो आज्ञा कह कर रथ को हांका। क्षणभर में वहां पहुंचा दिया जहां पर साक्षात् 'देवव्रत' महारथी श्री भीष्मपितामहजी सेनाकी रक्षा करनेके लिये अटल खड़े थे।

हाथी घोड़े और पैदलों की सेना से सुसज्जित भीष्मपितामह को देखते ही उत्तरकुमार थरथर कांपने लगा। फिर अर्जुन की ओर देखकर कहने लगा कि मैंने तो ऐसा रणरँग पहले कभी नहीं देखा था। यद्यपि आज जैसे महारथी मेरे सहायक हैं तो भी मेरे प्राण सूख रहे हैं अर्जुन ने बहुत धीरज बंधाकर कहा कि आपने साहस बहुत अच्छा रक्खा अब किसी भी बात की चिन्ता न करो मैं भीष्मपितामह के पंजे से भी तुम्हें छुड़ालाने का प्रयत्न करूँगा। गुरुकृपा से आग्नेय, वायव्य, पाशुपत ब्रह्मास्त्र आदि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनेक दैवी अस्त्रों का प्रयोग और संहार जानता हूं अतः किसी बातका खटका मनमें मत रक्खो। इसप्रकारके आश्वासनसे जब राजकुमारके मनमें स्थिरता आई तो अर्जुनने भीष्मजी को प्रणाम कर युद्ध का पूर्वा पर विचार करना आरम्भ किया। उधर महावीर भीष्मजी भी अर्जुनके साथ संग्राम करना चाहते थे। दोनों ही अपनी २ चातुरी दिखानेमें अपना सौभाग्य मानते थे कौरवी सेनाके सभी महारथियोंको यह जीतता चला आता था इसलिये भीष्मजीने आतेही तुरन्त बाणोंका प्रयोग किया। अर्जुनने सहसा उन्हें काटकर ऐसे गिराये जैसे कोई फूलोंको छिन्नभिन्न करके गिरा देता है। भीष्मपितामह को वृद्ध जान दुःशासनादि चार वीर भी उनकी सहायता करने को आये पर अर्जुन के गांडीव धनुष के सामने उनकी एक भी नहीं चली प्रत्युत मुंह छिपका कर वहांसे भागे। महावीर अर्जुन ने इतने बाण चलाये कि पितामह का रथ ढक गया। इस घटना को देखकर कौरवी सेना में हाहाकार मच गया। पितामह भीष्म जी भी सावधान हो युक्तिसे बाण पंजरको काटने लगे। सैनिकों के देखते देखते सब बाण काट ऐसे प्रकट हुए कि जैसे पींजरे को तोड़ कर सिंह बाहर आजाता है। फिर सभी कौरव दल ने जयध्वनि उचारी और हर्ष से शंख नाद कर आनन्द मनाने लगे। कभी अर्जुन आग्नेयास्त्र चलाते तो भीष्मजी वारुणास्त्र द्वारा उसका निवारण करते। ऐसे आपस में चिरकाल तक अस्त्रों के प्रयोग करते रहे। दर्शक लोग धन्य २ कहके दोनों ही वीरों की प्रशंसा करने लगे। अब के अवसर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाकर अर्जुन ने बाण द्वारा पितामह के धनुष को खंडित कर दिया भीष्मजी तुरन्त ही दूसरा धनुष धारणकर अर्जुन को झुकाने लगे जिससमय पितामहके बाण चलते थे उससमय ऐसा प्रतीत होता था मानो आकाश में हंसों की पंक्ति उड़ रही है। उस समय की घटना देखकर गन्धर्वराज चित्ररथने देवराज इन्द्रसे कहा था कि—

उभौ विश्रुत कर्माणा वुभौ तीव्र पराक्रमौ ।
उभौ सदृश कर्माणा वुभौ युधि सुदुर्जयौ ॥ महाभारत

अर्थात् दोनों ही विख्यात कर्मा हैं दोनों ही तेजस्वी हैं दोनों ही तुल्य पराक्रमी और दोनों ही संग्राम में अजेय योद्धा हैं।

गंधर्वराज के ऐसे बचन सुन देवराज इन्द्र ने प्रसन्न होकर दोनों ही महारथियों पर पुष्पों की वृष्टि की।

अनन्तर भीष्मजी भी क्रोध में आकर एक साथ अर्जुन पर टूट पड़े। एक बाण से तो सारथि को विचलित किया फिर चार बाण घोड़ों पर चला कर उनको भी शिथिल कर बताया एक बाण ध्वजा पर भी चलाया पर वह प्रयास उनका वृथा होगया। कभी अर्जुन के बाणों को भीष्मजी काट देवे तो कभी भीष्मजी के बाणों को अर्जुन काट देते थे। ऐसे पहर भर तक निरन्तर घोर संग्राम होता रहा पर दोनों में से एक ने भी पांव पीछा न हटाया। बीर धनुर्धर अर्जुन ने कई अस्त्र शस्त्र चलाये पर भीष्मजी ने सबका समाधान कर अर्जुन को चकित कर दिया अब के अर्जुन ने शर पंजर प्रयोग किया। सहस्रों बाण टीड़ी दल के समान भीष्मजी के रथ को ढकने लगे थोड़े से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय में समग्र रथ ढक गया और कौरव घबरा गये । जब किसी भी प्रकार पार्थ नहीं हटा तो अबके भीष्मजी ने अर्जुन के बायें पसवाड़ों पर बाण मारे पर अर्जुन ने सम्हल कर तुरंतग्रप नें को बचा लिया। फिर क्रोध में आकर अर्जुन ने सूर्य के समान तेज वाले एक साथ दश बाण भीष्मजी पर चलाये। संयोगवश वे कवच को काट वक्षःस्थल में जा लगे । पितामह यद्यपि बड़े पराक्रमी और सहनशील थे तो भी इन बाणोंसे पीड़ित होकर मन ही मन करहाने लगे । सारथि बड़ा चतुर था सो उसने तुरंत ही चिकित्सा कराने को वहाँ से रथ हटाकर दूसरी ओर जा जमाना चाहा तो इधर अर्जुन ने भी देवदत्त शंख की ध्वनि करना आरंभ किया ।

जब पितामहभीष्मजी जैसे भी संग्राम में अर्जुन के साथ नहीं ठहर सके तब दुर्योधन की वहां क्या चलाई थी तो भी वह क्षात्र धर्म के विवश हो कर युद्ध करने को सन्मुख आया । अर्जुन इसे देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और मन ही मन कहने लगा कि भीष्मादि से जो युद्ध हुआ उन सब का मूल कारण यही तो है अतः इसे ही विध्वस्त करके अपकार का पलटा लेना चाहिये ऐसे सोच विचार एक साथ ही उस पर बाण वृष्टि करने लगा । राजा दुर्योधन उस समय हाथी पर चढ़ कर युद्ध करने आया था आते ही हाथी के जो अर्धचन्द्र बाण मारे जिनके कारण विद्ध हाथी उलट कर अपनी ही सेना के लोगों को मारता हुआ ५० तथा ६० पावन्डे दूर जाकर तुरंत गिरपड़ा और परम धाम सिधारा । युद्ध के समय दुर्योधन की छाती में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐसे ऐसे तीक्ष्ण बाण लगे थे कि जिनके कारण उसका सारा शरीर रुधिर से लथ पथ हो गया था राजा की ऐसी दशा देख चतुर सारथि उसे रथ में लिटा कर अन्यत्र ले गया और कौरवों के दल में हाहाकार मच गया इधर किरीटी ने भी जयध्वनि सूचक देवदत्त नामक शंख को फूंका।

अर्जुन इसप्रकार महारथियों को जीत राजा विराट की गायों छुड़ा कुशलपूर्वक नगरको लारहा था कि मार्गमें कितनेक सैनिक उसे देख डरकर भागने लगे। जो रथ के अत्यन्त ही निकट आ गये थे वे हाथ जोड़ गिड़गिड़ाय कहने लगे कि कृपानिधान! हम तो आपके किङ्कर हैं हमें प्राणदान दीजिये—तब धनुर्धर अर्जुन बोला:—

भूखा प्यासा श्रृङ्खलित मूर्छान्वित अति दीन।
तन मन से किङ्कर बने अस्त्र शस्त्र से हीन॥
इनके साथ न रण करूँ यह अर्जुन की बान।
कपट देख लूं तो तुरत भेजूं यम के थान॥

इस प्रकार अभयदान दे आनन्दपूर्वक नगर में प्रवेश किया। राजा विराट और उसके सामन्तगण फूल बरसाते हुये सम्मुख आये। उत्तरकुमार के मुख से वृहन्नला को अर्जुन जान तथा उसका रणचातुर्य और प्रशंसा सुन राजा विराट फूला न समाया फिर उसने हाथ जोड़ सबके समक्ष निवेदन किया कि हे दया-सागर! यह राजपाट आदि सब साज आपका है हम तो आपके आश्रित हैं आप जो चाहो सो करो और हमको शरण दो। आप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की गोभक्ति अत्यन्त ही प्रशंसनीय है। गौओं के ही प्रतापसे आप ने बड़े बड़े महारथियों को जीता हैं। कृपानाथ ! निःसन्देह गो महिमा अवर्णनीय है।

गो रक्षा से विप्रवर ब्रह्मधाम पाजाय ।
क्षत्रिय यहँ नृप मौलिबनि सुरपति सदन सिधाय ॥
वैश्य अन्न धन सम्पदा पुत्र पौत्र सुख पाय।
शूद्र गऊ की भक्ति से भवसागर तर जाय ॥
जो गोरक्षा का चरित पढ़े सुनै चित लाय।
उसकी पूरे कामना श्रीपति यदुकुलराय ॥

इस प्रकार राजा विराट कृतज्ञता प्रकट करता हुआ राजकुमार अभिमन्यु के साथ उत्तरा का वाग्दान दिया। फिर महाराणी द्रोपदी सहित पांचों पाराडवों का अत्यन्त सत्कार और राजसी ठाठवाठ सहित राजधानी पहुंचाकर अपने महत्वका परिपूर्ण परिचय दिया।

पाबूजी—उपरोक्त वृत्तान्त सुनकर बड़े ही प्रसन्न होकर व्यासजी को कहने लगे कि महाराज आपने कथावार्त्ता सुनाकर मुझे क्षात्रधर्म का मार्ग बता दिया। अब जीवन पर्यन्त गोसेवा नहीं छोड़ूंगा। इसके अतिरिक्त भी कोई समयानुसार उपदेश हो तो बता दीजिये—

व्यासजी—राठौर वंशप्रदीप ! सुनिये—

पाबूजी—क्या क्या काम करने होंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१-हिन्दू धर्मशास्त्र की आज्ञानुसार गायों की रक्षा २-सनातनधर्म के संरक्षक ब्राह्मणों का सत्कार ३-अनाथ अबला और विधवाओं का विधर्मियों के फंदों से छुटकारा ४-क्षत्रियों में ऊंच नीच के विचार से जो कलह होता हो इसका निवारण ५-पाटवीं पुत्र का छुटभाइयों के साथ प्रेम का सम्बन्ध स्थिर करके युवराज बनाने की प्रथा का पुनरुद्धार ६-क्षत्रियों में बहु-विवाह का विरोध तथा क्षत्रिया का तिरस्कार कर दासियों से जो अनुचित प्रेम किया जाता है उसका निराकरण ७-मद्यादि मादक पदार्थों का निषेध ८-विधर्मियों को स्वधर्म पर लाने वालों को प्रोत्साहन प्रदान ९-वैश्य आदि व्यापारी लोगों के धन धान्य और प्राणों की रक्षा १०-मार्ग में तलाब बावड़ी आदि जलाशयों का प्रचार ११-प्रति गाँव में अन्धे लूले लँगड़े तथा कोढ़ी आदि के लिये अनाथालयों की स्थापना १२-प्रत्येक गाँवों में मार्गों का सुधराना तथा उनके आस पास फल वाले वृक्षों का रुपवाना १३-युवावस्था की प्राप्ति के पहले बालकों को साधु बनाने का अवरोध १४-वेश्यादि की वृद्धि का निवारण १५-ग्राम २ में पञ्चायत पद्धति का सुधार १६-बकरों की संततियों को सुधारकर उनके द्वारा बोझा उठवा कर उनकी रक्षा करना १७-अस्पृश्यजाति के साथ भी दया का बर्त्ताव करना आदि अनेक उपयोगी काम हैं जिनके लिये सदा तत्पर रहकर प्रजा को सुख पहुँचाना चाहिये जिससे निर्धन भी क्षत्रिय सन्तान उपरोक्त पुण्योपार्जन के प्रताप से राजा महाराजाओं का भी प्रीतिपात्र बनकर संसार में अमर कीर्त्ति पाने का अधिकारी हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाबूजी का नाम सुन देश २ से क्षत्रिय लोग आकर इनसे मिलते और इनका उत्साह बढ़ाते थे। ये आये गये क्षत्रियों से कहा करते थे कि देखो भाई अपने पूर्वजों के कलह ही से समस्त भरतखण्ड की यह दशा हुई है। पूर्वजों ने तो इतना विशाल राज्य हस्तगत कर रक्खा था। पर ईर्षा द्वेषने इतना बिगाड़ किया कितनेक कहते कि धर्म के नेताओं के 'प्रमाद' से अधः पतन हुआ है। कोई कहते कि नेताओं ने तो समयानुसार बातें बताई पर अहिंसा अहिंसाने सब को कायर बनादिये किसी ने कहा भाई! ये बातें तो थोथी हैं। जो भवितव्य होता है वही होता है। इसमें किसी का दोष नहीं। जो बात बीत गई सो गई अब उसका सोच विचार छोड़ आगे का विचार कीजिये। इस वृद्ध पुरुष की बात सबने मानी पाबूजी और पाबूजी के साथियों ने प्रण किया कि स्वार्थ बुद्धि को छोड़ देश और धर्म की रक्षा के लिये तन मन और धन के छोड़ने में तिलमात्र भी संकोच नहीं करेंगे ऐसा प्रण कर पाबू दल की स्थापना की।

इनका प्रथम नियम यह था:—

कन्या सब बेटी सरिस, परणी बैण समान।
बूढ़ी ठाढ़ी मातु सम, या पाबू की बाण॥
एक नारि को संग, ब्रह्मचर्य सम जानणों।
पर नारी पर संग झूठी पातल चाटणों॥
दासी देय उदासि दासी चहिये दासने।
राजा चावै दासि दास बनावै आपने॥ २॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वयं पाबूजी और उनके अनुयायी राठोड़ादि क्षत्रिय वर्ग देश भर में घूमा करते थे। जहाँ कहीं किसी का कुछ कष्ट सुनते तुरंत उनका संकट मिटाते थे। इन्हें कोई किसी कार्य में पारितोषिक देता तो उन रुपयों का ये गोदान करते ब्राह्मणों की कन्या परणाते थे।

इस प्रकार स्वयं पाबूजी और उनके दल ने कई दिनों तक देश की अखंड सेवा की। इस राजस्थान प्रांत में बड़े २ राजाओं ने उनका आदर किया। जैसा ये चाहते थे वों बातें राजस्थान प्रांत में होने लगीं। ये महाशय लोगों में जीते जीव ही देवता गिने जाने लगे। इनके एक बहन थी जिसका विवाह जींदराव खीची के साथ कर दिया था। वह खींचद (यह गाँव का नाम है) ग्राम के ठाकुर थे पलौदी के परगने में था। जायल ग्राम में देवलजी चारण रहते थे। उनके पास केसर नाम की बड़ी अच्छी घोड़ी थी। उस सुलक्षणा घोड़ी की चर्चा दूर २ तक फैल रही थी सो एक दिन जींदराव खीची ने भी बारहठजी से इसे मांगी। देवलजी ने इसको देना अस्वीकार किया। पुराणों में गायों के लिये लड़ाइयां हुईं। पर यहां पाबूजी के चरित्र में घोड़ी के द्वारा द्वेष का अंकुर जमा। थोड़े से समय के उपरान्त घोड़ी की प्रशंसा के वशीभूत हो देश सेवार्थ पाबूजी ने भी इसे माँगी। देवलजी ने कहा कि हे धर्म वीर ! तुम्हारी वीरता देख कर यह घोड़ी बिना ही मूल्य आपही को समर्पण करना चाहता हूँ पर इसके लिये आपको भी एक नियम करना पड़ेगा वह यह है कि मैं तो धूढ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हूँ। मेरा लड़का अभी छोटा है घर में मेरे गो धन है । चौर म्लेच्छादि लोग इसी पर आक्रमण किया करते हैं सो जब कभी हमारी गायों पर संकट आय तब आपको हमारी रक्षा करनी होगी ।

देवलजी–गोधन पर संकट पड्यां, करज्यो तुरत सहाय ।
यो प्रण चाहूँ आपसें, दीज्यो अवशि निभाय ॥

पाबूजी–भावै जाऊँ परणबा, माथै बाँध्यां मोड़ ।
समचा पायां व्याव भी, तजै पाबु राठौड़ ॥

इस पर देवलजी ने प्रसन्नता पूर्वक घोड़ी समर्पित कर कहा कि जब आप गो ब्राह्मण और धर्म की सेवा निमित जीवन व्यतीत करते हैं तो कोई भी वस्तु आपके लिये दुर्लभ नहीं है पाबूजी अनेक धन्यवाद बारहटजी को देकर घोड़ी घर लेआये। धीरे २ यह समाचार जब जींदराव खींची के कानों पड़ा तो बड़ा उदास हुआ और मनमें गांठ बांध देवलजी से बैर बदला लेने के उपाय घड़ने लगा। ऐसे जब २ यह बात विचारता तब २ ही पाबूजी का खटका उसके मनमें लगा रहता । ऐसे करते २ बहुत दिन बीत गये पर कोई अवसर उसके हाथ नहीं आया । पाबूजी जब पूर्ण युवा हुए तो उनकी वीरता की ख्याति घर २ में फैल गई । एकबार पाबूजीने डाकुओं से सांडनियां छीनकर सिन्ध के प्रान्त वाले क्षत्रियों को देदी थीं । इसलिये उस प्रान्त वालों ने इनकी वीरता की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी । ये समाचार जब सोढ़ा सूरजमलजी की पुत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमरसुंदरी ने सुना तो उसने पाबूजी को ही पति बनाना निश्चित किया। पाबूजी के पास जब टीका आया तो उन्हों ने सुयोग्य राजकुमारी के साथ विबाह करना अङ्गीकार कर लिया।

फिर शुभ लग्न में जब विवाह मँडा तो धूम धाम के साथ बरात बनाय परण ने चले। उस समय उन्होंने अपने बहनोई जींदराज खीची को भी बहुत स्मरण किया पण उसके मनमें घोड़ी की खुटक बैठ रही थी। यह नहीं सोचा कि मुझे नहीं मिली तो क्या चिन्ता है। मेरे साले के तो काम में आरही है। अतः वह समय पर नहीं आया। इधर तो धीरे २ पाबूजी कई-दिनों में बरात के साथ अमरकोट पहुँचे। पीछे से जींदराव ने ग्राम पर चढ़ाई की। पहले तो उसने सब गायों की टोली इकट्ठी की फिर देवलजो का अपमान करणे को अन्य सबको तो पीछी छोड़ दी पर बारहटजी की सब की सब गायें बँधवा कर साथ लेगया। बारहठजी बुढ़ापा के कारण घबरानेलगे तब उनकी धर्मपत्नी विजयाबाई ने कहा कि प्राणनाथ! आप क्यों सोच करते है मैं अभी जाकर धर्मवीर पाबूजी को बुला लाऊँगीं। वे तुरंत ही अपना संकट दूर कर देंगे। प्रथम तो वे सभी का कष्ट निवारण करते हैं इसके उपरान्त अपने साथ तो उन्हों ने दृढ़ प्रतिज्ञा की है अतः आप तिल मात्र भी संकोच न करें वे अवश्य अपना प्रण पूर्ण करेंगे। इस प्रकार कह मार्ग का सब प्रबन्ध कर चली २ उमरकोट में आपहुँची।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जिस समय पाबूजी ने एक फेरा खाकर दूसरे फेरे के लिये पैर बढ़ाया उसी समय चारणी ने जाकर पुकारा:—

शीशोद्या शिर देवणां, रण बंका राठौड़ ।
हठ पक्का हाडा खरा, गढ़ में बाँका गौड़ ॥
सोलंकी शुभ लच्चणा, कच्छावा कच्छ बंध ।
तोमर अरु परमारये, रण में लड़ें कबंध ॥
ज्यों विराट नृप की गवां, अर्जुन दीन्ह छुड़ाय ।
त्यों म्हारा गोवृन्द का, आप समर्थ सहाय ॥

हे धर्मवीर ! बड़ा अनर्थ होगया हम लुट गये हैं । पाबूजी ने तुरन्त ही पहचानली कि यह देवलजी की बहू है । उसी चण फेरे देते रुक गये । ब्राह्मण और सासू सुसरे भी निवेदन करने लगे कि बींदराजाजी । यह समय बहु मूल्य है इसमें दूसरी बात पर ध्यान मत दीजिये । इस पर पाबूजीने कहा कि इसके साथ मेरा यही प्रण था कि जब तुम्हारे ऊपर संकट पड़े तभी आकर मुझे कहना मैं तत्काल तेरी रच्चा करूँगा सो यह अभी आई है सो पहले इससे बात (करूंगा)

पाबूजी—कहो बारहटणजी क्या हुआ ?

चारणी—महाराज ! मत पूछो गोधन जानेसे हम सब मर गये।

पाबूजी—यह बात कब कैसे हुई ?

चारणी—धर्ममूर्ति ! आपकी बरात चढ़ने के पीछे ही जींदराव खीची ने गाँव लूटकर सबकी गायें तो पीछी देंदीं और मेरा सर्वस्व हर लिया है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाबूजी-अब क्या चाहती हो?

चारणी-कृपानिधान ! मेरे पति ने आपकी सेवामें भेजी है कि केसर घोड़ी को लेते समय आपने जो प्रतिज्ञा की थी वह समय आगया है।

पाबूजी बहुत अच्छा। अब मैं अवशिष्ट फेरे नहीं दूगाँ यह कह कर तुरन्त हथलेवा छोड़ गठ जोड़े को धरती पर रख दिया और आप रण के लिये सब से क्षमा माँग बिदा होने लगे।

प्रस्थान के समय नववधू श्रीमती अमरसुन्दरी ने पाबूजी से सविनय प्रार्थना की।

अमरसुन्दरी-कमधज! प्रण को प्रेम, प्राण पदमणी सूं अधिक।
अब फेरा में दोस, राखण वालो राम इक ॥

पाबूजी—कामण ! क्षत्रिय नाम, प्राण पदमणी सूँ बड़ो।
फेरा सुरपुर धाम, पूरा करसी रामजी ॥

दैवकी गति बड़ी ही विलक्षण है रंग में भँग हो गया। पाबूजी की आँखे लाल हो गई। होट फड़कने लगे। क्रोध के विवस हो कहने लगे कि जिसने इनकी गायों को सताया है उसे में जीता नहीं छोड़ूँगा यों कह चँवरी छोड़ बिदा होगये। सासू ससुरे और नगर के लोगों के मुख पर उदासी छागई। पर पाबूजी को इस बात का तिल भर भी ध्यान नहीं रहा। बराती लोग भी अपनी २ सवारियों पर चढ़ शत्रुओं से युद्ध करने के लिये पाबूजी के साथ हो लिये। 'सब' तो चिन्ता समुद्र में डूब कर बेसुध हो गये परन्तु ऐसे समय में भी पाबूजी की धर्मपत्नी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अमरसुन्दरी बड़ी सावधानी से बातें करने लगी। उसने हाथ जोड़ प्रार्थना की कि कृपानाथ !

लैर चलूं लाडी कहै ले लाड्यांने साथ।
लड़श्यां म्हेभी शत्रुसें बढ़कर दो दो हाथ ॥

पाबूजी—जब तक्क जीवां उठा तक सोवो सुख भर निंद् ।
काम आवश्यांजी पछें रखवालो गोविन्द ॥

इस प्रकार त्वरा के साथ बारात को सङ्ग ले पाबूजी चले २ जींदराय खींची के ग्राम में जा पहुँचे। राजनीति के नियमानुसार इन्होंने पहिले दूत भेजकर कहला दिया कि आप मेरे बहनोई हो सो मैं सहसा लड़ना नहीं चाहता। चारणी की गायें भेज दीजिये नहीं तो 'प्रतिज्ञा' के वश होकर मुझे युद्ध करना होगा

दूत के बचन सुनते ही खीची आग बबूला होकर बोला—

घोड़ी मैं 'लेऊँ' प्रथम, पाछे देऊँ गाय ।
तो जाणों खीची खरो, चाहै 'सर्वस' जाय ॥

इस उत्तर को पाकर पाबूजी ने चारणी और अपने अभिन्न हृदय बराती योद्धाओं से पूछा कि भाइयों ! बड़ी टेढ़ी खीर है। क्या करना चाहिये। बहनोई होने से मेरा मन सोच सङ्कोच में पड़ा है कहिये क्या करूँ ? तब चारणी बोली—

खींची नहिं मन में खरो, ईंकी ऊंदी चाल।
सोच समझ कारज करो, मत चूको थे थाल ॥

पाबूजी झट समझ गये। इधर अन्य योद्धाओं ने भी कहा कि इसी घोड़ी का आपको सहारा है यदि इसे लेकर वह मुकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाय तो फिर आप क्या करोगे ? इतने वचन सुनते ही पाबूजी ने कहला दिया कि—

घोड़ी मैं देऊं नहीं, गाय हैतु द्यूं प्राण।
द्वन्द युद्ध आपां करां, होवे सबको त्राण॥

इसे सुन जींदराव खींची ने जाना कि यों तो इकला इनके साथ हार जाऊँगा सो सबके साथ सामिल ही लड़ना ठीक है ऐसे सोच विचार कहला दिया कि चौगान में आ जाओ। मैं युद्ध करने को प्रस्तुत हूं। फिर क्या था ग्राम के बाहर दोनों ओर के योद्धा डटकर आ खड़े हुए। एक ओर घोड़े पर सवार जींद-राव खींची था और दूसरी ओर धर्मवीर पाबूजी अस्त्र शस्त्र स-हित केसर घोड़ी पर कमर कसे खड़े थे। युद्ध में जाते समय पाबूजी ने ऐसी युक्ति की थी कि अपनी सेना के दो दल कर दिये थे। एक दल तो चुपके से जींदराब खींची की गोशाला में जाकर गायों को छुड़ावे और दूसरा दल संग्राम में जावे। सो इधर लड़ाई होने लगी उधर कितनेक बीरों ने लड़भिड़कर गायें सहज ही में छुड़ाली। चारण और चारणी भी साथ थे। इन्होंने भी बड़े साहस का काम किया। कई अच्छे २ योद्धाओं को साथ लेकर गायोंको अपने स्थान पहुँचानेका अच्छा प्रबन्ध कर दिया।

फिर जब आमना सामना हुआ तो खीची सरदार ने अपने योद्धाओं को आज्ञा दी कि बीरों उठो सब मनखोलकर लड़ो पाबूजी को जीते जीव पकड़ कर जो मेरे पैरों में पटकेगा उसको मेरे राज्य में जो अच्छे से अच्छा गांव हो वही उसे पारितोषिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में दूंगा। सुनते ही ग्रामके लोभ से बहुत से वीर एक साथ पाबूजी पर टूटपड़े। इधर पाबूजी भी असावधान नहीं थे। ये भी अर्जुन के समान सव्यसाची थे। दोनो हाथों से तलवार का इन्हें अभ्यास था सो बात ही बात में खचाखच करते सैंकड़ों के शिर काटकर अलग धर दिये। जिधर पाबूजी घोड़ा दौड़ाते उधर ही भग्गी मच जाती थी संग्राम के समय इनका स्वरूप साक्षात् रुद्र केगण वीरभद्रकासा हो जाता था। इनके शरीर पर कई प्रहार ऐसे लगे कि जिनके कारण इनका शरीर लोहू लुहान होगया था। पर ये जींदराव की खोज में थे सो वह कहीं इधर उधर होगया था। इनके साथी भी जी तोड़कर लड़े। इधर पाबूजी के भी व्याह की पोशाक उधर इनके साथियों के भी बरात की केसरियां कसूमल पोशाक बड़ी ही सुहाबनी लगती। दोपहर तक बराबर लड़ाई होती रही जिसमें सारी बरात की बरात काम आगई। जब श्याम का समय आया तो जींदराव खीची इन्हें आते जान भाला लेकर सामने आया। दोनों की मुठभेड़ होते ही पाबूजी ने किटककर एक ऐसा खड्ग का प्रहार किया कि मरता मरता बच गया। इधर उसने भी एक भाला ऐसा मारा कि पाबूजी के शरीर में पार होगया। लगते ही दोनों ही वीर धराशायी हो गये। श्याम पड़ने से उस दिन युद्ध स्थगित रहा। इधर खाट में सुलाकर जींदराव को चिकित्सा के लिये लेगये और बचे खुचे लोग पाबूजी की चिकित्सा में लगे। कई धर्म प्रिय क्षत्रियों ने भली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भांति चिकित्सा कराई पर भाले की कुजरबी लगने के कारण इनका स्वास्थ ठीक नहीं रहा। ये करांते जाते और गायों का स्मरण करते जाते थे इतने ही में देवल चारण और चारणी ने पास आ हाथ जोड़ जय का आशीर्वाद दिया कि हे वीर शिरोमणि आपके योद्धाओंने बड़ीं बीरता करके गायें छुड़ा दी हैं। कई लोग उनकी रक्षाका भार हाथमें लेकर उनको पहुंचाने गये हैं। अब हम लोग आपकी सेवा में उपस्थित हैं कहिये क्या आज्ञा है? इतने वचन सुनते ही पाबूजी हर्ष में आकर उठ खड़े हुये-सावचेत हो ठंडी सांस भरकर बोले अब मेरा खटका खुल गया मैंने जीते जी सुन लिया कि गायें छूट गईं अब मुझे किसी भी बात की चिन्ता नहीं हैं चाहे शरीर रहे वा जाय। यह कहकर फिर शय्या पर लेट गये थोड़े से समय के उपरान्त उन्हें फिर उर्द्ध्वश्वांस आने लगे तब उन्होंने कहा—

सोढी लाडी ने कहों थांको पुण्य प्रताप।
पाबू ने गोलोक में देसी स्थान दुराप॥

यों कहते हरिनाम लेते इस नश्वर कलेवर को त्याग बैकुण्ठ लोक के पान्थवने। महावीर पाबू राठौर का समरभूमि में कलेबर त्याग हुवा ये समाचार अमरकोट पहुंचते ही सभी सासरे वालों ने बड़ा शोक मनाया। उस समय उनकी धर्मपत्नी रानी अमरसुन्दरी (राजबाई) तत्काल सती होने को प्रस्तुत हुई उसके बिचार पलटाने के लिये माता पितादि ने बहुत से प्रयत्न किये पर उसने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपना सत्याग्रह नहीं छोड़ा फिर तो लोगों ने गाजेबाजे के साथ उसे सती होने दी अन्त समय में उसने यह वाक्य कहे थे।

क्षत्री आपस की कलह तजद्योकर निर्धार।
जद होसी थांकी विजय कहुँ छूं बारंबार॥
जदां विधर्मी सूं लड़ो तो होजावो एक।
न्याय पंथपर चल्या सूं रहसी थाँकी टेक॥
गो ब्राह्मण अरु धर्म पर रखस्यो नित विश्वास।
तो लक्ष्मी थांके निकट आकर करसी वास॥
पति परमेश्वर आपका चरणा को धर ध्यान।
दासी आवे शरण में दीज्यो पद निर्वाण॥

यों कह चिता में जल स्वर्गलोक को पहुँची जो लोग वहां गये थे उन्होंने धन्य २ कह कर उसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की और उसकी चिता में फूल बरसा कहने लगे कि इसने पीयर और सासरे की २१ पीढियों का उद्धार कर दिया पाबूजी के बड़े भाई बूड़ाजी भी संग्राम में उन्हें सहायता देने गये थे। उनके देहान्त के उपरान्त ये अपने घर आगये। आते ही इनकी ठुकरानी ने युद्ध की बातें पूँछी जिसपर उन्होंने कहा कि—

हो णो छो सो होगयो पाबू गयो सिधार।

इसको सुनकर ठुकरानी बोली—

बैर लियां सू बाजस्यो क्षत्रिय कुल श्रृङ्गार॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इतना बचन सुनते ही बूड़ाजी क्रोध में आ घोड़े पर सवार हो थोड़े से ही वीर साथ लेकर जींदराव के पास जा पहुंचे। वहां उसे ललकार कर बोले कि जब तक मैं पाबू का बैर नहीं लूंगा तब तक सुख से नहीं सोऊंगा। इसे सुनकर जींदराव बोला आवो लड़ें। दोनों वीरों में घमसाण युद्ध हुवा साथ कई क्षत्रिय वीरों ने प्राण दिये। लड़ते २ जब ३ दिन होगये और किसी की जय परा जय नहीं हुई तब गदा युद्ध ठहरा। दोनों ही वीर गदा युद्ध द्वारा लड़ने लगे। ५वें दिन दोनों ही वीर ऐसे अस्वस्थ्य होगये कि मध्यस्थोंने विष टाला करा दिया। बूड़ाजी का देहान्त ५ वें दिन होगयां। जब ये समाचार इनकी धर्मपत्नी को मिले तो वह सती होने को प्रस्तुत हुई। इस पर लोगों ने समझाया तो वह गर्भ को झरड़* कर फेंक दिया जिससे वह झरड़ाजी कह लाया। बालक यद्यपि असमय में होने से मृतप्रायसा हुवा पर दैव की कृपा से यह लड़काजी गया। इसका पालन पोषण इसकी नानी ने किया था। नानी जब इसे पालने में झुलाती तब ऐसे दोहे सुनाया करती थी।

दोहा–बेटा ! रोयां नहीं सरै, लड़यां सरै लो काम।
बाप युद्ध में प्राण दे, लियो स्वर्ग अविराम
माता 'तन्नें' झरड़ कर फैंक्यों दे आशीस।
रक्षा करसी रामजी थारी विश्वा बीस॥

---

*झरड कर फैकने से इन का नाम झरडा जी पड़ गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह बाल्य काल से ही चेष्टावान निकला। सती गर्भज होने से सदैव हरिभक्ति में लीन रहता। एकान्त सेवन करता और नित्य रामायण महाभारत गीता और भागवतादि ग्रंथों की कथा सुना करता था। व्यायाम घोड़े की सवारी और शस्त्र विद्या में यह बड़ा ही निपुण होगया था। एक दिन किसी गांव से इनकी सगाई आई 'तो' कुल गोत्र की 'चर्चा' 'चली' उस समय उन्होंने अपनी नानी से 'पूछा' कि छुट पन में जो मुझे दोहे सुनाया करती थी सो बताओं मेरे माता पिता कहाँ हैं ? इस पर नानी ने सब भेद आदि से अंत तक कह सुनाया। बालक वरदानी तो था ही। उसने प्रण किया कि जब तक मेरे पिता और काका को मारने वाले का वैर नहीं लेलूगां तब तक शादी ब्याह तो क्या पर न तो पिंलग 'पर सोऊंगा' और न रंगीन पगड़ी बांधूगा। केवल 'सिर' 'पर' पोत्या ही बांधूगा। ऐसे कह सगाई को तो पीछी फेर दी और आप अपनी ही धुन में लग रहे। उस समय के लोग कहा करते थे।

झरडा ने आछा लगै के शिव कै संग्राम।
शिवजी देसी मोक्ष पद रण जय देसि ललाम॥

फिर ऐसे झरड़ाजी जब २१ वर्ष के हुये तों तुरन्त जींदराव खीचीं को जा घेरा। खीची अब की वार हिच किचाने लगा। इस पर ठकराणी जो पाबूजी की बहन थी बोली, आप संकोच मत करो "संमुख आये शत्रु से लड़ो"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जूझ मरयांसूँ स्वर्ग है, जूझे जियां रह बात ।
दोनों हाथां लाडु है, मैं भी देस्यूं साथ ॥

ठुकरानी के ऐसे वचन सुन जींदराव चैतन्य होकर बोला' धन्य राठोड़कुल धन्य'! आपने मुझे अच्छा ओसाण सुजाया, अब रुकने का नहीं। यों कह अस्त्र शस्त्र सज चौगान में आ खड़ा हुआ। अब के जींदराव ने कहा भाइयो! दोनों ओर के वीरों को मत खपावो। हम दोनों ही लड़कर सुलझाड़ा कर लेंगे। यह बात सबके दाय आगई, अन्य सब तो ठहर गये और दोनों ही वीर पिल गये। दोनों ही घोड़ों पर चढे २ एक दम दूसरे पर वार करते रहे। अन्त में दोनों ही ने धर्मयुद्ध निश्चय किया कि तलवार की लड़ाई में दोनों की अवस्था में अन्तर है अतः तीर की लड़ाई की जाय (यह प्रस्ताव पास हुआ दोनों ही वीर आमने सामने दूर २ खड़े होकर एक दूसरे पर बाण वृष्टि करने लगे। जींदराव भी तलवार और बाण विद्या में बड़ा निपुण था सो इसने तान २ कर ऐसे बाण मारे कि सब के सब योद्धा अचंभित हो गये। कई बाण इसके ऐसे चले कि जिनसे झरड़ाजी अचंभित होगये। परस्पर संग्राम होता रहा। प्रहर दिन जब शेष रहा तब झरड़ाजी बोले कि तू वृद्ध है या तो शरण में आजा नहीं तो क्षणभर में यमलोक भेजता हूँ यों कह सिंहनाद करके समीप आय जिन्दराव पर एक ऐसा चक्र चलाया जिससे उसका जीवणा हाथ निःस्वत्व होगया। बाणों से सब शरीर पहले ही विंधरहा था। जींदराव खींची मूर्छित होगया। आस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पास वालों ने मूर्छित की चिकित्सा कराने को युद्ध बन्द किया भगवान की महिमा अपरंपार है खाटपर बिठाकर ज्योंही स्थान पर लेजाकर उतारा कि तुरन्त ही जींदराव खीची का प्राण पखेरू उड़ गया। अपने पतिकी वीर गति जान पाबूजी की बहण पति के साथ सती होती हुई बोली—

गायाँ भायाँ बामणां, इनसे लड़ो न कोय।
ज्यो लड़सी ऊँको भलो नहीं सर्वथा होय॥
क्षत्रिय आपस में कभी वृथा करो मत राड़।
मारवाड़ ढूँढाड़ अरु एक रहो मेवाड़॥
गो ब्राह्मण अरु प्रजा की कीज्यो सार सम्हाल।
तो दुख दारिद् नष्ट हो रहसी सदा सुकाल।
अबला और अनाथ को जो दुःख करसी दूर॥
तो भारतवासी सदा सुख पासी भरपूर॥

इस प्रकार कहती हुई और जयशब्द उचारती पतिदेव के साथ अमरपुरी को पहुँची

इतिश्री वीर केशरी श्रीपाबू राठोड़ चरित्रं समाप्तम्॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

* ओनमः शिवाय *

अथ श्री तेजाजी गोभक्त का चरित्र

पञ्चम प्रकरण

श्री राजस्थान प्रान्त में मारवाड़ देश बड़े ही महत्व का प्रदेश है। उसमें भी नागौर प्रान्त गाय और बैलों के लिये बहुत ही विख्यात है, जिस प्रकार श्री पुष्करक्षेत्र गोकर्णक्षेत्र (राजमहल) इस अजमेर 'मण्डल' में तपोभूमि है। उसी प्रकार नागौर से उगूंणी १२ कोश, मूँडवां से उत्तराद १० कोश, तथा खाटू से ठीक पश्चिम में १० कोश श्री दधिमथी क्षेत्र बड़ा ही पवित्र और पुण्य प्रदस्थल है। यहां श्री दधिमथी देवी का बड़ा प्राचीन मन्दिर है। यों तो वह देवद्वार हिन्दूमात्र ही का पूजनीय है। पर विशेष कर दाहिमा ब्राह्मण, जाट (क्षत्रिय) और बहुत से माहेश्वरी वैश्यों का तो यह पूजनीय ही स्थान है। "यह देवी महर्षि दधीचि की भगिनी थी जो देवी स्वरूप से प्रकटी थी। अतः उसी के स्मारक में यह मन्दिर बनाया गया है। देवी की मूर्त्ति बड़ी ही दर्शनीय है। वहाँ चैत्र शुक्ला अष्टमी को दूर दूर से लोग दर्शन करके मनोवांछित फलों को पाते वह ऐसा ही सिद्धक्षेत्र है कि वहां जातेही चित्त अत्यन्त ही प्रसन्न हो जाता है और मन सहज ही में धर्म

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्म की ओर झुक जाता है । श्री यजुर्वेद और सामवेद की आज्ञा है कि:—"उपह्वरे गिरीणांꣳ सङ्गमेच नदीनाम्धिया विप्रो अजायत । य० । अ० । २६ । १५ ।

भाषार्थ—अर्थात् (गिरीणाम्) पर्वतों के (उपह्वरे) पास की कन्दरा वा समीप की भूमि में (च) और (नदीनाम् सङ्गमे) नदियों के सङ्गम प्रदेश में (विप्रः) ब्राह्मण ज्ञानवान् वा मेधावी पुरुष (धिया) सुबुद्धि से सम्पन्न (अजायत) उत्पन्न हुआ वा होता रहता है ।

तीर्थयात्रा का प्रचार इसीसे हुआ है । कि ऐसे २ स्थलों में बड़े बड़े महर्षि वा राजर्षि प्रभृति महानुभावों ने चिरकाल तक तपस्या की जिससे वैसी ठौर जाने आने से जीव का कल्याण होता रहता है ।

एक समय अजमेर के दाहिमा तिवाड़ी पं० विश्वरूपजी गायत्री के परम अनुष्ठानी शतचण्डी के प्रयोग निमित्त दधिमथीक्षेत्र पहुँचे । इस विषय में एक लोकोक्ति है कि:—

दुर्गा, रुद्री, महीमन, गीता, सुन्दरकाण्ड ।
सहसनाम गङ्गा लहरि ग्रन्थ भक्ति रस भाण्ड ॥

दोहा—प्रणव दुग्ध श्रुति चार दधि, माखन गीता ज्ञान ।
दुर्गा सप्तशती तहां, शुद्ध गऊ घृत मान ॥

इस प्रकार गायत्री और चण्डी पाठ करते करते उन्हें लगभग एक वर्ष हो गया होगा कि एक दिन अकस्मात् एक युवा श्री देवीजी के दर्शनार्थ मन्दिर में आ पहुँचा । उसने माताजी के दर्शन कर धूप दीप नैवेद्य आदि से पूजन किया । जब जाने लगा तो उसकी दृष्टि "विश्वरूपजी" की ओर हुई । उसने अकस्मात् एक अनुष्ठानी को देख प्रणाम कर उनसे "आशीर्वाद" ग्रहण किया । फिर परस्पर 'सम्भाषण' के उपरान्त वार्तालाप होने लगा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वरूपजी—आप कौन हैं ?

तेजाजी—मैं जाट (क्षत्रिय) हूँ।

विश्वरूपजी—क्या नाम है ?

तेजाजी—महाराज ! नाम तो परमेश्वर का है। पर लोग मुझे तेजाजी कहते हैं।

विश्वरूपजी—वाह वाह ! जैसा आपका नाम है वैसा ही आपका स्वरूप भी है।

तेजाजी—हां महाराज ! परन्तु जैसे शस्त्र को नहीं सम्भालने से उस पर काट लग जाता है वैसे ही यदि आप जैसे विद्वान् ब्राह्मण के उपदेश बिना कोरा नाम भी बेकाम है।

विश्वरूपजी—थोड़ा सा अपने ग्राम आदि का भी परिचय दीजिये।

तेजाजी—नागौर के पास एक खड़नाल गांव है। वहां मेरी जन्मभूमि है। मेरे पिता का नाम बख़ताजी और माता का नाम लक्ष्मीबाई है। मेरे एक बहिन हैं। जिसका नाम राजीबाई है।

विश्वरूपजी—आपके मुख पर उदासी क्यों है।

तेजाजी—महाराज ! मैं हर घड़ी प्राणियों को मरता हुआ देखकर संसार को नाशमान जानकर अमर पद की खोज में हूँ।

विश्वरूपजी—आपका विचार श्रेष्ठ हैं सो भगवद्भक्ति करते हुए परोपकार किया करो।

तेजा—जो आज्ञा ! मैं सर्वथा प्रस्तुत हूँ पर बताइये कि परोपकार कैसे किया जाय !

विश्व—क्षत्रिय हों सो प्रजाका जिससे हो उद्धार।
उसी कामको ढावलो, तब हो जय जयकार ॥

तेजा—मुझे देवता, विप्र गउ मात पिता से प्रेम।
इनकी सेवा के सरिस, कोइन अच्छा नेम ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्व-आपके विचार वहुत श्रेष्ठ हैं ये सभी कर्म बहुत अच्छे हैं।

तेजा—गुरुदेव ! इनसे भी जो सर्व श्रेष्ठ हो वह बताइये ।

विश्व—जिसमें आपका अधिक अनुराग हो ।

तेजा—महाराज ! मुझे तो गो सेवा अच्छी लगती है ।

विश्व—तो यही तुम्हें अमर कर देगी । इसी का पूरा २ ध्यान रक्खो ।

तेजा—कृपाकर इसका माहात्म्य सुनाइये ?

विश्व—वेद पुराण सभी में इस का महत्व वर्णित है । यदि आपकी इसमें अधिक रुचि हो तो एक भारतीय इतिहास सुनाताहूँ।

प्राचीन समय में एक महादरिद्र ब्राह्मण था । उसे लोग गोतम कहा करते थे । घूमता २ वह एक बार पश्चिमोत्तरवर्ती म्लेच्छ देश में जा पहुँचा । अतिथि जान किसी म्लेच्छ जातीय भद्रपुरुष ने उसे खाने को भोजन और रहने को घर बता दिया। वहां रहते रहते जब वह वैसा ही हो गया तो उन लोगों ने सेवा करने को उसे एक स्त्री भी दे दी । व्याधों का सहवास होने से वह भी एक प्रकार का व्याधसा बन गया । सदा पक्षियों को पकड़ लाता और उन्हीं के विक्रय से अपना काम चलाने लगा । थोड़े से समय के उपरान्त कोई गोतम का परिचित ब्राह्मण भी अकस्मात् उसके पास आ पहुँचा । दोनों की चार आंखें हुई तो उसने इसकी दुर्गति देखकर कहा मित्र ! यह क्या हो गया । उसने उत्तर दिया भाई सब दिनों का फेर है । आप यहां दैवयोग से आगये हो तो रूखा सूखा भोजन कर मेरे घर को पवित्र करो । ब्राह्मण ने कहा भाई मुझे अभी तो भूख नहीं है, इसलिये भोजन नहीं करूंगा । पर रात के समय तेरे घर पर विश्राम कर सुख दुःख की बातें तो अवश्य ही करूँगा । ऐसे कह उसके घर जाकर ठहर गया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रात भर कई प्रकार की बातें हुईं। प्रभात के समय वह यात्री गन्तव्य स्थान की ओर चल दिया। कुछ समय उपरान्त यह गोतम भी अपने साथियों के साथ नाव में बैठकर परदेश को गया। चलते २ कई दिनों में एक टापू सामने आया। सब लोग तो उसमें से उतर कर जङ्गल में चले गये, परन्तु संयोगवश एक जङ्गली हाथी के आने से गोतम दूर तक नहीं जासका। जैसे सब लोग इधर उधर भागते फिरते थे वैसे वह भी दौड़ता २ नाड़ी जंघनामक बक के आश्रम में जाकर टिक रहा। सांझ होते ही स्वर्ग से आये हुये नाड़ी जंघ बगुले ने इसे जगाकर कहा कि भाई! तू कौन है? और यहां क्यों आया है? ब्राह्मण ने कहा पहले में मध्यभारत में रहता था, अब म्लेच्छ देश में रहता हूँ। मेरा नाम गोतम है। दरिद्रता से दुःखित हो भटकता फिरता हूँ। यहां साथियों से बिछड़ने के कारण ठहर गया हूँ। जब नाड़ी जंघ ने इसकी बात सुनी तो उसके मन में दया उपजी और वह बोला कि कोई चिन्ता की बात नहीं।

तुम आराम से यहां रहो। इसको अपना ही घर समझो ऐसे धीरज दिला भोजन कराया और अपनी पांखों से बायरा करके इसकी थकावट को मिटाने लगा। रात आराम से बीत गई और प्रभात का समय आया तो नाड़ीजंघ ने कहा कि यहां से थोड़ी सी दूर पर एक मेरु व्रज नाम का नगर है। वहां का राजा विरूपाक्ष मेरा मित्र है। तुम उससे मेरा नाम लेकर अपनी व्यवस्था कहना मैं आशा करता हूँ कि मेरे कहने से वह तुम को अवश्य मुँह मांगा धन देगा। गोतम तत्काल ही वहां से विदा होकर मेरुव्रज नगर में जा पहुंचा। वहां जाकर उसने द्वारपाल के द्वारा राजाके पास सन्देशा पहुंचा दिया। राजाने मित्रका नाम सुनते ही तुरन्त उसे भीतर बुलवाया और पास बिठाकर गोत्र नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदि बहुत सी बातें पूछीं। ब्राह्मण ने कहा कि मेरा नाम गोतम है और गोत्र क्या बताऊं ? अब तो म्लेच्छ देश में रहने लग गया हूं। दरिद्रता के चक्र में पड़ा हुआ देश विदेश घूमता फिरता हूं। राजा ने समझा कि यह अपठित है इसी से शाखा प्रवरादि का नाम नहीं जानता। अच्छा जो है सो है पर मित्र ने जो इसे भेजा है अतः यथायोग्य सत्कार तो इसका करना ही चाहिये ऐसे सोच विचार बोला कि गोतम ! कल कार्त्तिकी पूर्णिमा है मेरे यहां सहस्र ब्राह्मण जिमाये जावेंगे, उस समय तुम भी यहां अवश्य आना। गोतम प्रसन्न होकर दूसरे दिन ब्राह्मण मंडली में जीमने गया। राजाने सबके साथ इसे जिमाकर एक भार सुवर्ण इसको दान में दे दिया। आते समय मार्ग में नाड़ीजंघ ने इसकी भेट हुई। उसने नियमानुसार अतिथि को भोजन कराकर पांखों से वायरा कर इसके परिश्रम को मिटाया। बड़े आव आदर से इसे विश्राम दिया।

नाड़ी जंघ तो थकावट के कारण सो गया और यह जागता हुआ विचार करने लगा कि प्रभात जब विदा होंगे तब भोजन क्या करेंगे। इसलिये कलेवा के लिये इसका मांस अच्छा है ऐसा दुर्भाव विचार उसने सूते हुये मित्र को मार डाला। फिर मांस ले चलने लगा। प्रभात होते ही राजा विरूपाक्ष नियत समय पर मित्र को आता हुआ न जानकर अनेक प्रकार की मन में कु-कल्पना करने लगा। अन्त में उसने पुत्र से कहा कि बेटा ! मेरा मित्र भोला है कदाचित् उस दुष्ट ब्राह्मण ने तो उसके साथ कुछ धूर्त्तता नहीं की है ? सो तुम शीघ्र जावो और भेद लेकर आवो। पिता की आज्ञा सुन पुत्र तुरन्त ही नाड़ीजंघ के आश्रम में पहुंचा। वहां उसे न पाकर नाना प्रकर के तर्क वितर्क करने लगा अन्तमें त्वरा के साथ उस ब्राह्मण के पास जाकर पिता के परम मित्र का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वृत्तान्त पूछा। जब वह गिड़गिड़ाया तो राजकुमार ने उसकी गठड़ी सम्हाली तो उसमें नाड़ीजंघ के मांस खगड मिले। पहले तो राजपुत्र ने बहुत झिड़का पर पिता की आज्ञा बिना दंड देना अनुचित समझ बांधकर राजा के पास ले गया। राजा उस दुर्घटना के समाचार सुन अत्यन्त ही उदास हो गया। धर्मशास्त्रियों की मर्यादानुसार ब्राह्मण को प्राणदगड देना अनुचित जान उसे कारावास दे दिया। वहां वह भयभीत हो तुरंत ही मर गया। जब अन्त्येष्ठिक्रिया का समय आया तो लोगों ने कहा कि महाराज ! इसका दाह करके अग्निदेव को तो अपवित्र मत बनावो। फिर दूसरों ने कहा कि इसे गाड़कर भूमिमाता को भी दूषित मत करो। तब तीसरा बोला इसे यौंही छोड़ दो सो चील काँवली खा जायगी। इस पर चील बोली—हम आकाशगामिनी हैं ऐसे दुष्ट को खाने से हमारी भी यह शक्ति क्षीण हो जायगी। जैसे—

कृतघ्नता सम लोक में, दूसर पाप न होय।
तासों मांस कृतघ्न का, यहां न खावै कोय॥

हां संसार में नीचाति नीच कीड़े होते हैं वे इसे खावेंगे यों उसे छोड़ तुरंत उड़ गई। इस प्रकार वहां विवाद हो रहा था कि सौभाग्यवश वहां श्री कामधेनु का आगमन हो गया। अतिथिपूजक नाड़ीजंघ का मांस वहां रक्खा था सो उसके ऊपर अनायास ही दुग्ध की धार बरसने लगी। दैव की इच्छा बलवती है उसके प्रभाव से वह तुरन्त ही सजीवित होगया। उसने उठते ही गोमाता को साष्टांग प्रणाम कर ब्राह्मण के विषय में प्रश्न करना आरम्भ किया कि अकस्मात् विमान में विराजमान श्री देवराज इन्द्र भी वहां पधार गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नाड़ी—सबको प्रणाम करके बोला महाराज ! बड़ी कृपा हुई सो आपने दर्शन दिये परन्तु एक मेरी विनय सुनिये ?

इन्द्र—बोलो।

नाड़ी—महाराज ! मेरी अतिथि सेवा पर पानी फिर गया। मेरे मित्र द्वारा यह दण्डित होकर मर गया। इसलिये यह अपवाद मेरे घर पर बना रहेगा।

इन्द्र—भक्तराज ! तुम राजा को दोष मत दो। यह ब्राह्मण पूर्व जन्म में बड़ा विवादी था। देवताओं में भेद बुद्धि रक्खा करता था। जो परमेश्वर को सर्वत्र देखता वही कल्याण को प्राप्त होता है पर जो उसकी अनन्त विभूतियों में से ऊँच नीच का भाव रखकर वैषम्य रखता और द्वेष फैलाता है वह अधोगति को प्राप्त होता है। इस ब्राह्मण में यह महादुर्गंण था इसलिये इस को इस जन्म में ऐसे २ सङ्कट सहने पड़े।

तिलक छाप मालादि का, करो न व्यर्थ विवाद।
मन भावे वैसा रखो, बाना विगत विषाद॥
सभी देव परमेश है, देवियँ माया रूप।
ऐक्य भाव से देत है, सब ही फल अनुरूप॥

नाड़ी—महाराज ! आपने बड़ी ही कृपा करके दिव्य ज्ञान सुनाया। यथार्थ में यही बात सत्य है। हे महाराज ! अब मेरी भी विनति सुनिये।

कामधेनु के प्रभाव से यह भी जी उठना चाहिये। यह सुन नाड़ीजंघ हाथ जोड़ कर बोला कि हे महाराज ! अभी आपने भेद बुद्धि त्यागने का उपदेश दिया है सो यथार्थ है। सबमें ईश्वर है और ईश्वर में सब हैं यह दोनों बातें अन्त में जाकर एक ही हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आपकी मुझ पर बड़ी ही दया हुई सो दिव्यज्ञानामृत पान कराया। अब जैसे ब्रह्मदेव ने कामधेनु के प्रताप से मुझे जिलाया अब मेरी प्रार्थना से आप इसे जिला कर मेरा कलङ्क मिटाइये नहीं तो मैं अनशन द्वारा प्राणत्याग करूँगा। इस पर इन्द्रदेव ने प्रसन्न होकर कहा तथास्तु। तुरंत ही ब्राह्मण जी उठा। इन्द्रदेव काम-धेनु और दोनों पवित्र मित्रों की दृष्टि पड़ते ही समस्त पाप उसके कट गये तत्काल उनके चरणों में गिर उसने अपने महापराध की क्षमा मांगी। सबों ने जीवधर्म का विचार कर अपराध क्षमा किया। उसी समय से ब्राह्मण के हृदय में ज्ञान सूर्य्य का उदय हुआ जिसके प्रताप से ब्राह्मण भी धर्मनिष्ठ होकर हरिभक्ति द्वारा परम पद का अधिकारी बना।

तेजा—महाराज ! मैं आप से थोड़े से गो सम्बन्धी प्रश्न पूछना चाहता हूं।

विश्व—पूछिये।

तेजा—गाय की क्या फलस्तुति हैं ?

विश्व०—यस्यै कापि गृहेनास्ति धेनुर्वत्सानुसारिणी।
मङ्गलानि कुतस्तस्य कुतस्तस्य तमः क्षयः॥

अर्थात् जिसके घर में बछड़े के पीछे २ चलने वाली एक भी गाय नहीं है उसके घर में सुख शान्ति का निवास कहां है ? और कैसे उसके तमोगुण का नाश हो सकता है।

यावदर्ध प्रसूता गौ स्तावत्सा पृथिवी मता।
पृथिवी तेन दत्तास्यादी दशींगां ददातियः॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् जब तक गाय आधी ब्याही हो जैसे उसके बछड़ेका खुर और मुख बाहर निकले हों तब तक वह पृथ्वी है । ऐसी गाय का दाता समग्र पृथ्वी दान के पुण्य का भागी है ।

तेजा—कैसी गाय देनी चाहिये ?

विश्व०-सुनो—

सुशीलां लक्षणवतीं युवतीं वत्स संयुताम ।
वहु दुग्धवती स्निग्धाम्, धेनुं दद्याद् विचक्षणः ॥

अर्थात्-सुशीला, अच्छे लक्षणों वाली, जवान, बछड़े वाली बहुत दूध से धाई और हृष्ट पुष्ट ऐसी गाय दान में देवे ।

तेजा—कैसी गाय नहीं देवे ?

बिश्व०-न कृशां ना पवत्सांवां बन्ध्यां रोगान्वितां तथा ।
न व्यङ्गां न परिश्रांतां दद्याद्गां ब्राह्मणायच ।

अर्थात्—दुवली, बछड़ेरहित, बांझ, रोगिणी, खोट्र कसर वालो थकी हुई ऐसी गाय ब्राह्मण को न देवे जैसे कहावत है किः-

"बामण ने देवे बूढ़ी गाय, धर्म नहीं तो दलदल जाय"

तेजा क्या गाय एक को दे सकते हैं अथवा श्याम लात में भी दे सकते है ?

विश्व०-नैका वहुभ्यो दातव्या यतो दोष करी भवेत् ।
वह्यौ विप्राय दातव्या श्रीमता रोग्य वृद्धये ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात्—एक ही गाय को बहुत से मनुष्यों के सीर में कभी नहीं देना चाहिये कारण इसमें पाप लगता है । हाँ यदि बहुत गायें एक को दी जांय तो इसमें कोई हानि नहीं प्रत्युत उस धनाढ्य दाता को अधिक फल की प्राप्ति होती है।

तेजा—गाय किसे देनी चाहिये ।

विश्व०-विद्वान और सुपात्र ब्राह्मण साधु वा दानाधिकारीको

यस्य चापिगृहे मूर्खो दूरे चास्ति बहु श्रुतः ।
बहु श्रुताय दातव्यानास्ति मूर्खे व्यतिक्रमः ॥

अर्थात्-मूर्ख चाहे घरी में हो और बिद्वान् चाहे दूर पर हो तो उसे बुलाकर देवे वा उसके पास भेजे । सुपात्र ही को देने का फल है कुपात्र को नहीं देवे । इसमें संकोच की बात नहीं है। कुपात्रता और सुपात्रता स्वभाव से ही सम्बन्ध रखती है सब समझ कर देना चाहिये । मूर्ख शब्द से यहां अनपढ़ से प्रयोजन नहीं कुपात्र से है।

धेनुर्यः प्रति ग्रह्णाति, यश्चधेनुं प्रयच्छति ।
उभौ तौ पुण्य कर्माणौ, नियतं स्वर्गगामिनौ ॥
जौनर गौ को लेत है । जो नर गो को देत ।
दोनो पुण्यात्मा अवशि, अभिमत गति को सेत ॥

तेजा—गुरुजी क्या वृषोत्सर्ग की आज्ञा भी शास्त्रों में है ?

विश्व०- सुनो वेद की कैसी आज्ञा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनड्वाह मन्वारभाम है सौरभेय ॐ स्वस्तये ।
सन इन्द्र इवदेवेभ्यो वन्हिः संता रणोभव ॥ ११ अ ३५ । १३

भाषार्थः (सौरभेयम्) गाय के संतान (अनड्वाहम) बैल को स्वस्तये । कल्याण के लिए (अन्वारभामहे) अंकित करने को हम स्पर्श करते हैं हे वृषभ (सः) वहतू (नः) हमारा (संतरणः) परलोक में तिराने वाला (भव) हो कारण तू (वन्हिः) अर्थात् लेजाने वाला है कैसे (देवेभ्यः) देवताओं के लिये (इन्द्रः) इन्द्र के समान जैसे इन्द्र अपनी देव सेना को पार पहुंचाता है वैसे इस संसार सागर रूपिणी वैतरिणी से पार कर । तेरे द्वारा जो गायों के वंश की वृद्धि हो उसी से हमारे धर्म कर्म और संतान की परंपरा चलती है ।

अनड्वान् दाधार पृथिवी मुतद्यामनड्वान्दाधारोवन्तारिदाम् ।
अनड्वान् दाधार प्रदिशः षड्डुर्वीनमनड्वान्विश्वं भुवनमा विवेश।
अथर्व । ३११ । ११

भाषार्थ-(अनडवान्) वृषम् (पृथिवीम्) पृथ्वी को (दाधार) धारण करता है (उत) और (अनड्वान्) बैल ही (द्याम्) देवलोक (उरू) विस्तीर्ण (अन्तरिक्षम्) स्वर्गको किंवा आकाश को धारण करता है (अनडवान्) बैल ही (प्रदिशः) पूर्वादि दिशाओं को (दाधार) धारण करता है (षड्डुर्वीः) ६ प्रकार के पृथ्वी सम्बन्धी पदार्थ अर्थात् दिवलोक पृथ्वी, दिन, रात, जल और औषधि इन छहों को धारण करता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है (अनडवान्) वृषभ ही (विश्वम्) समस्त (भवनम्) संसार में (अविवेश) अपने उपकारों द्वारा व्याप्त हो रहा है।

तेजा–कैसा बैल आंकना चाहिये ?

विश्व०–सुनो

एष्टव्यावहवः पुत्रा यद्देकोऽपि गयां व्रजते।
पिण्डेन चाश्वमेधेन नीलंवा वृषमुत् सृजेत् । वृ. स्या

अर्थात् पितर लोग बहुत से पुत्रों की इच्छा करते और कहते हैं कि हमारे वंश में कोई तो ऐसा होगा जो गया में जाकर हमारा पिण्ड श्राद्धादि कृत्य करे और नीला बैल आँके।

तेजा—नीला बैल कैसा होता है।

विश्व–जोरङ्ग में लाल हो। पूंछका अग्रभाग जिसका धोला हो और लाल हो खुर और सीगों का भाग हो वह नीला * बैल कहा जाता है।

---

* अंकित बैल नंदकेश्वर बाजता हैं उसमें देवांश आजाता है। अभी दो वर्ष पहिले रामसर ग्राम में एक चमत्कारी बैल प्रगटा। उसके चरित्र बड़े ही अनोखे थे गांव वालों ने प्रेमवश उसकी समाधी बनवाई। आस पास के गांव वालों ने सांड-बाबा, नन्या बाबा। का भेला भरवाया। श्रीमान् महन्त हरिदासजी महाराज नृसिंहमन्दिर अजमेर की प्रेरणा से उस दृश्यको देखने के लिये मैं भी रामसर गया था उसके मेले के महत्व को आँखों से देखा और वड़ा आनन्द पाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेजा-गाय के दूध के क्या २ गुण हैं ?

विश्व–धारोष्णं गोपयोर्बल्यं. लघुशीतं सुधासमम् ।
दीपनं चाभिदोषघ्न तद्धाराशिशिरं त्यजेत् ॥
धारोष्णंशस्यते गव्यं धारा शीतंतु माहिषम् ।
शीतोष्णं माविकं पथ्यं,.श्टतशोतममा पयः ॥

अर्थात् गायका दूध दुहा हुआ धारोष्ण बाजता है वह बलकारी, हलका, ठंडा अमृतसम स्वादयुक्त भूक बढ़ाने वाला और तीनों दोषों का शमन करने वाला है। यदि वह बहुत देर का पड़ा हो तो उसे न पीये (गरम करना उत्तम हैं) धारोष्ण दूध तो गाय का अच्छा है। दुहने के उपरान्त थोड़ासा ठंडा पड़ा हुवा भैंसका दूध लाभकारी और गरम करके ठंडा किया हुआ बकरी का दूध हितकारी है।

तेजा–गाय के दही के गुण बताइये ?

विश्व सुनिये।

गव्यं दधि विशेषेण स्वादुबल्यं रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं. पुष्टिकृत् पवनापहम् ॥
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् ।

अर्थात् गायका दही विशेष करके स्वाद युक्त बलकारी और रुचिका बढ़ाने वाला है। पवित्र, दीपन, चिकना, पुष्टिप्रद तथा बात नाशक है। भैंस आदिके दहियों से गाय का दही सभी बातों में अधिक उपकारी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेजा–तक्र (छाछ) के गुण क्या है ?

विश्व–तक्रं रुचिकरं बन्हि दींपनं पाचनं परम् ।
उद्रे येगदास्तेषां नाशनं तृप्ति कारणम् ॥

अर्थात् तक्र रुचिकारी अग्नि बढ़ाने वाली और पाचनशक्ति को भी ठीक करती है पेट के रोगों को मिटाती और चित्त को प्रसन्नता देती है। इस पर लोकोक्ति भी है कि, 'तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्'' अर्थात् अच्छी छाछ इन्द्र के लिये भी कठिन है।

तेजा–गायके माखन के गुण बताइये ?

विश्व–नवनीतं सिंत गव्यं वृष्यं वर्ण्ं रसाग्नि कृत् ।
संग्राहिबात पित्ता सृक् त्तयार्शोऽर्दित कासहृत् ॥
तद्धितं बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ॥

अर्थात्गायका लूणयां वा माखन सेया हुआ बल वीर्य और अग्नि का बढ़ाने वाला है। संग्राहि [मल बांधने वाला] बात पित्त, रक्त, त्तय, मस्सा, भँवल और कास का मेटने वाला है। बालक, वृद्ध सभी के लिये हितकारी है। पर छोटे बच्चे के लिये तो अमृत ही का काम देता हैं।

तेजा–गाय के घृत के गुण बताओ ?

विश्व–गव्यं घृतं विशेषेण चत्तुष्यं वृष्य मग्निकृत् ।
स्वादुपाक करं शीतं बात पित्तं कफा पहम् ॥
मेधा लावण्यकांन्त्योजस्तेजोवृद्धि करंपरम् ।
अलत्मी पापरत्तोघ्नं बयसः स्थापकं गुरु ॥
वल्यं पवित्र मायुष्यं सुमङ्गल्यं रसायनम् ।
सुगन्धं रोचनं चारू सर्वाज्येषुगुणाधिकम् (भा० प्र०)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्थात् गाय का घी बहुत करके आंखों की ज्योति बढ़ाने वाला है। वीर्यवर्धनकारी और अग्नि को चैतन्य करता है। स्वाद-युक्त, पचाने वाला ठंडा है। वात पित्त और कफ ऐसे त्रिदोषों का नाशक है। बुद्धि सौन्दर्य, चमक और तेज का विशेषवर्द्धक है। दारिद्र्यभञ्जन और राक्षसों का क्षयकारी है आयुष्य बढ़ाने वाला और भारी है। बलकारी पवित्र तथा आरोग्यप्रद है पदार्थों में सर्वोपरि रसायन है, सुगन्ध सम्पन्न रुचिकर और दिव्य है। यह सभी प्रकार के घृतों में श्रेष्ठ माना गया है। सामान्य घृत के गुण आयुर्वेद में इस प्रकार हैं।

घृत मायु र्घृतं तेजो घृतं बुद्धि र्घृतं बलम्।
बिना घृतेन यो भुंक्ते तस्य नास्ति चतुष्टयम्॥

अर्थात घृत आयु घृत तेज, घृत बुद्धि और घृत ही बल है। जो बिना घृत के रूक्षान्न खाता है उसके शरीर में से उपरोक्त चारों गुण नष्ट हो जाते है।

तेजा- गो मूत्र के गुण बताइये

विश्व-गोमूत्रं कटु तीक्ष्णोष्णं क्षारं तिक्तं कषायकम्।
लध्वग्निदीपनं मेध्यं पित्तकृत् कफवातहृत्॥
शूलगुल्मोदरानाह कराऽर्वक्षमुखरोगजित्।
किलासगदवातामवस्तिरुक् कुष्ठनाशनम्॥
कासश्वासापहं शोथकामलापाण्डु रोगहृत्॥

अर्थात् गाय का मूत्र कड़वा, तीखा, गरम, खारा, तीता, कसायाला (कसैला) हलका, अग्नि का बढ़ाने वाला, दीपन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पवित्र, पित्त उपजाने वाला, कफ़ और वात का नाशक, शूल रोग का दूर करने वाला, किलास, ग्रामवात, वस्तिरुक तथा कोढ़ों का मिटाने वाला, सोई, दूर करने वाला, कामलापाराडु (पीलिया) ग्रादि रोगों का नाशक है।

तेजा—क्या सभी गायों का ?

विश्व—गायें तो सभी पवित्र हैं. परन्तु ग्रालसी व स्वार्थी लोग उनकी स्थिति पर ध्यान नहीं देते। विना सम्हाल वे ग्रलड़ बलड़ चाहे सो खाने लगती हैं। इसलिए वे बंध्या हो जाती हैं। गोमूत्र ग्रौर गोयम दोनों ही उत्तम ४ पदार्थ उनके बिगड़ जाते हैं। इसलिए जिन गायों की देख रेख है उनका गोमूत्र ग्रच्छा ही है पर जिन्होंने उनके खाने पीने की सार सम्हाल नहीं रक्खी उनका उपरोक्त गुण देने में संदिग्ध फल है जैसे—

ग्रत्यंत क्षीण देहाया: वन्ध्यायाश्च विशेषत: ।
रोगार्ताया: प्रसूताया: न गोर्गोमयमाहरेत् ॥

ग्रर्थात्—ग्रत्यंत बूढ़ी, बांझ, रोगग्रस्त, ग्रौर ब्याई हुई गायों का गोबर वर्जनीय है।

गोबर के गुण बताइये ?

शतं वर्ष सहस्राणां तपस्त त्यंसुदुष्करम् (गोभिः पूर्वविसृष्टा भिश्चक्रेम श्रेष्ठतामित]।

ग्रस्मत्पुरीष स्नानेन जनः शुद्धयति सर्वदा [शकृता चयषि-क्षार्थ कुर्वीरन् देव मानुषाः]।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ताभ्योवर ददौ ब्रह्मा तपसोऽन्तेस्वयं प्रभुः [एवंभवात्विति विभु लोंकांस्तारय सर्वदा ॥

अर्थात्–किसी समय में गायों ने कई सहस्त्र वर्षों तक कठिन तप किया इस अभिप्राय से कि सृष्टि के आरंभ में हमारी उत्पति हुई तो हम अपनी मान मर्यादा वनी रक्खें। हमारे गोमय और गोमूत्र के स्नान से देवता और मनुष्य पवित्र गिने जावें। ऐसे जब तपस्या समाप्त हुई तो ब्रह्मदेव ने आकर इन्हें वर दिया कि अच्छा तुम्हारा मनोरथ सफल हो। फिर वहां लक्ष्मीजी का भी पधारना हुआ तो गायों ने उनसे प्रार्थना की।

गावः ऊचुः—अवश्यं मानना कार्या तवा स्माभिर्यशिस्वनि।
शकृन्मूत्रे निवसत पुण्य मेतद्धि नः शुभे ॥

अर्थात्–हे यशस्विनि देवीजी ! हमारा सत्कार हो ऐसी कृपा आपको भी करनी चाहिये। इसके लिए हमारे गोमय और गोमूत्र में निवास करो। यही पवित्र वर हमें दीजिए।

श्री रुवाच–दिष्ट्या प्रसादो युष्माभिः कृतो मेऽनुग्रहात्मकः।

लक्ष्मीजी कहती हैं कि मुझे प्रसन्न करने के लिए जो तुमने अपने भक्तों का हित चाहा है सो हे सुखदेनी गायों ! मैं प्रसन्न होकर वर देती हूं कि तेरा गोमय और गो मूत्र में मेरा निवास रहेगा जो इनका सेवन करेगा उसके पाप क्षय होंगे और अन्न धन की वृद्धि होगी। यह बात प्रत्यक्ष है–कि गाय के छाणे बेच २ कर भी सैकड़ो रुपये लोग कमा लेते हैं।

तेजा—पंचगव्य क्या वस्तु है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विश्वरूप-पंचगव्य दधिक्षीर घृत गोमूत्र गोमयैः ।

अर्थात्—गाय का दही, दूध, घी, गोमूत्र, और गोबर इन पाँचो वस्तुओं के मेल से जो पदार्थ बनता है। वही पञ्च गव्य है।

इसी प्रकार दूध, दही, घृत, मधु [शहद] और शक्कर के मेल से पंचामृत बनता है। वैष्णव लोग शालग्रामजी की प्रतिमा को न्हवाकर चरणामृत लेते हैं और शैव नर्मदेश्वर का चरणामृत लेते हैं।

तेजा—इनका क्या परिमाण हैं ?

विश्व०-इसके तोल में अनेक मत भेद हैं पर सभी को समभाग लेना यह एक स्थूल विचार गोतम मुनि का है।

तेजा—दूध के झागों में क्या गुण है ?

विश्व०—गो दुग्ध प्रभवं किंवां छागी दुग्ध समुद्भवम् ।
भवेत् फेन त्रिदोषघ्न रोचनम् बल वर्धनम् ॥

गाय के दूध का झाग हो या बकरीके दूध का झाग हो दोनों ही त्रिदोष को मिटाने वाले रूचिकारी और बलके बढ़ानेवाले हैं।

तेजा०-यदि गौ को अाफरा हो तो क्या करना चाहिये।

विश्व०-तो लूण काचरी छाछ को यथाशक्ति मिला कर नाल द्वारा देनी चाहिये।

तेजा०-गौ यदि सूई खाजाय तो क्या करना चाहिये।

विश्व०-विलोरी पत्थर बड़ा से बड़ा [चुम्बक गौ के मुँह से पोयठा करने की जगह तक लाने से सूई निकल आती हैं अथवा बिजोरा खिलाने से सूई गल जाती है, बराबर तीन दिन तक]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेजा०-गौ को यदि बुखार आता हो तो क्या करे।

विश्व०-तो गुड़का पानी ओटा कर नालद्वारा देते है। बहुधा हींग को भी रोटी के साथ देते हैं।

तेजा०-गौ के माता हो तो क्या करना चाहिये।

विश्व०-काली मिर्च और घी देना चाहिये या माता आपही ढल जाती है।

तेजा०-यदि गौ के कीड़े पड़ जाय तो क्या करना चाहिये।

विश्व०-नीमका तेल, तारपीन का तेल और डामर का तेल घाव में डालने से आराम होगा।

तेजा०-अगर गौ दुवली हो तो मोटी कैसे करे।

विश्व०-जौ और गेहूँ का दलिया गरम कर के देना चाहिये।

तेजा०-यदि गौ को छेरा हो तो क्या करे।

विश्व०-ज़बार का आटा छाछ में मिला कर नाल द्वारा देना चाहिये।

तेजा०-गौ का दूध बढ़ाना हो तो क्या करे।

विश्व०-जो खल, काकड़ा या लापसी देना चाहिये।

तेजा०-गौ के गले में गाँठ हो तो क्या करे। [गंडमाल]

विश्व०-इतवार के दिन डाम लगाओ [या लीकड़ी]

तेजा०-गौ के चिचड़े खिराने हों तो क्या करे।

विश्व०-मीठे तेल में नमक मिलाकर लगाओ और बुग बैठते हों तो युक्ति से उनके ऊपर गोबर पटक कर उन्हें पकड़ २ कर अलग फेंकना चाहिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेजा०-गौ का सींग टूटजाय तो क्या करे।

विश्व०-स्त्रियाँ के सिर के बाल मीठे तेल में गरम करके गौ के सींग पर बाँध दो।

तेजा०-गौ की आँख में से जल गिरता हो तो क्या करे।

विश्व०-तो फिटकरी के कुल्ले करके गौ की आँख पर डाले या सामर का सींग घिस कर लगाना चाहिये।

तेजा-गौके बच्चा होते समय दर्द हो तो क्या करना चाहिये।

विश्व—तो गुड़ और अज़वान गरम करके देना चाहिये या मेथी और गुड़ देना चाहिये।

तेजा०—यदि भूल से गाय सम्बन्धी कोई अपराध बन आ जाय तो क्या करना चाहिये।

विश्व—प्राजापत्यादि प्रायश्चित धर्म शास्त्र में बताये हैं अपराधानुसार करना चाहिये।

तेजा—प्राजापत्य किसे कहते हैं ?

विश्व—त्र्यहं सायं त्र्यहं प्रातस्त्र्यहमद्यादयाचितम्।
त्र्यहं परन्तु नाश्नीयात् प्राजापत्यं चरन्द्विजः ॥
सायं द्वाविंशतिग्रासा प्रातः षड्विंशतिस्तथा।
अयाचिते चतुर्विंशः परं चानशनंस्मृतम् ॥

अर्थात्—यह व्रत १२ दिनों में समाप्त होता है। ३ दिन सायङ्काल भोजन करना। ३ दिन प्रभात समय खाना। ३ दिन माँगे जो मिल जाय उसी पर रहना और पिछले ३ दिनों में कुछ नहीं खाना। श्यामके समय ३२ ग्रास लेवे। प्रभात को २६ ग्रासों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से काम चलावे [बिना माँगे २४ ग्रास लेवे । इसके उपरान्त अनशन व्रत अर्थात् उपवास करे।

तेजा—ग्रास कितते २ बड़े चाहिये ?

विश्व—कुक्कुटाण्ड प्रमाणंतु ग्रासमेकं विधीयते।

अर्थात् कूकड़े के अंडे के समान ग्रास होना चाहिये।

जब समस्त प्रश्न पूछ चुका तो गुरुजी से आज्ञा ले अपने स्थान में जाकर विश्राम किया। प्रभात होते ही गो सेवा को अपना परम धर्म स्थिर कर श्री दधिमथी भगवती को साष्टांग प्रणाम कर प्रार्थना की कि हे मातेश्वरी ? आज से मैं गो सेवा की 'दीक्षा' लेता हूँ मेरी सब भाँति रक्षा करना और धर्म के कार्य में मेरे इस नाशवान शरीर का व्यय करके मेरे इस जन्म को सफल करना। भगवती की कृपा से जयमाला देवी की मूर्ति से खिसकी और तेजाजी ने उसे धारण की। फिर अजमेर निवासी गुरुवर्य १०५ श्री विश्वरूपजी त्रिपाठी के पास आकर बोले कृपानिधान ! अब धर्म संपादन करने की आज्ञा दीजिये। गुरुजी बड़े प्रसन्न होकर बोले तेजाजी ! सिधावो। गृहस्थाश्रम के नियम पालते हुए गो ब्राह्मण और धर्म की सेवा किया करो। इस प्रकार सदुपदेष्टा गुरु से शिक्षा ग्रहण कर चले तेजाजी अपने ग्राम खड़नाल में आ पहुंचे। तभी से इनके वंशजों को गुरु माने।

अब वह तेजाजी वैसा नहीं रहा। रात दिन श्री शिव पार्वती के ध्यान में मग्न रहता। ग्राम के सभी मंदिरों को एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव से देखना। नित्य कथा भागवत सुनता । गो ब्राह्मण और साधु सेवा में बहुत चित्त देता । बड़े बूढ़ों का अत्यन्त मान रखता। पर स्त्री को मा बहन के समान समझता । पहले वह अपने गाँव की गायों में ही समता रखता अब समस्त गो जाति में ममत्व बुद्धि रखने लगा ८ वें दिन गायों के जुये चींचड़ी बुग आदि दुःखदाई जीवोंको उनके शरीरसे हटाता। शक्तिसे अधिक बोझ नहीं लादने देता, और आराचुबोनेसे बैलोंके शरीर पर जो चिन्ह पड़ जाते हैं उन घावों से बैलों को 'बचाता'। यों तो वह घोड़ा ऊंट गधा, भैंसा बकरा लरड़ा आदि सभी पशुओं पर दया दरसाता परन्तु गायों पर तो उसका अगाध प्रेम हो गया था उसका ऐसा अदम्य उत्साह देख लोग कहने लग गये थे कि यह तो श्रीकृष्णचन्द्र के सखाओंमें से कोई यदुवंशी जन्म लेआया है। गायें चराते समय सदा वह बंशी बजाया करता था और भक्तिमें सतत लवलीन रहता था। एक समय की बात है कि जाटों की बिरादरीमें कोई विवाह मँडा था गाँवमें जाटोंही की बस्ती थी सो बहुतसे मनुष्य बरातमें चले गये और इनको सब ग्रामका भार दे गये। संयोगवश उसी रातको लुटेरोंने गायें घेरीं। तेजा ऐसा कब चूकनेवाला था। उसने तुरन्त उन्हें जा दबाया । दो चार घाव तो इनके भी शरीर पर हुये परन्तु चूकती गायों को छुड़ा लाने के कारण आस पास तो क्या किन्तु दूर २ के गाँवों तक उनकी धाक बैठ गई। तब से लोगों ने इनको उस गाँव का मानों राजा ही थरप दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गाँव के बाहर एक शिवालय था। उसके पास ही पनघट का कुवा था तेजाजी उसी शिवालय में जाकर बहुधा पूजा पाठ किया करते थे। ये स्नान करके श्री सूर्य नारायण को अर्ध देते। दिन को ओंनमः शिवाय इस षड़त्तरी मंत्र की ११ माला फेरे पहिले रोटी नहीं खाते। इसी प्रकार रात को "ओं ऐं क्लीं श्रीं हीं चामुण्डाये विच्चे" इस मंत्र की ११ माला बिना फेरे सोते नहीं थे। एक दिन ये ध्यान में मग्न थे कि उसी समय एक गूजरी भी शिवजी के जल चढ़ाने को आई। वहां इन को ध्यान में मग्न देख दंग रह गई। जब तेजाजी की आँख खुली तो गूजरी ने हसँी में कहा कि ऐसी भक्ति कर के शिवजी से आप क्या माँगते हो? पहली को तो छोड़ ही रक्खी है इतना बचन सुनते ही तेजा बोल उठा कि ऐं क्या कहती हो? तुम गाँव ब्याणजी हो सो मुझे तुम्हारी बात पर कभी भरोसा नहीं आता। क्या यह बात सत्य है? तब वह बोली इस में किसी भी। बात का सन्देह मत कीजिये। तेजाजी ने गांव के बूढ़े बड़ेरों से पूछा तो उन्होंने कहा कि भाई जान बरात तो चढ़ी नहीं थी पर तेरा बाप कहा करता था कि मैंने अपने लड़के का विवाह थाली में बिठाकर किया है फिर भी यह घरू बात है इसका भेद तेरी बहन जानती होगी।

तेजा—मेरी बहन कहां है?

पटैल—अजमेर के पास तबीजी गांव है वहां उसे परणाई है।

पटैलजी के वाक्य सुनते ही तेजाजी घर आकर बहन की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्कण्ठा से घोड़ी पर सवार हो श्रीगणेशजी को मनाय चलते २ तीन तथा चार दिनों में तबीजी गांव में पहुंचे । गांव की स्त्रियों ने अकस्मात् आये हुये युवा को देखकर राजलबाई से कहा कि बाईजी अब के तो तुम्हें लेने को तुम्हारे भाईजी आये हैं । इस पर राजलबाई ने कहा कि गांव की गाय भैंस को भी कोई ढूँढने आता है पर मुझे तो कोई बुलाने चलाने वाला नहीं है । इस प्रकार बातें हो ही रही थी कि घर पूछते पूछते तेजाजी वहां आ पहुंचे । तेजाजी के बहनोई ने बड़े आदर सत्कारके साथ उनको वहां ठहराया और भोजनादि कराके व्याही सगों के गीतगाल आदि द्वारा अच्छा उत्सव मनाया । दूसरे दिन अपनी बहन को पीयर ले जाने का अनुरोध किया । तेजाजी का बहनोई बड़ा सुशील व्यक्ति था । अतः उसने उनकी बात मान अपनी स्त्री को उसके पीयर भेज दी । मार्ग में पहले श्रीअजगन्ध ‡ महादेव का स्थान आया । दोनों वहां स्नान कर देवाधिदेव महादेवका पूजन किया फिर वहां से चलकर श्रीतीर्थराज पुष्कर के तटपर आये । यहां स्नान ध्यान कर यथाशक्ति दान दे श्री वाराहजी ब्रह्माजी

---

‡ इसे आजकल अजैपालजी का मंदिर कहते हैं। शिवलिंग तो बड़ा ही प्राचीन है सागरमती के निवास पर यह लिंग स्थापित किया गया है। अजमेर के बसाने वाले राजा अजयपाल ने वृद्धावस्था में योगी बनकर शिवार्चन किया था । यहीं इस राजर्षि का समाधि स्थान है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अटमटेश्वर कपालेश्वर आदि देवताओं के दर्शनकर अपनी यात्रा को सफल की।

बातों ही बातों में बहन ने कहा कि भाई ! किसी समय तेरा यहां विवाह हुआ था। तेजाने कहा मुझे तो स्मरण नहीं। तब वह बोली मारवाड़ से एक संघ गङ्गाजी गया था। संयोगवश पनेर के पटैल भी साथ हो गये। कई दिन साथ रहने से गाढ़-स्नेह हो गया, उस संघमें तेरी सासू और मा दोनों गर्भवती थीं, सुना है कि दोनों ने प्रण किया कि अपन दोनों आपस में व्याण बन जावें। ईश्वरेच्छा से एक के लड़का और दूसरी के लड़की हुई, प्रतिज्ञाके अनुसार थालीमें बिठाकर दोनोंका ब्याह पुष्करजी के मेले पर कराया गया, उन दिनों में मैं भी बहुत छोटी थी सो कुछ कुछ सुरत है। फिर किसी बात पर झूठी गंगाजली उठाने के कारण ब्याहियों में बड़ी अणबणत होगई तब से जाण आण छूट गया, भगवान् ऐसा काल्या बैर किसी के घराणे में नहीं करे, आज तुझ सपूत ने बैर धोया है।

जब बहण की बात सुनी तो तेजाजी को उस व्याणजी की बात पर भरोसा आया। उन्होंने कहा बाई ! और तो भाई बन्धु सब हाँसी के हँसने वाले हैं, यदि तेरी सम्मति हो जाय तो मैं अब के सावणं तीज पर सासरे जाऊं ? भाई की बात सुनते ही राजलबाई सन्नाटे में आगई, वह गिड़गिड़ाकर कहने लगी बीरा ! बैरभाव की बात है न जाने तेरे साथ वहां कैसा बर्ताव हो इसलिये मैं तो सम्मति नहीं देती। यदि तेरी इच्छा हो परणने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगी तो गांव चल में कोई जोड़ तोड़ बैठा दूंगी। पण जींकी आड़ी रात ऊंकी कांई बात। तेजा भी थोड़ीसी बात में समझ गया और वे पुष्कर से बिदा हुए।

चलते समय बहन ने कहा भाई ! मार्ग में मेड़ता में श्रीचार-भुजाजी के और गोठमांगलोद में श्रीदधिमथी माताजी के ये दो दर्शन मुझे थोड़ा बहुत फेर खाकर भी करा दे कारण पीयर में मेरा कौन है ? जो है सो तो मेरे साथ ही है। तेजाजी बात मान कर पहले मेड़ते की ओर चले। वहां जाकर श्रीमोरमुकुटधारी कुञ्जबिहारी के दर्शन कर दोनों ही ने अपने नेत्रों को आनन्द दिया। वहां से चलकर श्रीदधिमथी के द्वार पर पहुँचे अपनी कुलदेवता के दर्शन कर दोनों ने बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और वहां एक रात्रि निवास कर अपने ग्राम को पहुँचे।

उन दोनों बहन भाइयों के आगमन के समाचार पाते ही गांव के सब नर नारियों ने इनका बड़ा स्वागत किया। चिरकाल से बहन भाइयों का मिलाप जान सबके हृदय में आनन्द का स्रोत उमड़ आया। थोड़े से समय के अनन्तर तेजाजी के माता पिता और विवाह की बातें चलीं, तब तेजाजी को विश्वास होगया कि उस ल्याण गूजरी का कहना यथार्थ है। चौमासा की ऋतु आई। नये बादल उठ उठकर आकाश को मनोहर बनाने लगें। सूखी धरती हरी भरी दिखाई देने लगी। ठौर, कोयल, मौर, पपैया, आदि मनोरम शब्दों द्वारा विरहियों को सताने लगे, उसीसमय में तेजाजी का भी मनोभव जाग उठा। उन्होंने मन में विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया कि विवाहित पुरुष को अवश्य अपनी स्त्री की सुध लेना चाहिये। अन्यथा वह पाप का भागी होता है। ऐसे सोच विचार कर बहन से कहने लगे कि बाई! यदि तेरी सम्मति हो तो मैं भी सासरे जाऊँ। कारण कई लोग ताने सुनाते हैं और लुगाइयां भी कहती हैं कि "छती लुगाई तेजो रंडवापन भोगे छै"। सो मुझे आगे का मार्ग बता। बहन बोली भाई! कोई काम बरजता नहीं करणो। मैं तो वैरभावों की बातों से जानती हूँ कि तेरा वहां जाना कदापि लाभकारी नहीं होगा। यदि तुमको गृहस्थकी इच्छा है तो दूसरा विवाह कर लो। इस पर तेजाने कहा बाई!

जीते जी स्त्री को तजै, उसे लगे अति पाप।
देव पितर सब ही उसे, देत रहें नित शाप॥
नारी की सम्मति बिना, जो दूजी परणाय।
वह अरु उसके सहायक, घोर नरक में जाय॥

और बाई! पहिले विवाह के फारकती हुये विना दूसरे विवाह की चर्चा नहीं करता। रामजी करेगा सो होगा। तू तो तेरी ओर से आज्ञा देदे। भाईका पूरा हट जान बहन उदास हो बोली बीरा! तू जाना ही चाहता है तो अपने गांव के किसी अच्छे ब्राह्मण से अच्छा मुहूर्त्त पूछ सिधाना। परमेश्वर अच्छा ही करेगा

तेजा बोला बहन! यह तुमने अच्छी बात कही। हम तो जटाधारी शङ्कर के उपासक हैं। जटा से उत्पन्न होने वा जटा रखने ही से जाट कहाते हैं। ब्राह्मणों का बचन प्रमाण। यह तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने पूर्वजों की रीति ही है मैं अवश्य अभी जाकर शुभ मुहूर्त पूछकर आता हूँ। यह कह कर ज्योतिषीजी के द्वार पर पहूँचा।

तेजा कह सुन ज्योतिषी, देखो शकुन विचार।
मुझको जाना सासरे, कौन तिथी शुभ वार॥
लग्न देखकर ज्योतिषी, सुन हो तेजा वीर।
रण होसी जय पावस्यो, जगसी तन में तीर॥

इतनी सुनते ही तेजाजी बोल उठे।

गौ, ब्राह्मण अरु देश के, हित में तन यदि जाय।
तो जीवन मम सफल है, धन्य पिता अरु माय॥

ऐसा कहकर तेजाजी घर आया बहन से मिल श्रीगणेश मनाय विदा हुये।

पन्द्रह सौ पच्यावनां, जन्माष्टमी प्रभात।
तेजाजी चढ़ अश्व पर, बिदा हुये हरषात॥

जिस समय तेजाजी विदाहुए उस समय कई प्रकार के अशकुन सामने आये। कहीं छींक हुई तो किधर से रोने का शब्द सुनाई दिया। कोई खुले लटे नारी मिली। किसी ने जाते हुए टोका भाई! आजतो उपवास का दिन है भूखे पेट जाना ठीक नहीं। इस वक्त अकाल भी पड़ा हुआ है। मार्ग में खाने पीने की भी तुम को अरचल भोगनी पड़ेगी। दुर्भिक्ष के कारण लुटेरों चोरों का भी पूरा कष्ट है। तेजाजी बोले भाईयों। रोको मत आज रात को तो मैं श्रीदधिमथी के मन्दिर में जाकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहूँगा। वही मेरे सकल अमङ्गल नाश करेगी ऐसे अनेकों उत्पातों का अनुभव करता गोठमांगलोद के पास श्रीदधिमत माता के मन्दिर में पहुँचा। देवालय में पहुँच कर साष्टांग प्रणाम कर प्रार्थना करने लगा कि माईजी या तो मैं जीता हुआ अपनी स्त्री को कुशलपूर्वक यहां लाकर जोड़ा जोड़ी से तेरी पूजा करूँगा वा संग्राम में युद्ध कर विजय को प्राप्त करूंगा। इस प्रकार प्रार्थना करता हुआ विधिपूर्वक पूजन किया। फिर श्याम हुई तो भगवन्नाम स्मरण करता हुआ जागरण करता रहा। जब अर्ध रात्री का समय आया तो दिन भर की थकावट के कारण तेजा की आंख लगगई तो क्या देखता है कि श्रीकृष्णचन्द्र वन्शी बजा रहे हैं गायें आस पास खड़ी हैं। एक राक्षस आया कुछ गायें खोलकर ले गया। भगवान बोले अरे सखाओं! हैं कोई धर्मवीर जो इनकी रक्षा करे और अमर होवे। इतने में तेजा की आंख खुली तो क्या देखता है कि वहीं दधिमथी का मन्दिर है तेजाने निश्चय कर लिया कि देवता ने दृष्टान्त दे दिया। देवता और ब्राह्मण की बात मिलकर एकै एकै ११ होगई रात को तोपंजीरी प्रसाद लेकर सो रहा और प्रभात उठते ही स्नान ध्यान कर श्रीभगवती को दण्डवत कर प्रार्थना की कि मातेश्वरी! तू लज्जा रखना ऐसा कह वहाँ से विदा हुआ।

आगे चलकर तेजा १० वा कोश पहुँचा तो क्या देखता है कि वनमें आग लग रही है। पेड़ पौधे सब जल रहे हैं खेत के खेत सूखे पड़े हैं। वहां अकस्मात् ऐसी दुर्घटना देख तेजा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चकितसा हो गया। हाथ जोड़ भगवान से प्रार्थना करने लगा हे गोपाल ! आप गायों की पालने वाले हो। पहले तो दुर्भिक्ष और पीछे ऐसा भयङ्कर दावानल का प्रकोप ? भला इस देशके गाय भैंस आदि प्राणी क्या खावेंगे ? ऐसे सोच विचार करता था कि उसकी दृष्टि एक पेड की ओर पड़ी जिसकेनीचे एक गाय छट पटा रही है और उसके पैरों में सांप लिपटा है। तेजाजी ऐसे करुणोत्पादक दृश्य देख तुरन्त ही वहां जा पहुँचे। जैसे तैसे गाय को घसीट बाहर की और अधमुवें सांपको भी उसके शरीर से अलग हटा दिया। इस के अनन्तर जब आगे बढ़ा तो वह भी वार वार आडा आकर मार्ग रोकने लगा। तेजाजी ने घोड़ा ठहरा कर कहा कि भाई। तेरा मेरा यदि कोई पूर्व जन्म का वैर हो तो लेले पर मुझे जाते हुए मत रोक। सर्प बोला कि मैं तुझे डसूँगा। तेरे मेरे पुराणा वैर हैं। लगभग ४०० वर्ष हुए होंगे कि महाराजा पृथ्वीराज को खाद्र के खजाने की किसी ने जाकर सूचना दी थी। दुर्भाग्यवश किसी देश द्रोही ने शाहबुद्दीन को भी चिता दिया। वह यहां आया और सोभाना गांव में युद्ध हुवा। बादशाह पराजित होकर भागा। महाराजा पृथ्वीराज यहां आखेट को आये और अपार धन यहां से लेगये। उस समय मैंने भी कलह बढ़ा कर विधर्मियों का पक्ष लिया था। जो अपने बान्धवों के साथ तो ठसक रखता और विधर्मियों के पक्ष का समर्थन करता है उसकी बड़ी ही दुर्गति होती है। अन्त में क्षत्रियों की वीरता के आगे विधर्मियों को मुँह छिपा कर भागना पड़ा था। उस समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तैने मेरे पुत्र को अनुचित रीति से मारा था वैसे महापाप के कारण मेरा पुत्र तो मेरे सामने मरा और मुझे द्विजिह्व होने से सर्प की योनि मिली। उसी समय मैंने एक महात्मा से पछतावा करके पूछा तो उसने कहा कि किसी एक महापुरुष के हाथ से तेरा उद्धार होगा तब इस अनर्थ से छूटेगा। अभी तैंने जो गाय को बचाई इस कारण ऐसे पुण्यात्मा को मारना तो नहीं चाहता केवल प्रतिज्ञा पुरी करने को थोड़ासा डसूंगा। इस प्रकार आश्चर्य जनक पुरानी घटना को कहने से तेजा बोला नागदेवता! अच्छा हुआ जो तूने बैर बढ़ाने से मुझे छुडाना चाहा ले मैं खड़ा हूँ तू अभी मुझको डसकर तेरा हृदय ठंडा कर। तब सर्प बोला कि हे धर्मवीर! मुझे भासता है इसलिये अभी तो तू जहाँ जाना चाहता है वहां जा। पीछे आते ही तेरा मेरा शरीर साथ साथ छूटेगा। तूं तो उधर जायगा और मैं देश द्रोह का प्रायश्चित करने को कई जन्मों में निरन्तर धर्म की सेवा करूंगा, तब किसी जन्म में उत्तम गति पाऊँगा।

इस प्रकार नाग देवता से अवकाश ले तेजाजी सुसराल की और आगे बढ़े। २ तथा ३ दिन में, अपने, अभीष्ट स्थान पर पहुँचा। गांव के बाहर ही एक अच्छा सा कुवाँ था वहां जाकर ठहर गया। संयोग वश तेजा की वहु और दो तीन उसकी साथनियां जल भरने को आई। अकस्मात् असाँदे मनुष्य को देखकर पूँछने लगीं। ज्योंही उसके मुँह से खड़नाल का नाम सुना त्योंही देश काल जान तेजा की स्त्री ने मुँह छिपा लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हंसती हंसती फिर तो सहेलियों ने खोद खोद कर बातें पूछी। तेजाजी की पत्नी और उसकी साथनियों के लिये तो वह दिन सोने का सूरज वाला होगया। तुरंत ही वे समाचार गांव में पहुँच गये। उस शुभ समाचार से गाँव में प्रायः सभी के दूधों मेंह बरसा और घृत के दीपक जले पर तेजाजी की सासू जो कर्कशा थी जल भुन कर खाक होगई। इधर तेजा स्नान ध्यान से निवृत हो घर पूछता पूछता अपनी ससुराल की पोल में जा पहुँचा। देखते ही सासू लाल पीली आंखें कर बोली कि आज बहू को लेने की तो झट सूझगई पर मेरा पति मरा और बहुत दुःखड़े पड़े तब तो सूरत नहीं दिखाई। बोंड़ल के लेने देने की बात तो मत छेड़ना घर आये हो तो रोटी का टुकड़ा खालो और दुफैरी ढ़ाल कर रास्ता नापो। तेजाजी ने सासू के मुख से ऐसे दग्धाक्षर सुन मन ही मन उदास हो बोले कि मेरे तो माँ बाँप मर गये थे। कोई धणी धोरी नहीं जो मुझे समझाता। अब सूरत सम्हालते ही मैं आगया हूँ मुझे क्षमा करो। तेजाजी के ऐसे चतुराई के बचन सुन उनकी धर्म पत्नी तो बड़ी ही प्रसन्न हुई और बारम्बार बालाजी भैरूँजी को मनाती थी कि महाराज! यह परस्पर का बैर भाव मिट जाय और सब आनन्द हो जावें पर क्या हो मनुष्य का बिचारा कुछ नहीं होता। बड़ोंका कथनहै कि होगा वही सो राम रचि राखा फिर पोल में टूटा भागा मचल्या बिछा दिया और फटा पुराणा कंथल्या उस पर डाल दिया। तेजाजी स्वभाव के गंभीर थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उनने इन बातों पर तिल भर भी ध्यान नहीं दिया और आये गयों के साथ प्रेम की बातें करते रहे। थोड़ी सी देर में कुड़ती जलती सासू ने काचा कोरा, अन्न बनाकर सामने धरा। बेटी ने उस खोड़ली माता को बहुत समझाया कि जन्म भर में पहिली बार ही जँवाई आया है कुछ तो दया विचार। पर उसके मन में तो दुःख देने की थी। वह चाहती थी। कि अपमान से खिन्न होकर जब यह चला जायगा…तब इस लड़की का
नाता किसी दूसरे से कर दूँगी। जवों के आटे की बली जली और लूखी रोटी और खाटी छाछ तेजाजी के पास फूटी थाली में लाकर रक्खी तेजाजी ने अन्न को देख सादर शीस नवाया और भगवान् के भोग लगा कर एक दो ग्रास ले लिये। फिर भी कर्कशा चुप नहीं रही और पास आकर बोली कि मेरा मन तो ऐसे खोड़ले जँवाई के लिये रोटी तक बनाने का नहीं था पर क्या करूँ गाँव खोड़ला है। जब ऐसा कठोर वचन कहा तब तो तेजाजी क्रोध में आकर अन्न देव को प्रणाम कर रोटियाँ कुत्ते मिनखी को डाल दी और आप उठ खड़ा हुआ। जब ऐसी अनुचित बात देखी तो उनकी धर्म पत्नी से भी नहीं रहा गया उसने अपनी परिचित गूजरी को बुलावा खिनाया। जाते समय सासू ने कहा कि "जा राखुड्या जा फेर मूँडो मत बताजे" ऐसे कड़वे वचन कह कर अड़ँग बड़ँग बकने लगी। इधर वह गूजरी आई और उसने बोडल बाई के कहने से मीठे वचनों द्वारा तेजाजी का बहुत सत्कार किया। फिर आवभाव के साथ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपने घर लेजाकर साफ़ सुथरी मँडी चुँडी ऊपर की मैड़ी में ऊनका डेरा करा दिया। अच्छा वढ़िया माचा बिछाया और उत्तम बिछौना बिछाकर कहा कि अब आप यहाँ आराम कीजिये। मैं भोजन बनाकर लाती हूँ, बात ही बात में उसने चाँवल दाल कढ़ी तयार करली फिर ऊपर खाँड परोस सुन्दर दही का बाट का भर लाई। इधर इनको भोजन पर बिठाया और उधर गाँवड़े की लुगाइयों को बुला कर "धोया २ थाल परोसिया भातजी" इत्यादि जँवाइयों के गीत गवाने लगी। तेजाजी ने भगवान् के भोग लगा कर रुचि के साथ भोजन किया और आयेगयों के साथ बातें करके लेट गये।

साँझ होते ही तेजाजी की धर्म पत्नी अपनी सहेलियों के साथ गुजरी के घर में आई सासू ने जो कटु वचन कहे और भोजन में जो नीचता दिखायी उसके लिये बोडल ने बार बार क्षमा माँगी। फिर सब सखी सहेलियों ने मिलकर तेजाजी को उत्तमोत्तम गीत गाल सुनाये। तेजाजी ने भी प्रसन्न होकर उनको अनेक धन्यबाद देते हुए अपने आतिथ्य की कृतज्ञता की। जब रात अधिक वीत गई तो अन्य सहेलियाँ बोडल को वहीं छोड़ आप एक एक करके खिसकने लगी। जब बोडल भी जाने लगी तो तेजाजी ने हाथ पकड़ पलँग पर बैठा लिया और रहस्य की बात चीत होने लगी। बोडल को यद्यपि अपनी माता की ओर का पूरा २ खटका था परन्तु चिरकाल से अकस्मात् आये हुए प्राणनाथ के वाक्यों का उल्लंघन करना अनु-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित समझ उन्हीं की वशवर्तिनी होगई—तेजाजी और बोडल बाई के भाग्य में दाम्पत्य सुख लिखा ही नहीं था। रात पड़ते ही वह कुभार्या तेजाजी की सासू गूजरी को सताने के लिये दुष्ट विधर्मी लोग व मीणे बावरी आदि को बहका आई कि आज गहरे करणे का दिन है। गूजरी के घर जो पाहुना उतरा है वह गायों का बड़ा भक्त है जो तुम बाड़ेमें से गूजरी की गायें उचका कर ले आओगे तो वह मनमाने दाम देकर गायों को छुड़ावेगा। मीणों और बावरियों के ध्यान में यह बात आगई उन्होंने तुरन्त ही गुप्त रीति से आसपास के दुष्ट म्लेच्छों को साथ ले आधी रात क समय चुपके से गायें निकालकर लेगये। इधर गूजरीको भी थोड़ी बहुत सुलसुल पड़ गई थी कि तेजाजी की सासू वैर बदला लने क विचार में लग रही है।

सो वह भी असावधान नहीं थी बार २ में उठती और बैठती पर दिनभर के थकेले के कारण उसे नींद आगई। इधर घराटे दो घंटे के उपरान्त आंख खुली तो विचार करने लगी कि अब के गाय और बछड़ों में से किसी की भी टोकरियों की टनटनाहट सुनने में नहीं आई। चलकर देखूँ कि क्या रचना है ऐसे सङ्कल्प विकल्प करके ज्योंही बाड़े में जाकर देखने लगी तो बाड़ा चारों ओर से सुनसान दिखाई दिया। ऐसी दशा देख हीरा गूजरी हक्की बक्की रह गई। वह तुरन्त चिल्लाई पर कौन सुने। पहले तो वह दौड़ी २ गांव के पटैल पटवारियों के पास गई तो वह बह-काये हुए बोले कि हमको कभी किसी समय पर याद करती है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्यां ? हम क्या करें। अभी तो रात का समय है चोर डाकुओं का सामना कौन करे। जो कड़वा खाय सो मीठा खाय। ऐसे समय में तेरे जँवाईजी ही आड़े आवेंगे जिनको तैंने ऊँची महड़ी में ठहरा रक्खा हैं। इनके ऐसे वाक्य सुनते ही हीरा गूजरी का धैर्य्य जाता रहा। जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तो भला रक्षा कौन करे ? फिर वह ढोली के घर गई और बोली कि भाई, ! तू छुथाई पर जाकर ढोल के ऊपर डङ्का मार। इस घोषणा को सुन कर गांवके लोग आकर मेरी सहायता करें। इसपर ढोली बोला १२ वर्ष में कदे ही छाछ को चूलो भी घाल्यो हो ? आज सङ्कट के समय में ढोल याद आयो है जा थारा भाईजी के पास जा। ढोली से कोरा मोरा उत्तर पाय हीरा पछताने लगी हाय ! कथा वार्त्ता में ठीक कहा है कि आये गये का सत्कार करना चाहिये। मैं अपने ही स्वार्थ में लगी रहती थी जिसका फल पाया। यदि गांव के साथ अच्छा बर्ताव करती तो आज काम आते। ऐसे सोच विचार मैंड़ीकेद्वार पर जाकर तेजाजी को पुकारने लगी। दोनों स्त्री पुरुष बातें कर रहे थे।

हीरा--उठो २ बातें रहने दो मेरी गायें छुड़ा ल्यावो।

तेजा—कहां हैं

हीरा—चोर डाकू ले गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेजाजी गायों के हरण का नाम सुनते ही तुरन्त शय्या त्याग उठ खड़े हुए। वोडल के रङ्ग में भङ्ग पड़ गया। चिरकाल से जो बिजुली की चमक के समान जो प्रियसङ्गम का सुख मिला था वह भी कपूर के समान उड़ गया। क्षणभर के लिये विह्वल हो बोली कि प्राणनाथ ! फिर कब दर्शन देंगे—तब तेजाजी बोले—

वीर बधू होकर कभी करो न तिल भर मोह।
शूरों के पट्टे लिख्यो रहत सदैव विछोह॥
हाड़ मांस का देह की अवधि सवा सौ वर्ष।
पै कल्यान्त वन्यो रहै अटल धर्म संघर्ष॥

इस प्रकार घड़ी आध घड़ी बातों में लगा होगा कि वह कुभार्या गूजरी तुरन्त ही छाती पर चढ़ आई और कहने लगी कि पावणाजी ! लुगाईसे ऐसा प्रेम है और युद्धसे डर है तो घाघरा लूगड़ी और चूड़ा पहन कर घर में बैठ जावो बांका पग्गड़ बांधना छोड़ दो।

तेजा—घाघरा, ओढ़नी और चूड़ी का नाम सुनकर लाल लाल आंखें कर बोला मुँह सम्हाल कर बोल—

सुत नारी धन धाम का कायर रहते दास।
वीर हृदय में मोह का, इक क्षण रहै न वास॥
हम क्षत्रिय हैं बावली प्रण प्रिय नहिं प्रिय प्राण।
शिवि बलि राजा कर्ण की देवे साख पुराण॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रकार कह सुन तुरन्त शय्या को त्याग दी। फिर गूजरी से बोले धीरज धर जब तक मेरे देह में प्राण हैं तबतक भरसक गायों की रक्षा के लिये प्रयत्न करूंगा फिर तुरन्त ही युद्धके योग्य बख्तर आदि धारण कर ढाल तलवार लेकर तुरन्त ही नाल से उतर कर घोड़ी पर सवार हो विदा होने लगे। इधर बोढ़ल ने भी मन में बिचार किया कि ऐसे वीर पुरुष का पाणिग्रहण कर कायरता धारण करना उचित नहीं। आंसुओं को थाम वज्र की सी छाती कर बोली प्राणनाथ ! धन्य है आपके माता पिता कि जिन्होंने ऐसा धर्म वीर पुत्र जना। आप शीघ्र ही विजय प्राप्तकर इस अबला की सुध लीजिये। आप गायोंकी रक्षाके लिये इकले पधारते हैं सो वे भगवान् गोपाल ही आप के साथी हैं।

तेजाजी झट घोड़ी पर सवार हो श्री गणेशजी को मनाय बिदा हुये। पहिले तो उन्होंने गांव की प्रदक्षिणाकी जिससे तुरंत ही उन्हें आगे बढ़ने का मार्ग सूझ गया। वे घोड़ी कों दौड़ाते क्षणभर में बहुत दूर चले गये। आगे जाते ही गोरज उड़ती हुई श्वास के साथ आने लगी। तुरन्त ही उनका हृदय आनन्द से उल्लास लेने लगा। जब गायों के पास पहुंचे तो तुरन्त ही ललकार कर कहा "गायों को ठहराओ गायों को ठहराओं" उनमें मीणों का मुखिया आशा मीणा था। उसने पूछा क्यों वीर ! तू कौन है ? कहां से आया है ? और किसके यहां ठहरा है ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेजाजी ने कहा मेरा नाम तेजा है। मैं खड़नाल का रहने वाला हूं। सासरे बहू को लेने के लिये आया हूं। सासू की कुटिलता से हीरा गूजरी के घर पर ठहरा हुआ हूं। इतनी बात सुनते ही मीणा बोल उठा अरे जब तो तू [लक्ष्मी] लिछमीबाई का बेटा है, जा तू आधी गायें ले जा और आधी छोड़ जा।

तेजा मन में बिचारने लगा कि नीति का उपदेश है।

शक्त होय तब भी नहीं, वृथा कीजिये राड़।
वैद्य पुत्र क्या जानकर, कूदे जाय पहाड़ ॥

तेजाजी इस मीणा की बातों से अत्यन्त ही सन्तुष्ट हुये। उन्होंने गायें ले जाना स्वीकार कर लिया। उस झुण्ड में कितनेक यवन पठान भी थे सो उन्होंने गायें देने में आनाकानी की तो फिर क्या था युद्ध छिड़ गया। सनासन तीर चलने लगे। उधर बहुत से योद्धा थे इधर ये इकले वीर थे तो भी लगभग १ घड़ी भर युद्ध होता रहा। तेजाजी के शरीर में कई ठौर चोट आई पर ये रुके नहीं अन्त में एक योद्धा पठान तलवार से इनका सिर काटने के अभिप्राय से पास आया। तेजाजी असावधान नहीं थे इन्होंने पास आते ही १ भाला ऐसा मारा कि छाती से आरपार होगया। प्रधान के मरते ही सब लोग तितर बितर होगये और जयलक्ष्मी तेजाजी को प्राप्त हुई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महावीर तेजा यद्यपि लोहूसे लथपथ होरहे थे तोभी विजय रङ्ग में मस्त हो गायों के झुण्ड को टटोल २ कर पनेर की ओर चले। तेजाजी की जीत के समाचार तुरन्त ही चारों ओर फैल गये। गांव के पटैल पटवारी लोग तेजाजी की स्त्री को आगे ले कर इनको सामें लेने को आये। बड़े भाव आदर के साथ इनकी आरती उतारी और पुष्पमालादि से भूषित कर घर में ले गये। सब लोगों ने इनको धन्यवाद दिये और ग्राम पुरोहितजी ने इन्हें वीर शिरोमणि की पदवी दी। तेजाजी ने प्रत्युत्तर में निवेदन किया कि इसमें कोई बड़ाई की बात नहीं। क्षत्रियों का तो यह धर्म ही है कि तन, मन और धन से गो ब्राह्मण की रक्षा करना उस समय सबके मन में तो इनके जीते जागते बच आने का अपार हर्ष था पर उनकी सासू के हृदय में इनको प्रशंसा सूली के समान खटकती थी। सो वह दुष्टा तुरन्त ही गूजरी के पास जाकर बोली कि तू मेरी भायली है इस समय मेरी बात रख। कोई छोटी मोटी गाय भैंस केरड़ा केरड़ी कोई भी उलसेटे में रह गया हो तो अभी बता दे सो इस खोड़ले को पीछा भेजें सो तुरन्त मर खिर जाय और मेरा और मेरी बेटी का फन्दा छूट जाय इस प्रकार भायली की बात सुन गूजरी भी बहक गई। उस ने अत्यन्त महत्त्व के काम को भूलकर उसकी हां में हां मिलादी। फिर बाड़े में जाकर गायों की झड़ती ली तो अन्य सब गायें तो मिल गईं पर एक काणा केरड़ा नहीं मिला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्त्रियोंकी एडी पाछली तो बुद्धि होती ही है तुरन्त उस महोपकार पर पानी फेर बोली कि तुम्हें धर्म की आण है यदि मेरा केरड़ा लाकर नहीं सम्हलाया तो। सुनते ही तेजाजी ने जान लिया कि अब जीवन की आशा नहीं, स्त्रियों का हठ प्रसिद्ध ही है यह समझाने से किसी प्रकार नहीं समझेगी।

जिस पर धर्म की प्रतिज्ञा बड़ी कड़ी कढ़ाई है। यदि सङ्कट का सामना नहीं करना पड़ता तो सब ही पा लेते। राजा हरिश्चन्द्र, नृग जीमूतवाहम, शिवि, दधीचि आदि ने कठिनाइयों को झेलकर ही अमरत्व प्राप्त किया है। अच्छा! कुछ चिन्ता नहीं, विधाता की यही इच्छा है। ऐसा सोच कर तुरन्त ही अश्व पर चढ़ युद्ध के लिये उद्यत होगया, कई लोगों ने रोका भी परन्तु वीर पुरुष का हठ भी बड़ा ही होता है। जैसा किसी भद्र पुरुष ने कहा है—

सिंह विषय सज्जन वचन, केल फलै इक बार।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार॥

घोड़ी की चाल बड़ी ही तेज थी वह तुरन्त ही चलती २ वहां जा पहुंची जहां वे लोग जङ्गलों में डेरे डाले पड़े थे। जाते ही उसने उन्हें वीरनाद के साथ ललकारा। मीणों का मुखिया आशा बोला भाणेज भाणेज! तने अच्छा काम नहीं किया। इतने मनुष्यों के साथ अकेले का तेरा लड़ना योग्य नहीं है। तेजाजी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने कहा मामाजी ! मैं बिना केरड़ा लिये लौटने का नहीं । आप के और मेरे बीच में राम धर्म रहना चाहिये ।

आप तो मुझ पर शस्त्र नहीं चलावें और मैं आप पर नहीं चलाऊंगा । इतने ही में सबके सब तेजा पर टूट पड़े । तेजा तलवार चलानेमें बड़ा ही सिद्धहस्त था । जो कोई इसके सामने आया तुरन्त ही उसका सिर काट कर उसे यमलोक पहुंचाया । कोइ इस पर गोफण फेंकता कोई तीर चलाता । पर इसके पास भी धनुष बाण था सो ताक २ कर ऐसी बाण वृष्टि की कि मीणे और उनके साथी म्लेच्छों के छक्के छूट गये, घमसान युद्ध हुआ । यह अश्व पर था फेरी देता जाता था और उनके सिर काट २ कर धराशायी करता जाता था । एक प्रहर तक बराबर संग्राम होता रहा । इसकी पीठ पर भगवती कालिकामाई थी सो इसकी वीरता से ठौर २ लोथें दिखलाई देने लगीं । लोहू के मारे धरती लाल हो गई । तेजाजी का मुंह रक्तवर्ण हो गया था । वह क्रोध के मारे दांत पीस २ कर शत्रुओं का संहार करते थे, कहीं किसी का हाथ टूटा पड़ा है तो कोई कहीं बिना सिर के छटपटा रहा है । ऐसे एक एक करके इन्होंने अनुमान १०० मनुष्यों को मारा जो बचे थे उन्होंने इनकी शरण ली, ये बड़े उदार थे तुरन्त उन की प्रार्थना पर लड़ाई बन्द कर दी । काणा केरड़ा जो उन्हीं के साथ था राव ने सम्मुख लाकर उपस्थित किया । यद्यपि इनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस युद्ध में बिजय हुई पर इनका शरीर भी बाणों से विंध गया था, प्रत्येक अङ्ग में से रक्त बह रहा था. कई तलवारों के घाव लगे थे और कितने ही तीर लगे थे इसलिये इनका जीवन भी असाध्य होगया था। थोड़ीसी देरमें ये धराशायी होगये। आशा भीखा जो इनकी बीरता से मुग्ध होगया था पास आकर बोला हे वीर तुझे और तेरे माता को सहस्र वार धन्यवाद है अब जो तेरे मन में हो सो कह तब तेजा बोलाः—

प्रथम काणो केरड़ो द्यो पनेर पहुँचाय।
जीं कारण ओ युद्ध हुओ हीरां धीरज पाय॥
घोडल ने कहवायद्यो थारो मारो साथ।
होसी अब बैकुण्ट में जहँ श्री गोकुलनाथ॥
जहाँ गए तहँ विप्र है, विप्र जहाँ तहँ धर्म।
धर्म जहाँ श्रुति चार हैं, चार जहाँ सब कर्म॥
गौ ब्राह्मण की पालना, सकल सुखों का सार।
बार बार मोहि दीजियो, हे श्रीकृष्ण मुरार॥

यों कह मंद स्वर से कहने लगे कि मामाजी! अब मुझको मरने की कोई चिन्ता नहीं है केवल खाट्ट से आते हुए मार्ग में एक नाग देवता के साथ मेरी बाचा हुई है जैसे तैसे मुझे वहाँ पहुँचा दो. भगवान् तुम्हारा भला करेगा, ये बचन सुन आशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने धीरज बंधाई और कहा कि एक सांडनी सवार तो अभी तुम्हारे सासरै केरड़े के सहित भेज देते हैं सो तुम किसी बात की चिन्ता न करो, दूसरे तुम्हारे घावों की औषध मल्लम पट्टी आदि कर पथ्य पाणी आदि देने को इस धर्मदास साधु को साथ कर देते हैं, सो—तुम वहाँ आराम से पहुंच जावोगे। इधर तो राव से काँणा केरड़ा लेकर पनेर पहुंचा। जिसे देखते ही तुरंत गांव के लोग एकत्रित होगये। काणाँ केरड़ा पाते ही हीरां का हृदय ठन्डा होगया। बोडल और उसकी साथनियां दौड़ कर वहां आई। तेजाजी की वीरता और विजय की बड़ी प्रशंसा की जिसे सुन बोडल का हृदय आनन्द से प्रफुल्लित होगया। पर साथ ही उसके घावों की चर्चा सुनी तो एक साथ ही उसका मुँह फीका पड़ गया। हर्ष शोक के स्वरूप में पलट गया। फिर सब लाज संकोच छोड़ सत्य चढ़ जाने के कारण उसने स्पष्ट कह दिया कि ऐसे धर्मवीर की स्त्री होकर मैं इस शरीर के कलंकन लगाऊंगी। मैं अभी वहां जाकर उनके साथ सती होकर उनके साथ ही स्वर्गलोक में निवास करूंगी यों कह अपने विश्वास पात्र भाइयों को साथ ले वहां से बिदा हुई। गांव के लोग इस हीरां गुजरी को बार बार धिक्कार ने लगे कि अरे यह हीरा नहीं खीरा है सो ऐसा ही हुआ कि उस दिन से तुसका शरीर एक दिन जल ने लगा—और थोड़े दिनों में इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और पाप से जल कर मर गई । उधर तेजाजी अश्वारूढ़ हो मन ही मन भगवान का ध्यान करते वहीं पहुंचे जहां पर नाग देव उसकी बाट जो रहा था। संयोगवश बोडल भी वहां आ पहुची। बोडल ने अपने पतिदेव के दर्शन कर चरण छूये और हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगी कि प्राण नाथ ! यह क्या दशा आपके शरीर की हुई । उस दुष्ट ने आपको बड़ा कष्ट दिया, हाय सुसराल से लोगों को सुख मिला करता है पर यह ससुराल आपके लिये वैरियों से भी बढ़कर है । इस पर तेजाजी ने कहा किसी बात की चिन्ता न करो जो होनहार होता है, वही होता है। मेरा शरीर घावों से अत्यन्त पीड़ित हो रहा हैं । अतः बोलने की सामर्थ्य नहीं है मैं बाणी से बांधा नाग देवता के पास आया हूं सो तुम इसे बुलाओ। पति की आज्ञा पाते ही धर्मदास साधु और बीडल बांबी के पास पहुचे साधु ने घूघरे बजाये और सांप को बाहर बुलाने की चेष्टा की

नागराज शब्द सुनकर तुरन्त बाहर आया और क्रोधाविष्ट हो फुंकार मारने लगा। इतने में धराशाई तेजाजी ने कहा कि भाई ! मैं वचनबद्ध आगया हूं जो कुछ तुमको करन[illegible] करो । इस पर सर्प ने कहा कि तू गोरक्षक है । इस[illegible] अनिष्ट करना नहीं चाहता केवल प्रतिज्ञा पाश में [illegible] वैर निर्यातन निमित्त डसना चाहता हूं। ऐसे कह[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu